

क्या आपको अवलोकन करना चाहिए? ईश्वर के पवित्र दिन या फिर शैतानी छुट्टियाँ?

क्या आप जानते हैं कि विभिन्न पवित्र दिन और छुट्टियाँ कहां से आईं?



*जब पेंटेकोस्ट का दिन पूरी तरह से आ गया, तो वे सब एकमत थे।
एक ही स्थान पर।" (Acts 2:1)*

Bob Thiel, Ph.D.

क्या आपको अवलोकन करना चाहिए?
**क्या ये ईश्वर के पवित्र दिन हैं या शैतानी
त्योहार?**

डॉ. Bob Thiel द्वारा।

क्या बाइबल में ईश्वर के पर्वों का उल्लेख है?

यीशु किन दिनों का पालन करते थे?

प्रेरित किन दिनों का पालन करते थे?

ईसा मसीह के प्रारंभिक अनुयायी किन दिनों का पालन करते थे?

क्या आप कोई अवकाश मनाते हैं?

क्या आपको पता है कि वे कहाँ से आए हैं?

क्या आप जानते हैं कि आप और अन्य लोग उन्हें क्यों देखते हैं?

क्या इनमें से किसी का धार्मिक अर्थ है?

क्या आप किसी शैतानी त्योहार का पालन कर रहे हैं?

क्या इससे ईश्वर को कोई फर्क पड़ता है कि आप किन दिनों में धार्मिक अनुष्ठान करते हैं?

यदि आप स्वयं को ईसाई मानते हैं, तो क्या आप उन शैतानी या मूर्तिपूजक अनुष्ठानों का पालन कर रहे हैं जिनकी यीशु निंदा करते? यदि हाँ, तो क्या सत्य आपके लिए इतना महत्वपूर्ण है कि आप इस मामले में यीशु का अनुसरण करें?

ISBN 978-1-940482-17-0

Copyright © 2016/2017 by Nazarene Books. Edition 2.2. Produced for the Continuing Church of God and Successor, a corporation sole. PO Box 109, Grover Beach, California, 93483 USA.

श्रेयः कवर फोटो न्यूजीलैंड में पेंटेकोस्ट दिवस पर Joyce Thiel द्वारा ली गई है। पूरे पाठ में बाइबिल के विभिन्न अनुवादों का उपयोग किया गया है; जहां कोई नाम या संक्षिप्त रूप नहीं दिया गया है, वहां New King James Version (NKJV) का उल्लेख किया गया है (थॉमस नेल्सन, कॉपीराइट © 1997; अनुमति से उपयोग किया गया)।

अंतर्वस्तु

1. पवित्र दिन बनाम लोकप्रिय अवकाश
2. फसह: क्या यह केवल मसीह की मृत्यु के बारे में है?
3. पालन की जाने वाली रात और अखमीरी रोटी के दिन
4. पेंटेकोस्ट: आपके बुलावे के बारे में सच्चाई और ईश्वर का अद्भुत उपहार
5. तुरही का पर्व: मसीह का आगमन और उससे पहले की घटनाएँ
6. प्रायश्चित का दिन: शैतान का निष्कासन
7. तम्बू पर्व: मसीह के शासनकाल में दुनिया कैसी दिखती थी, इसकी एक झलक
8. अंतिम महान दिन: मानवजाति के लिए ईश्वर की अद्भुत मुक्ति योजना
9. गलत अनुवाद और सब्त का दिन
10. पुनः प्रस्तुत किए गए राक्षसी अवकाश
11. क्या ये ईश्वर के पवित्र दिन हैं या झूठ?

पवित्र दिवस कैलेंडर

संपर्क जानकारी

नोट: यह पुस्तक अंग्रेज़ी संस्करण का कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) द्वारा किया गया अनुवाद है, इसलिए कुछ अभिव्यक्तियाँ मूल पाठ को पूरी तरह

प्रतिबिंबित नहीं कर सकतीं, लेकिन आशा है कि वे उसके निकट हैं।
अंग्रेज़ी संस्करण www.ccog.org पर ऑनलाइन निःशुल्क उपलब्ध है।

1. पवित्र दिन बनाम लोकप्रिय अवकाश

ईसाई धर्म को मानने वाले असंख्य समूहों में से लगभग सभी किसी न किसी त्योहार या पवित्र दिन का पालन करते हैं।

क्या आपको ईश्वर के पवित्र दिनों का पालन करना चाहिए या शैतानी त्योहारों का?

यह एक सरल प्रश्न लगता है जिसका उत्तर भी सरल है। और जो लोग विभिन्न समूहों की बजाय बाइबल पर विश्वास करने को तैयार हैं, उनके लिए यह वास्तव में सरल है।

पवित्र दिन और त्योहार कहाँ से आए? क्या वे बाइबिल से आए हैं या उनका संबंध पारंपरिक मूर्तिपूजा/शैतानी रीति-रिवाजों से है?

यदि आप मानते हैं कि आप एक ईसाई हैं, तो क्या आप वास्तव में जानते हैं कि आपको किन दिनों का पालन करना चाहिए और क्यों?

यह संक्षिप्त पुस्तक बाइबिल में वर्णित वार्षिक पवित्र दिनों पर केंद्रित है और इसमें अन्य लोगों द्वारा मनाए जाने वाले कुछ वार्षिक अवकाशों के बारे में भी जानकारी दी गई है।

शब्द छुट्टी

वेबस्टर के शब्दकोश के अनुसार, holiday शब्द मूल रूप से पुरानी अंग्रेज़ी के hāligdæg से आया है। आजकल लोगों की सोच के विपरीत, उस शब्द का असल अर्थ छुट्टी मनाने के लिए समय निकालना नहीं था— बल्कि अवकाश का मतलब था...पवित्र दिन.

बेशक, सभी 'छुट्टियों' का उद्देश्य धार्मिक पवित्र दिवस होना नहीं था। राष्ट्रीय छुट्टियों को ज़रूरी नहीं कि धार्मिक माना जाए, और यहाँ तक कि यीशु ने भी स्पष्ट रूप से उनमें से एक या अधिक का पालन किया था (John10:22-23)।

जहाँ तक यीशु की बात है, बाइबल में विशेष रूप से दर्ज है कि उन्होंने बाइबल में वर्णित पवित्र दिनों और त्योहारों जैसे कि फसह (Luke2:41-42; 22:7-19), तम्बू पर्व (John7:10-26), और अंतिम महान दिन (John7:37-38) का पालन किया।; 8:2)। नया नियम यीशु के प्रेरितों द्वारा फसह (1 Corinthians5:7), अखमीरी रोटी के दिन (Acts20:6; 1 Corinthians5:8), पेंटेकोस्ट (Acts2:1-14), तुरहियाँ और तंबू (तुलना

करें Leviticus23:24,33-37; Acts18:21; 21:18-24; 28:17), और प्रायश्चित के दिन (Acts27:9) मनाने की ओर इशारा करता है।

बाइबल में कहीं भी यह नहीं दर्शाया गया है कि यीशु या उनके प्रेरितों ने रोमन लोगों द्वारा मनाए जाने वाले धार्मिक त्योहारों का पालन किया हो। फिर भी, ईसाई धर्म को मानने वाले कई लोग बाइबल के बाहर के स्रोतों से लिए गए धार्मिक त्योहारों के विभिन्न रूपों का पालन करते हैं।

क्या इन्हें रखा जाना चाहिए?

बाइबल भविष्यवाणी करती है कि वह समय आएगा जब सभी राष्ट्रों के लोग परमेश्वर के पवित्र दिनों का पालन करेंगे, अन्यथा उन्हें सूखे और महामारियों का सामना करना पड़ेगा (Zechariah14:16-19)। चूंकि ऐसा होना ही है, तो क्या आपको इस पर अभी से विचार नहीं करना चाहिए?

कृपया इस पुस्तक को कम से कम दो बार पूरा पढ़ें। बाइबल में जो कुछ दर्शाया गया है, उस पर कुछ लोगों द्वारा उठाई गई आपत्तियों का उत्तर इसमें दिया गया है। दो बार पढ़ने से संभवतः आपके मन में उठने वाले गंभीर प्रश्नों के उत्तर मिल जाएंगे।

कृपया इस विषय का अध्ययन खुले मन से करने का प्रयास करें। यदि हम सावधान न रहें तो सभी मनुष्यों में इन वार्षिक पवित्र दिनों के किसी भी प्रस्तुतीकरण को पूर्वाग्रह से देखने की प्रवृत्ति स्वाभाविक है। बाइबल सिखाती है कि “जो किसी बात को सुने बिना ही उसका उत्तर देता है, वह मूर्खता और लज्जा का कारण है” (Proverbs18:13), इसलिए पुराने समय के बेरियाई लोगों की तरह यह देखने का प्रयास करें कि क्या यहाँ कही गई बातें भी सत्य हैं (Acts17:10-11)।

अतः आइए, हम स्वेच्छा से परमेश्वर और उनकी इच्छा के प्रति समर्पित होकर, पूर्वाग्रह से मुक्त होकर, खुले मन से सत्य को अपने मार्ग से अधिक महत्व देते हुए, परमेश्वर के पवित्र वचन के समक्ष कांपते हुए (Isaiah66:2), विनम्रतापूर्वक परमेश्वर से उनके पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन की प्रार्थना करें। और इस प्रार्थनापूर्ण, समर्पित, इच्छुक, फिर भी सतर्क और सावधान भाव से, इस विषय का अध्ययन करें— सभी बातों की परख करें (देखें 1 Thessalonians5:21 केजेवी/डीआरबी)।

ईश्वर के त्यौहार और पवित्र दिन

क्या आप जानते हैं कि बाइबल में ईश्वर के त्योहारों का उल्लेख है? यह बात तो सर्वविदित है, लेकिन बहुत से लोग इस तथ्य से अनभिज्ञ हैं और न ही उन्हें यह पता है कि बाइबल में इन्हें कहाँ पाया जा सकता है।

इसके अलावा, इनमें एक समस्या यह है कि ये उस कैलेंडर पर आधारित हैं जो आजकल अधिकांश लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले कैलेंडर से भिन्न है। ईश्वर का कैलेंडर मूलतः चंद्र-सौर कैलेंडर है। ईश्वर के पवित्र दिनों के समय को बेहतर ढंग से समझने के लिए, बाइबिल कैलेंडर और रोमन (ग्रेगोरियन) कैलेंडर की निम्नलिखित तुलना चार्ट देखें (ये प्रत्येक वर्ष एक ही रोमन कैलेंडर तिथि पर नहीं पड़ते हैं):

माह	क्रमांक	अवधि	नागरिक कैलेंडर में समतुल्य
अबीब/नीसान	1	30 दिन	मार्च-अप्रैल
ज़ीव/इय्यार	2	29 दिन	अप्रैल-मई
सीवान	3	30 दिन	मई-जून
तम्मूज़	4	29 दिन	जून-जुलाई
अब	5	30 दिन	जुलाई-अगस्त
एलूल	6	29 दिन	अगस्त-सितंबर
एतानीम/तिथी	7	30 दिन	सितंबर-अक्टूबर
बूल/हेशवान	8	29 या 30 दिन	अक्टूबर-नवंबर
किसलेव	9	30 या 29 दिन	नवंबर-दिसंबर
तेबेत	10	29 दिन	दिसंबर-जनवरी
शेबात	11	30 दिन	जनवरी-फ़रवरी
अदार	12	30 दिन	फ़रवरी-मार्च

(इस पुस्तिका के अंत में पवित्र दिनों सहित एक आधुनिक रोमन कैलेंडर दिखाया गया है।)

ईश्वर के पवित्र दिनों के संदर्भ में, आइए सबसे पहले उत्पत्ति की पुस्तक में दिए गए एक संदर्भ से शुरुआत करें, जिसमें प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक दोनों अनुवाद दिखाए गए हैं:

¹⁴ तब परमेश्वर ने कहा, “आकाश में प्रकाश हो, जिससे दिन और रात अलग-अलग हो जाएँ। वे चिन्ह होंगे और धार्मिक पर्वों, दिनों और वर्षों को चिह्नित करेंगे।” (Genesis^{1:14}, परमेश्वर के वचन का अनुवाद, GWT)

¹⁴ परमेश्वर ने कहा, “आकाश में प्रकाश हो, जिससे दिन और रात अलग-अलग हों, और वे त्योहारों, दिनों और वर्षों को इंगित करें।” (Genesis^{1:14}, न्यू जेरुसलम बाइबल, एनजेबी)

हिब्रू शब्द *घास काटी गई* श्लोक 14 में एक धार्मिक त्योहार का जिक्र है।

क्या आप जानते हैं कि बाइबिल की पहली ही किताब में धार्मिक त्योहारों के अस्तित्व का जिक्र है? भजन संहिता भी इस बात की पुष्टि करती है कि इसी कारण से ईश्वर ने चंद्रमा बनाया था।

¹⁹ उसने त्योहारों के प्रतीक के रूप में चंद्रमा बनाया (Psalm^{104:19}, होल्मन क्रिश्चियन स्टैंडर्ड बाइबल)

क्या आपने यह बात पहले भी सुनी है?

ईश्वर द्वारा आकाश में स्थापित की गई “प्रकाशस्तंभ” किन धार्मिक त्योहारों को चिह्नित करने के लिए थे?

वैसे, बाइबिल में एक ऐसी जगह है जहाँ सभी पवित्र दिनों का वर्णन है (*घास काटी गई*) सूचीबद्ध किए गए हैं और कुछ लाइटों का उल्लेख किया गया है।

यह बाइबल का वह हिस्सा है जिसे कई लोग अनदेखा करना चाहते हैं, या यह मान लेते हैं कि इसे पूरी तरह से हटा दिया गया है। निम्नलिखित जानकारी रोमन कैथोलिक अनुवाद, न्यू अमेरिकन बाइबल (एनएबी) से ली गई है (नीचे एनएबी का उपयोग किया गया है क्योंकि अधिकांश प्रोटेस्टेंट धर्मग्रंथों में कही गई बातों के बावजूद, कई दिनों के पालन और निषेध के संबंध में रोम के चर्च का अनुसरण करते हैं):

²... ये यहोवा के पर्व हैं, जिन्हें तुम पवित्र दिन घोषित करोगे। ये मेरे पर्व हैं:

³छह दिन काम किया जा सकता है; परन्तु सातवाँ दिन पूर्ण विश्राम का सब्त है, एक घोषित पवित्र दिन; उस दिन कोई काम नहीं करना। तुम जहाँ कहीं भी रहो, वह यहोवा का सब्त है।

⁴ये यहोवा के पर्व हैं, पवित्र दिन हैं जिन्हें तुम उचित समय पर घोषित करोगे।⁵यहोवा का फसह पर्व पहले महीने के चौदहवें दिन, संध्याकाल में पड़ता है।⁶इस महीने का पंद्रहवाँ दिन यहोवा का अखमीरी रोटी का पर्व है। सात दिन तक तुम अखमीरी रोटी खाओगे।⁷ इन दिनों में से पहले दिन को पवित्र दिन घोषित किया जाएगा; उस दिन तुम कोई भारी काम नहीं करोगे। (Leviticus^{23:2-7}, एनएबी)

¹⁵सब्त के अगले दिन से शुरू करते हुए, जिस दिन तुम फसल को उठाने के लिए लाते हो, उस दिन से तुम पूरे सात सप्ताह गिनोगे;¹⁶तुम सातवें सप्ताह के बाद वाले दिन तक पचास दिन गिनोगे। (Leviticus^{23:15-16}, एनएबी)

²⁴... सातवें महीने के पहले दिन तुम सब्त का विश्राम करोगे, तुरही बजाकर स्मरण किया जाएगा, यह एक घोषित पवित्र दिन होगा; (Leviticus^{23:24}, एनएबी)

²⁶यहोवा ने मूसा से कहा:²⁷अब इस सातवें महीने का दसवां दिन प्रायश्चित का दिन है। यह एक पवित्र दिन घोषित किया जाएगा। आप अपने आप को नम्र करें और यहोवा को भेंट चढ़ाएँ।²⁸इस दिन तुम कोई काम मत करना, क्योंकि यह प्रायश्चित का दिन है, जब तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के सामने तुम्हारे पापों का प्रायश्चित किया जाता है।²⁹जो लोग इस दिन स्वयं को विनम्र नहीं करेंगे, उन्हें लोगों से अलग कर दिया जाएगा।³⁰यदि कोई इस दिन कोई काम करेगा, तो मैं उसे लोगों के बीच से निकाल दूंगा।³¹तुम कोई काम नहीं करोगे; यह तुम्हारे सभी पीढ़ियों के लिए एक शाश्वत नियम है, चाहे तुम कहीं भी रहो;³²यह तुम्हारे लिए पूर्ण विश्राम का सब्त है। तुम स्वयं को नम्र रखो। महीने की नौ तारीख की शाम से शुरू होकर, तुम शाम से शाम तक अपना सब्त मनाओगे।

³³यहोवा ने मूसा से कहा:³⁴इस्राएलियों से कहो: इस सातवें महीने का पंद्रहवाँ दिन यहोवा का तंबू पर्व है, जो सात दिनों तक चलेगा।³⁵पहले दिन, जिसे पवित्र दिन घोषित किया गया है, उस दिन आप कोई भारी काम नहीं करेंगे।³⁶सात दिनों तक तुम यहोवा को भेंट चढ़ाओगे, और आठवें दिन

एक पवित्र दिन घोषित किया जाएगा। तुम यहोवा को भेंट चढ़ाओगे। यह पर्व का समापन है। तुम कोई भारी काम नहीं करोगे।

³⁷अतः ये यहोवा के पर्व हैं... (Leviticus^{23:26-37}, एनएबी)

बाइबल में परमेश्वर के त्योहारों और पवित्र दिनों का स्पष्ट उल्लेख है। फिर भी, अधिकांश लोग जो खुद को ईसाई कहते हैं, वे वास्तव में परमेश्वर द्वारा बताए गए पवित्र दिनों का पालन नहीं करते।

ध्यान दें: बाइबल में पूरा दिन सूर्यास्त से सूर्यास्त तक चलता था (Genesis1:5; Leviticus23:32; Deuteronomy16:6; 23:11; Joshua8:9; Mark1:32), न कि आधी रात से आधी रात तक जैसा कि आजकल दिनों की गणना की जाती है। यह भी ध्यान दें कि यद्यपि पुराने नियम में पवित्र दिनों से संबंधित कुछ अनुष्ठानों को नए नियम में स्पष्ट किया गया है (उदाहरण के लिए Matthew26:18, 26-30; Hebrews10:1-14), वास्तविकता यह है कि ये दिन और त्यौहार आज भी प्रचलित हैं और प्रारंभिक ईसाइयों द्वारा मनाए जाते थे, जिनमें अन्यजाति ईसाई भी शामिल थे।

हम में Continuing Church of God उन्हीं पवित्र दिनों का पालन करता है जिनका पालन यीशु, उनके शिष्य और उनके वफादार अनुयायी करते थे, जिनमें स्मिरना के पॉलीकार्प जैसे गैर-यहूदी ईसाई नेता भी शामिल थे। हम उन्हें उसी तरह मनाते हैं जैसे प्रारंभिक और बाद के ईसाई मनाते थे। यह यहूदियों द्वारा मनाए जाने वाले इन्हीं बुनियादी दिनों से कुछ मायनों में भिन्न है, क्योंकि यहूदी नए नियम की उन शिक्षाओं को स्वीकार नहीं करते हैं जिनमें इन सभी दिनों के अर्थ और ईसाइयों द्वारा इन्हें मनाने के तरीके के बारे में बताया गया है।

ईश्वर के त्योहारों का पालन करने वाले कई ईसाई यह महसूस करते हैं कि *बाइबिल* पवित्र दिन यीशु के पहले और दूसरे आगमन की ओर इशारा करते हैं और साथ ही ईश्वर की मुक्ति की योजना को समझने में मदद करते हैं।

2. फसह: क्या यह केवल मसीह की मृत्यु के बारे में है?

क्या ईसाइयों को फसह का पर्व मनाना चाहिए?

जैसा कि बहुत से लोग जानते हैं, निर्गमन की पुस्तक में इस्राएलियों को विशेष रूप से फसह का पर्व मनाने के लिए कहा गया था। परिवार बलिदान के लिए एक निर्दोष मेमना लेते थे (Exodus12:5) (Exodus12:3-4)। मेमने का बलिदान चौदहवें दिन गोधूलि बेला में किया जाता था (Exodus12:6) और उसके कुछ रक्त को परिवार के घर के द्वार पर लगाया जाता था (Exodus12:7)।

जिन लोगों ने परमेश्वर द्वारा बताए गए कदम उठाए, वे मृत्यु से बच गए, जबकि मिस्रियों ने ऐसा नहीं किया, वे नहीं बच पाए (Exodus12:28-30)।

जैसा कि बहुत से लोग जानते हैं, यीशु ने अपने बचपन से (Luke2:41-42) और अपने पूरे जीवन भर (Luke22:15) हर साल फसह का पर्व मनाया (Exodus13:10)।

फसह का पर्व पहले महीने के चौदहवें दिन मनाया जाता था (Leviticus23:5; Deuteronomy16:1 में इसे अबीब या Esther3:7 में निसान कहा गया है)। यह वर्ष के वसंत ऋतु में पड़ता है।

हालाँकि यीशु ने इससे जुड़ी कई प्रथाओं को बदल दिया (Luke22:19-22; John13:1-17), फिर भी हमारे उद्धारकर्ता ने अपने शिष्यों को इसे जारी रखने के लिए कहा (Luke22:7-13)। साथ ही, नया नियम स्पष्ट रूप से कहता है कि यीशु के बलिदान के कारण, भेड़ों को मारना और दरवाजों पर खून लगाना (Exodus12:6-7) अब आवश्यक नहीं है (तुलना करें Hebrews7:12-13,26-27; 9:11-28)।

प्रेरित पौलुस ने विशेष रूप से सिखाया कि मसीहियों को यीशु के निर्देशों के अनुसार फसह मनाना चाहिए (1 Corinthians5:7-8; 11:23-26)।

बाइबल सिखाती है कि यीशु को “सृष्टि की नींव पड़ने से पहले ही चुना गया था” (1 Peter1:20) ताकि वह “सृष्टि की नींव से ही वध किया जाने वाला मेमना” (Revelation13:8) हो। इस प्रकार, परमेश्वर की उद्धार की योजना, जो उनके पवित्र दिनों और त्योहारों के माध्यम से दी जाती है, जिसमें यीशु का “फसह का मेमना” होना भी शामिल है, मनुष्य के इस ग्रह पर आने से पहले ही ज्ञात थी। यही कारण है कि कुछ खगोलीय पिंडों को आकाश में इस प्रकार स्थापित किया गया था ताकि

उनकी गणना करो!

लगभग सभी चर्च इस बात को मानते हैं कि बाइबल सिखाती है कि यीशु ने अपनी हत्या के समय फसह से संबंधित किसी बात को पूरा किया।

इस महान बलिदान की प्रक्रिया का वर्णन अदन के बगीचे में भी मिलता है। यीशु की भविष्यवाणी के बाद (Genesis3:15), परमेश्वर ने आदम और हव्वा के नग्न शरीर (जो इस घटना में एक प्रकार के पाप का प्रतीक है) को उसकी खाल से ढकने के लिए एक जानवर (संभवतः मेमना या बकरी) को मारा (Genesis3:21)। हम बलिदान के इस सिद्धांत को तब भी देखते हैं जब हाबिल ने अपने झुंड से एक मेमने का बलिदान किया (Genesis4:2-4)।

मूसा के समय का प्रसिद्ध फसह पर्व इस्राएलियों को मिस्र से मुक्ति दिलाने का प्रतीक था (Exodus12:1-38)। मूसा ने इस संबंध में परमेश्वर के निर्देशों के साथ-साथ कैलेंडर (Genesis1:14; 2:1; Exodus12:1) और उनके पर्वों (Leviticus 23) को भी दर्ज किया। फसह पर्व मूल रूप से इन वार्षिक आयोजनों में से पहला बन गया, जो परमेश्वर के बच्चों को उनकी महान उद्धार योजना का चित्र प्रस्तुत करता था।

पुराने नियम में, फसह का पर्व मिस्र की गुलामी से मुक्ति और परमेश्वर के हस्तक्षेप का प्रतीक था। लेकिन, भविष्यवाणी के अनुसार, यह उस समय की ओर भी इशारा करता था जब यीशु आएंगे और हमारे फसह के मेमने बनेंगे (1 Corinthians5:7)। परमेश्वर का मेमना जो संसार के पापों को दूर करने आया (John1:29; तुलना करें 3:16-17)।

मनुष्य के रूप में यीशु के अंतिम फसह पर्व पर, उन्होंने इसे शाम के समय मनाना जारी रखा और अपने शिष्यों को भी इसे मनाने के लिए कहा (Luke22:14-19; तुलना करें John13:2,12-15) और 14 तारीख को निसान/आबीब की (तुलना Luke22:14; 23:52-54)।

हालाँकि, यीशु ने इसके पालन से जुड़ी कई प्रथाओं को बदल दिया। यीशु ने अखमीरी रोटी और दाखमधु को फसह का अभिन्न अंग बना दिया (Matthew26:18, 26-30) और पैर धोने की प्रथा को जोड़ा (John13:12-17)।

यीशु ने किसी भी तरह से यह नहीं सिखाया कि यह वार्षिक फसह पर्व नहीं होना चाहिए, न ही उन्होंने इसके पालन का समय बदलकर रविवार की सुबह किया, जैसा कि ग्रीको-रोमन परंपराओं का पालन करने वाले लोग करते हैं। यहां तक कि ग्रीक ऑर्थोडॉक्स विद्वान भी यह स्वीकार करते हैं कि 1 और 2रा सदी के ईसाई भी हमारी तरह ही रात में फसह का पर्व मनाते थे (कैलिवस, अल्कीवियाडिस सी. द ओरिजिन

ऑफ पास्का एंड ग्रेट वीक - पार्ट 1. होली क्रॉस ऑर्थोडॉक्स प्रेस, 1992)। Continuing Church of God 21वीं शताब्दी में करता है फसह केवल विधिवत बपतिस्मा प्राप्त ईसाइयों द्वारा ही लिया जाना चाहिए (तुलना करें 1 Corinthians 11:27-29; Romans 6:3-10; Exodus 12:48; Numbers 9:14)।

यह शायद जोड़ा जाना चाहिए कि रोम का चर्च (साथ ही इसके कई प्रोटेस्टेंट वंशज) आधिकारिक तौर पर सिखाते हैं कि वे फसह मनाते हैं, हालांकि अंग्रेजी भाषा में इसे कुछ अलग नाम से पुकारते हैं और इसे यीशु की तरह नहीं मनाते हैं (कैटेकिज़्म ऑफ द कैथोलिक चर्च। डबलडे, न्यूयॉर्क 1995, पृष्ठ 332)।

अंगूर का रस नहीं, वाइन

इस तथ्य के बावजूद कि यीशु ने पानी को शराब में बदल दिया (John 2:3-10) और नए नियम में प्रयुक्त ग्रीक शब्द (शराब (1 Timothy 3:8 देखें) जहाँ एक ओर शराब का ज़िक्र है, वहीं दूसरी ओर कई लोगों का दावा है कि फसह के लिए अंगूर का रस इस्तेमाल किया जाता था, न कि शराब। हालाँकि, यहूदी लोग खुद फसह के समय शराब का इस्तेमाल करते हैं (हिर्श ईजी, आइज़ेनस्टीन जेडी. वाइन. यहूदी विश्वकोश. 1907, पृ. 532-535)।

हमें यह कैसे पता चलता है कि यीशु ने अंगूर के रस का इस्तेमाल नहीं किया होगा?

अंगूरों की कटाई आमतौर पर सितंबर के आसपास होती है और फसह का पर्व रोमन कैलेंडर के अप्रैल महीने में पड़ता है। यीशु के समय में आधुनिक रोगाणुनाशक या प्रशीतन की सुविधा नहीं थी। इसलिए, अंगूरों का रस कटाई और फसह के पर्व के बीच खराब हो जाता था।

कुछ लोगों का मानना है कि यहूदियों के लिए अंगूर के रस को इतने लंबे समय तक संग्रहित करना असंभव था (देखें कैनेडी एआरएस. हेस्टिंग्स बाइबल डिक्शनरी. सी. स्क्रिब्लर संस, 1909 पृ. 974)। इसलिए, केवल शराब का ही उपयोग किया जाता होगा, जो कई वर्षों तक भी खराब नहीं होती। (Deuteronomy 26:14 में तम्बू पर्व के दौरान शराब जैसे मादक पेय के उपयोग का समर्थन किया गया है, लेकिन यह अनिवार्य नहीं है।)

पौलुस के लिखे अनुसार (Ephesians 5:18, केजेवी), ईसाइयों को “शराब के नशे में चूर नहीं होना चाहिए, जिसमें अति होती है”। फसह के पर्व पर सामान्यतः बहुत कम मात्रा में शराब का सेवन किया जाता है (लगभग एक चम्मच या उससे भी कम)।

फसह का पर्व 14 तारीख को था 15 नहीं

कुछ लोग बाइबिल में वर्णित फसह पर्व की तिथि को लेकर भ्रमित हैं।

बाइबल सिखाती है कि इसे 14 तारीख को मनाया जाना था। परमेश्वर के पंचांग के पहले महीने का दिन (Leviticus 23:5)।

6 में कहा गया है कि मेमने को "शाम के समय" मारा जाना है (जीडब्ल्यूटी और यहूदी प्रकाशन सोसायटी के अनुवाद)। 8वां इस आयत में कहा गया है कि उन्हें उस रात मांस खाना है। इसे भूनकर उसी रात खाना है। और हाँ, मेमनों को मारने वाले के रूप में, कोई भी आसानी से सूर्यास्त और आधी रात के बीच 'पहले साल के' मेमने (Exodus 12:5) को मारकर, भूनकर खा सकता है—जो कि मूल रूप से इस्राएलियों ने Exodus 12 में दर्ज फसह के पर्व पर किया था। और तकनीकी रूप से, Exodus 12:10 के अनुसार उनके पास इसे खाने के लिए सुबह तक का समय था। अब बाइबल स्पष्ट रूप से कहती है कि स्वर्गदूतों का फसह "उसी रात" (Exodus 12:12) हुआ था, जो 14वें फसह की उसी रात थी।

बाइबल सिखाती है कि यीशु को केवल एक बार बलिदान किया जाना था (1 Peter 3:18; Hebrews 9:28; 10:10-14)। नए नियम में यह स्पष्ट है कि यीशु ने अपना अंतिम फसह मनाया (Luke 22:14-16), और उन्हें मार डाला गया। बाइबल दर्शाती है कि यीशु को 15वें फसह से पहले सूली से उतार लिया गया था। क्यों? क्योंकि 15वां यह एक "महान दिन" था (John 19:28-31), विशेष रूप से अखमीरी रोटी का पहला दिन (Leviticus 23:6)। इसलिए, यीशु ने 14 तारीख को फसह का पर्व मनाया और उसे पूरा किया।

प्रारंभिक चर्च के इतिहास में यह भी दर्ज है कि फसह का पर्व 14 तारीख को मनाया जाता था। निसान महीने का पहली, दूसरी और तीसरी शताब्दी में वफादार यहूदी और गैर-यहूदी ईसाई नेताओं द्वारा मनाया जाता था (यूसेबियस, चर्च हिस्ट्री, पुस्तक V, अध्याय 24) और यह शाम को मनाया जाता था (कैलिवस)।

अधिकांश नेता जो ईसाई धर्म को मानने का दावा करते हैं, वे फसह के पर्व के किसी न किसी रूप का पालन करने का दावा करते हैं, हालांकि कई लोगों ने नाम, तिथि और समय बदल दिया है।

प्रतीक और उनका अर्थ (अध्याय 10 में ईस्टर अनुभाग देखें)।

बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि यीशु मसीह हमारे लिए बलिदान किया गया फसह का मेमना था और हमें उस पर्व को बिना खमीर की रोटी के साथ मनाना चाहिए।

पुराने खमीर को निकाल दो, ताकि तुम एक नए आटे की तरह बन सको, क्योंकि तुम खमीर रहित हो। क्योंकि हमारे फसह के मेमने, मसीह का बलिदान हो चुका है।¹ इसलिए आओ, हम यह पर्व पुराने खमीर से नहीं, जो द्वेष और दुष्टता का खमीर है, बल्कि सच्चाई और ईमानदारी की बिना खमीर वाली रोटी से मनाएँ। (1 Corinthians^{5:7-8}, एनएबी)

ध्यान दें कि यह पर्व सच्चाई और निष्ठा की अखमीरी रोटी के साथ मनाया जाना चाहिए। प्रेरित पौलुस ने यह महसूस किया कि यीशु यहूदियों द्वारा प्रयुक्त फसह के मेमने का विकल्प थे। उन्होंने यह भी सिखाया कि मसीहियों को फसह का पर्व मनाना जारी रखना चाहिए।

लेकिन असल में ईसाई लोग यह कैसे करते?

प्रेरित पौलुस समझाते हैं:

²³क्योंकि मुझे प्रभु से वही ज्ञान प्राप्त हुआ जो मैंने तुम्हें भी दिया: कि प्रभु यीशु ने उसी रात, जिस रात उन्हें धोखा दिया गया था, रोटी ली;²⁴ और जब उन्होंने धन्यवाद दिया, तो उन्होंने उसे तोड़ा और कहा, "लो, खाओ; यह मेरा शरीर है जो तुम्हारे लिए तोड़ा गया है; मेरी याद में ऐसा करो।"²⁵ इसी प्रकार उन्होंने भोजन के बाद प्याला लेकर कहा, "यह प्याला मेरे लहू में नई वाचा है। जब भी तुम इसे पियो, मेरी स्मृति में ऐसा करना।"²⁶ क्योंकि जब भी तुम यह रोटी खाते हो और यह प्याला पीते हो, तो तुम प्रभु की मृत्यु का प्रचार करते हो, जब तक कि वह फिर से न आ जाए। (1 Corinthians^{11:23-29})

इसलिए, प्रेरित पौलुस ने सिखाया कि मसीहियों को फसह उसी प्रकार मनाना चाहिए जिस प्रकार यीशु ने रोटी और दाखमधु के साथ अपना अंतिम फसह मनाया था। और वह था रात में स्मरणोत्सव के रूप में—स्मरणोत्सव एक वार्षिक आयोजन होता है, साप्ताहिक नहीं।

कैथोलिक चर्च की धर्मशिक्षा यह बात सही ढंग से कही गई है कि "यीशु ने फसह का समय चुना... रोटी ली, और... उसने उसे तोड़ा" और उसे खाने के लिए भी दिया।

बाइबल में यह दर्ज है कि यीशु ने खमीर रहित रोटी तोड़ी और अपने अनुयायियों को खाने के लिए दी। यीशु ने अपने अनुयायियों को थोड़ी मात्रा में दाखमधु भी पीने के लिए दिया। हम इस तथ्य से सहमत हैं कि यीशु ने बिना खमीर की रोटी तोड़ी और अपने अनुयायियों को थोड़ी मात्रा में दाखमधु दिया। *सतत* परमेश्वर का गिरजाघर प्रार्थना करता है, खमीर रहित रोटी तोड़ता है और बांटता है, और अपने वफादार अनुयायियों को पीने के लिए दाखमधु देता है। फिर भी, रोम का गिरजाघर (कई अन्य गिरजाघरों की तरह) अब खमीर रहित रोटी नहीं तोड़ता (वह पूरी रोटी का उपयोग करता है) और न ही वह *आम तौर पर* अपने अनुयायियों को पीने के लिए शराब वितरित करना (रोम के चर्च द्वारा शराब का वितरण वैकल्पिक माना जाता है, और यह अक्सर प्रोटेस्टेंट चर्चों में नहीं किया जाता है)।

‘जितनी बार...आप घोषणा करते हैं’ के बारे में क्या?

फसह का पर्व कितनी बार मनाना चाहिए?

यीशु ने कहा, **"क्योंकि जब भी तुम यह रोटी खाते हो और यह प्याला पीते हो, तो तुम प्रभु की मृत्यु की घोषणा करते हो जब तक वह फिर से न आ जाए।"**

मान लीजिए कि यह यीशु का है *मौत* उस स्मृति का प्रतीक है।

मसीह की मृत्यु हमें परमेश्वर से मिलाती है (Romans5:10) और यीशु ने हमारे उद्धार के लिए अपना जीवन दिया (John3:16-17; Hebrews5:5-11)। उनकी मृत्यु हमें सिखाती है कि मसीहियों को अपने नश्वर शरीरों पर पाप को हावी नहीं होने देना चाहिए (Romans6:3-12)। मसीही फसह का पर्व हमें परमेश्वर से मिलाता है। वार्षिक यीशु की मृत्यु की स्मृति में मनाया जाने वाला समारोह।

यीशु ने यह नहीं कहा कि आप इस अनुष्ठान को जितनी बार चाहें उतनी बार करें, बल्कि केवल इतना कहा कि जब आप इसे करते हैं, तो आप उनकी मृत्यु की घोषणा कर रहे होते हैं। 1 Corinthians11:26 में अक्सर के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द, होसाकिसइसका प्रयोग नए नियम में केवल एक बार किया गया है। इसका अर्थ यह नहीं है कि जितनी बार आप चाहें, जब तक कि "आप चाहें" के लिए ग्रीक शब्द का प्रयोग न किया जाए। थेलो या एथेलो यह शब्द भी मौजूद है (जैसा कि Revelation11:6 में है; बाइबल में केवल एक ही अन्य स्थान पर इस विशेष शब्द का प्रयोग किया गया है)। हालाँकि, क्योंकि यह 1 Corinthians11:26 में मौजूद नहीं है, पौलुस हमें यह नहीं कह रहा है कि हम प्रभु का फसह जितनी बार चाहें उतनी बार मनाएँ, बल्कि यह कि जब हम फसह के दिन इसे मना रहे हों, तो यह केवल

यह एक समारोह है, जो ईसा मसीह की मृत्यु को दर्शा रहा है।

इसके अलावा, पॉल ने यह लिखा:

²⁷इसलिए जो कोई भी इस रोटी को अयोग्य तरीके से खाता है या प्रभु के इस प्याले को पीता है, वह प्रभु के शरीर और रक्त का दोषी होगा।²⁸लेकिन मनुष्य को अपने भीतर आत्मनिरीक्षण करना चाहिए, और फिर रोटी खानी चाहिए और प्याला पीना चाहिए।²⁹क्योंकि जो अयोग्य तरीके से खाता-पीता है, वह अपने ऊपर न्याय लाता है, क्योंकि वह प्रभु के शरीर को नहीं पहचानता। (1 Corinthians^{11:27-29})

पौलुस स्पष्ट रूप से सिखा रहा है कि इस रोटी और दाखमधु को ग्रहण करने के लिए व्यक्ति को आत्म-निरीक्षण करना चाहिए। फसह के पर्व के दौरान खमीर निकालने की प्रक्रिया हमें अपनी कमियों और पापों पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करती है, और इस प्रकार पौलुस के आत्म-निरीक्षण के इस आदेश को पूरा करने में सहायक होती है। खमीर निकालने में काफी मेहनत लग सकती है, इसलिए यह वार्षिक आत्म-निरीक्षण की अवधारणा का भी समर्थन करता है (लोग हर दिन या हर सप्ताह खमीर नहीं निकालते थे)।

नए नियम में दर्ज है कि यीशु और पौलुस दोनों ने मसीही तरीके से फसह पर्व मनाने की शिक्षा दी थी। और यह एक वार्षिक पर्व था।

पैर धोना

पैर धोना विनम्रता दिखाने में मदद करता है और यह दर्शाता है कि मसीह के अनुयायियों में भी ऐसे क्षेत्र होते हैं जिन्हें शुद्ध करने की आवश्यकता होती है (देखें John 13:10)।

यीशु ने सिखाया कि उनके अनुयायियों को यह करना चाहिए:

¹³तुम मुझे गुरु और प्रभु कहते हो, और तुम ठीक कहते हो, क्योंकि मैं वही हूँ।¹⁴यदि मैंने, जो तुम्हारा प्रभु और गुरु हूँ, तुम्हारे पैर धोए हैं, तो तुम्हें भी एक दूसरे के पैर धोने चाहिए।¹⁵क्योंकि मैंने तुम्हें एक उदाहरण दिया है, ताकि तुम भी वैसा ही करो जैसा मैंने तुम्हारे साथ किया है।¹⁶मैं तुमसे स्पष्ट कहता हूँ, सेवक अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता; और न ही भेजा गया व्यक्ति भेजने वाले से बड़ा होता है।¹⁷यदि तुम इन बातों को जानते हो, तो इन्हें करने पर तुम धन्य हो। (John^{13:13-17})

ईसाई धर्म को मानने वाले अपेक्षाकृत कम लोग यीशु के कहे अनुसार पैर धोते हैं।

लेकिन हम में Continuing Church of God इस संबंध में यीशु के निर्देशों का प्रतिवर्ष पालन करता है।

धर्मग्रंथों के बाहर के स्रोत

केवल बाइबल में ही नहीं, बल्कि इतिहास में भी यह दर्ज है कि ईसाई लोग हर साल फसह का पर्व मनाते थे। मूल प्रेरितों के समय से लेकर युगों-युगों तक (थील बी. Continuing History of the Church of God. 2nd edition, नाज़रीन बुक्स, 2016)।

विकृत पाठ में कुछ रोचक जानकारी मौजूद है जिसे इस प्रकार जाना जाता है। *पॉलीकार्प का जीवन* (यह दस्तावेज़ दूसरी शताब्दी के लेखों पर आधारित प्रतीत होता है, लेकिन वर्तमान संस्करण में चौथी शताब्दी में जोड़े गए कुछ सूचना/परिवर्तन शामिल हैं; देखें मोनरोय एमएस. द चर्च ऑफ स्मरना: हिस्ट्री एंड थियोलॉजी ऑफ ए प्रिमिटिव क्रिश्चियन कम्युनिटी. पीटर लैंग संस्करण, 2015, पृष्ठ 31)। दिलचस्प बात यह है कि यह सुझाव देता है कि एशिया माइनर में फसह का पर्व मनाने की परंपरा स्मरना में सबसे पहले प्रेरित जॉन से नहीं, बल्कि उससे भी पहले प्रेरित पॉल से आई होगी (पियोनियस. लाइफ ऑफ पॉलीकार्प, अध्याय 2)।

पॉलीकार्प का जीवन यह सुझाव देता है कि अखमीरी रोटी और दाखमधु के साथ नए नियम का फसह पर्व अखमीरी रोटी के मौसम के दौरान मनाया जाना था। इसमें कहा गया है कि विधर्मियों ने इसे दूसरे तरीके से मनाया। और यह लेख इस विचार का भी समर्थन करता है कि अखमीरी रोटी और दाखमधु दोनों का सेवन किया जाता था, और यह वार्षिक रूप से किया जाता था।

इतिहास के अनुसार, बाइबल में वर्णित प्रेरितों (फिलिप और जॉन सहित) के साथ-साथ बिशप/पादरी पॉलीकार्प, थ्रेसियस, सागरिस, पपीरियस, मेलिटो, पॉलीक्रेट्स, अपोलिनारिस और अन्य लोग प्रतिवर्ष 14 तारीख को फसह का पर्व मनाते थे। (यूसेबियस. चर्च का इतिहास, पुस्तक V, अध्याय 24 श्लोक 2-7)। रोमन कैथोलिक, पूर्वी ऑर्थोडॉक्स कैथोलिक और एंग्लिकन कैथोलिक सभी उन नेताओं को संत मानते हैं, फिर भी इनमें से कोई भी धर्म इस मामले में उनके उदाहरणों का अनुसरण नहीं करता है।

एशिया माइनर के फ्रिगिया में स्थित हिरापोलिस के बिशप/पादरी अपोलिनारिस ने लगभग 180 ईस्वी में ईसाईयों को 14 तारीख को फसह मनाने के लिए कहा था:

चौदहवाँ दिन, प्रभु का सच्चा फसह; महान बलिदान, मेमने के बदले परमेश्वर का पुत्र, जिसे बाँधा गया था... और जिसे फसह के दिन दफनाया गया था, और कब्र पर पत्थर रखा गया था।

यीशु ने 14 तारीख को भोजन किया और फसह का पर्व मनाया। 14 तारीख को उनकी हत्या कर दी गई थी। और उन्हें 14 तारीख को दफनाया गया था। यह 15 तारीख को नहीं था। और उनकी मृत्यु के वर्ष में, यह रविवार का दिन नहीं था। यीशु ने सूर्यास्त के ठीक बाद फसह का पर्व मनाया होगा और उन्हें दिन के उजाले में ही मार डाला गया होगा और सूर्यास्त से पहले (नए दिन की शुरुआत के लिए) दफना दिया गया होगा।

दूसरी शताब्दी के उत्तरार्ध में, इफिसुस के बिशप/पादरी पॉलीक्रेट्स ने रोमन बिशप विक्टर को एक पत्र भेजा, जब विक्टर ने फसह के पर्व को 14 तारीख के बजाय रविवार को मनाने के लिए दबाव डालने की कोशिश की:

पॉलीक्रेट्स ने लिखा, “हम ठीक उसी दिन का पालन करते हैं; न कुछ जोड़ते हैं, न कुछ घटाते हैं। क्योंकि एशिया में भी महान प्रकाश सो गए हैं, जो प्रभु के आगमन के दिन फिर से जागृत होंगे, जब वह स्वर्ग से महिमा के साथ आएंगे और सभी संतों को खोज निकालेंगे। इनमें बारह प्रेरितों में से एक फिलिप भी हैं, जो हिरापोलिस में सो गए; और उनकी दो वृद्ध कुंवारी बेटियाँ, और एक और बेटी, जो पवित्र आत्मा में रहती थी और अब इफिसुस में विश्राम कर रही है; और इसके अलावा, यूहन्ना, जो एक साक्षी और शिक्षक दोनों थे, जो प्रभु की गोद में विश्राम करते थे, और एक पुजारी होने के नाते, पुरोहिती वस्त्र धारण करते थे। वे इफिसुस में सो गए। और स्मिरना में पॉलीकार्प, जो एक बिशप और शहीद थे; और यूमेनिया के बिशप और शहीद थ्रेसियस, जो स्मिरना में सो गए। मुझे लाओदीकिया में सोए बिशप और शहीद सागरिस, या धन्य पापिरियस, या मेलिटो, वह नपुंसक जो पूरी तरह से पवित्र आत्मा में रहता था, और जो... सार्डिस, स्वर्ग से बिशप पद की प्रतीक्षा कर रहा है, जब वह मृतकों में से जी उठेगा? इन सभी ने सुसमाचार के अनुसार फसह के चौदहवें दिन का पालन किया, किसी भी तरह से विचलित हुए बिना, बल्कि विश्वास के नियम का पालन किया। और मैं भी, पॉलीक्रेट्स, तुम सब में सबसे छोटा, अपने रिश्तेदारों की परंपरा के अनुसार करता हूँ, जिनमें से कुछ का मैंने बारीकी से अनुसरण किया है। मेरे सात रिश्तेदार बिशप थे; और मैं आठवाँ हूँ। और मेरे रिश्तेदार हमेशा उस दिन का पालन करते थे जब लोग खमीर हटा देते थे। इसलिए, हे

भाइयों, मैं, जिसने प्रभु में पैसठ वर्ष जीवन व्यतीत किया है, और दुनिया भर के भाइयों से मिला हूँ, और प्रत्येक पवित्र शास्त्र का अध्ययन किया है, भयानक शब्दों से भयभीत नहीं होता। क्योंकि मुझसे बड़े लोगों ने कहा है, 'हमें मनुष्य की अपेक्षा परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिए'... मैं उन बिशपों का उल्लेख कर सकता हूँ जो उपस्थित थे, जिन्हें मैंने आपकी इच्छा पर बुलाया था; यदि मैं उनके नाम लिखूँ तो एक बहुत बड़ी संख्या हो जाएगी। और उन्होंने मेरी तुच्छता को देखते हुए, पत्र के लिए अपनी सहमति दी, यह जानते हुए कि मैं बोझ नहीं उठा सकता। मेरे सफेद बाल व्यर्थ ही बढ़े, लेकिन मैंने हमेशा प्रभु यीशु के मार्गदर्शन में ही अपना जीवन व्यतीत किया है।

पॉलीक्रेट्स के पत्र पर ध्यान दें:

1) उन्होंने कहा कि वे प्रेरित यूहन्ना द्वारा दी गई शिक्षाओं का पालन कर रहे थे।

क्या आप पॉलीक्रेट्स की तरह यीशु और प्रेरितों के उदाहरण का अनुसरण करेंगे?

क्योंकि प्रारंभिक ईसाई 14 तारीख को फसह मनाते थे, इसलिए उन्हें और ऐसा करने वाले अन्य लोगों को कई इतिहासकारों द्वारा क्वार्टोडेसिमन्स (लैटिन में चौदहवें) कहा जाता था।

प्रारंभिक ईसाइयों ने महसूस किया कि फसह का संबंध ईश्वर की मुक्ति योजना से है। ध्यान दें कि 180 ईस्वी तक, सार्डिस के बिशप/पादरी मेलिटो ने लिखा:

अब फसह का रहस्य आता है, जैसा कि व्यवस्था में लिखा है... इसलिए, लोग कलीसिया के लिए आदर्श बन गए, और व्यवस्था एक प्रतीकात्मक रूपरेखा। लेकिन सुसमाचार व्यवस्था की व्याख्या और उसकी पूर्ति बन गया, जबकि कलीसिया सत्य का भंडार बन गई... यही हमारे उद्धार का फसह है। यही वह है जिसने बहुत से लोगों में धीरज से बहुत सी बातें सहन कीं... यही वह है जो कुंवारी माता से मनुष्य बना, जिसे वृक्ष पर लटकाया गया, जिसे धरती में दफनाया गया, जो मृतकों में से जी उठा, और जिसने मानवजाति को कब्र से उठाकर स्वर्ग की ऊंचाइयों तक पहुंचाया। यही वह मेमना है जिसकी बलि दी गई।

फसह का पर्व प्रतिवर्ष 14 तारीख को मनाया जाता था। बाद की शताब्दियों में विश्वासियों और अन्य लोगों द्वारा निसान की पूजा की गई। कैथोलिक विद्वानों

(युसेबियस, सोक्रेट्स, स्कोलास्टिकस, बेडे) ने दर्ज किया है कि यह घटना चौथी, पाँचवीं, छठी-आठवीं और बाद की शताब्दियों में हुई थी। चर्च ऑफ गॉड के विभिन्न लेखकों ने प्रेरितों के समय से लेकर आधुनिक समय तक इसके पालन का पता लगाया है (उदाहरण के लिए, डगर ए.एन., डोड सी.ओ. ए हिस्ट्री ऑफ टू रिलीजन, तीसरा संस्करण, जेरूसलम, 1972 (चर्च ऑफ गॉड, 7वां दिन)। थील बी. Continuing History of the Church of God, नाज़रीन बुक्स, 2016)।

ग्रीको-रोमन विद्वान मानते हैं कि फसह के कुछ पहलुओं, जैसे पैर धोना, का पालन उन लोगों द्वारा भी किया जाता था जिन्हें वे प्रारंभिक वफादार ईसाई मानते थे (जैसे थर्स्टन, एच. (1912)। पैरों और हाथों को धोना। कैथोलिक विश्वकोश में)।

पासओवर Leviticus के 23वें अध्याय में सूचीबद्ध पहला वार्षिक पर्व है।

फसह का पर्व ईसाइयों के लिए उद्धार और अनुग्रह का प्रतीक है। यह ध्यान देने योग्य है कि प्रारंभिक ईसाई लेखों में इसे अक्सर फसह के रूप में संदर्भित किया जाता है, न कि "प्रभु भोज" के रूप में।

हालांकि कुछ लोग फसह के पर्व के पालन की आवश्यकता को 'आध्यात्मिक' रूप से नकार सकते हैं, लेकिन ग्रीको-रोमन और ईश्वर के चर्च द्वारा संत माने जाने वाले नेताओं ने इसे अक्षरशः निभाया।

हम में Continuing Church of God आज भी ऐसा करता है।

हम में Continuing Church of God फसह का पर्व मनाता है और इसमें एक दूसरे के पैर धोने की ऐतिहासिक और बाइबिल संबंधी प्रथा शामिल है।

शुरू से ही योजना

फसह का पर्व दर्शाता है कि जगत की रचना से पहले ही परमेश्वर की योजना थी (1 Peter 1:20) कि वह यीशु को हमारे पापों के लिए मरने के लिए भेजे, कि परमेश्वर हमसे प्रेम करता है (John 3:16), कि परमेश्वर हमें उद्धार दे सकता है, और कि उसके पुत्र ने हमारे लिए दुख सहा और अपनी जान दी। फसह का पर्व दर्शाता है कि मसीही लोग उसकी मृत्यु के द्वारा पाप से मुक्त हो गए हैं और उन्हें पाप में नहीं रहना चाहिए (Romans 6:1-5)।

लेकिन यीशु के बलिदान को स्वीकार करना ही ईश्वर की उद्धार योजना का एकमात्र हिस्सा नहीं है।

विभिन्न लोग फसह और/या पेंटेकोस्ट को कुछ हद तक पहचान कर परमेश्वर के उद्धार के पर्वों की शुरुआत तो करते हैं, लेकिन अन्य बाइबल पर्वों द्वारा चित्रित परमेश्वर के अनुग्रह (2 Peter3:18) की "संपत्ति की गहराई" (Romans11:33 देखें) को जानने के लिए कभी आगे नहीं बढ़ते।

ईसा मसीह न केवल हमारे उद्धार के रचयिता हैं (Hebrews5:9), बल्कि हमारे उद्धार को पूरा करने वाले भी हैं (Hebrews12:2; 1 Peter1:1-9)। उनके सच्चे अनुयायी उनके वसंत और शरद ऋतु के पवित्र दिनों का पालन करते हैं।

3. पालन की जाने वाली रात और अखमीरी रोटी के दिन

बाइबल बताती है कि मिस्र पाप का प्रतीक था जिससे इस्राएलियों को छुटकारा पाना था (देखें Exodus13:3; Revelation11:8)। बाइबल दर्शाती है कि आज के ईसाई एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जो आध्यात्मिक “बाबुल” का प्रतीक है (Revelation17:1-6)। बाइबल बताती है कि ईसाई अपेक्षाकृत शीघ्र ही इससे छुटकारा पा लेंगे। बाद परमेश्वर बाबुल पर अपनी विपत्तियाँ बरसाता है (Revelation18:1-8)। प्रकाशितवाक्य में वर्णित कई विपत्तियाँ उन विपत्तियों के समान हैं जो परमेश्वर के लोगों के उद्धार से पहले मिस्र में आई थीं।

इस्राएल के लोग अखमीरी रोटी के पहले दिन मिस्र से निकले थे।

बाइबल, Leviticus23:7-8 में सिखाती है कि अखमीरी रोटी के पहले और आखिरी दोनों दिन एक पवित्र सभा (एनकेजेवी) का समय होते हैं। नीसान महीने की पंद्रहवीं शाम (जिससे वह पवित्र दिन शुरू होता है) से अखमीरी रोटी का पर्व शुरू होता है, जिसमें भोजन करना शामिल था (देखें Exodus12:16; Leviticus23:6)।

बाइबल में निम्नलिखित बातें दर्ज हैं:

42यह वह रात है जिसे यहोवा के लिए विशेष महत्व दिया जाना चाहिए क्योंकि उसने उन्हें मिस्र देश से निकाला था; यह यहोवा की वह रात है जिसे इस्राएल के सभी वंशजों को अपनी-अपनी पीढ़ियों में याद रखना चाहिए। (Exodus^{12:42}, केजेवी)

यह हमारे प्रभु की वह रात है, जब उन्होंने उन्हें मिस्र देश से बाहर निकाला: इस रात को इस्राएल की सभी पीढ़ियों को मनाना चाहिए। (मूल पाठ: डुआय रीम्स)

ईसाइयों के लिए, जिस रात का पालन किया जाना है, वह आध्यात्मिक मिस्र को छोड़ने के लिए हमारी कार्रवाई का प्रतीक है (देखें Revelation11:8) - यह कुछ ऐसा है जो ईसाइयों को आनंदित होने का कारण बनना चाहिए।

ऐतिहासिक रूप से, इस पर्व की पूर्व संध्या पर आमतौर पर एक उत्सवपूर्ण रात्रिभोज का आयोजन किया जाता था। इस रात्रिभोज में आमतौर पर खमीर रहित रोटी शामिल होती थी, लेकिन यह केवल रोटी तक ही सीमित नहीं थी।

अधिकांश यहूदी 15 को कहते हैं घाटी

यहूदी नेताओं ने फसह की तिथि और उससे जुड़ी कुछ प्रथाओं में बदलाव किया। कुछ रब्बीनिक स्रोतों का सुझाव है कि ऐसा इसलिए किया गया क्योंकि वे इसे ईसाई धर्मावलंबियों के समान नहीं रखना चाहते थे (वुल्फ जी. बाइबिल और रब्बीनिक फसह पर शाब्दिक और ऐतिहासिक योगदान। जी. वुल्फ, 1991)।

लेकिन शायद इस रात को भोजन करने की प्रथा और कुछ परंपराओं के कारण, साथ ही यहूदियों द्वारा पवित्र दिनों को मनाने के तरीके के कारण, क्योंकि वे इज़राइल देश से बाहर रहते थे (डिस्पोरा) और कैलेंडर संबंधी समस्याएं थीं (पवित्र दिन, यहूदी विश्वकोश, 1906), यहूदी इस रात को फसह कहते हैं, क्योंकि अधिकांश यहूदी इसे 15 तारीख की शाम को मनाते हैं। निसान/अबिब के। कुछ लोग दोनों 14 का पालन करते हैं। और 15वां फसह के पर्व के रूप में।

यीशु के समय में, सदूकी लोग आमतौर पर फसह का पर्व 14 तारीख को मनाते थे। और फरीसी 15 तारीख को (रब्बी जेफरी डब्ल्यू. गोल्डवासर। अमेरिका में यहूदी लोग दो पासओवर सेडर क्यों मनाते हैं?)

लेकिन बाइबल सिखाती है कि ये दो अलग-अलग समय दो अलग-अलग उद्देश्यों के लिए हैं। पुराने नियम का फसह पर्व दर्शाता है कि इस्राएलियों को सुरक्षा मिली और उन्हें मृत्युदूत के प्रकोप से मुक्ति मिली। नए नियम का फसह पर्व मसीहियों को दर्शाता है कि यीशु ने स्वयं अपनी मृत्यु के द्वारा हमारे पापों का दंड भुगता।

लेकिन, इस विशेष रात्रि ने यहूदियों को याद दिलाया कि उन्हें मिस्र की गुलामी से परमेश्वर द्वारा दी गई मुक्ति के लिए आभारी होना चाहिए (Exodus 12:42)। मसीहियों के लिए, यह विशेष रात्रि सिखाती है कि हमें यीशु द्वारा पाप के बंधन से दी गई मुक्ति के लिए आनंदित और आभारी होना चाहिए (John 8:34-36)।

कुछ यहूदी विद्वान इस बात को मानते हैं कि बाइबिल में फसह का पर्व अखमीरी रोटी के पर्व से अलग तिथि पर मनाया जाता है:

हालाँकि, Leviticus के अध्याय 23 में फसह (जो महीने के चौदहवें दिन मनाया जाता है) और (खमीर रहित रोटी का पर्व; ἑορτή τῶν ἄζύμων, Luke 22:1; जोसेफस, "बी. जे." 2:1, § 3) जो पंद्रहवें दिन मनाया जाता है, के बीच अंतर किया गया है। (फसह। यहूदी विश्वकोश, 1906)

इसलिए, अधिकांश यहूदी 15 तारीख को जो कुछ भी मनाते हैं उसे नाम देने के बावजूद, फसह के रूप में, 15वां बाइबल के अनुसार, इसे सात दिवसीय अखमीरी रोटी के त्योहार का हिस्सा माना जाता है। चूंकि यहूदी मिस्र से प्रस्थान पर जोर देते हैं और कुछ गैर-बाइबल परंपराओं पर निर्भर रहते हैं, इसलिए वे आमतौर पर केवल दूसरी तिथि का ही पालन करते हैं।

निर्गमन अध्याय 12 में फसह पर्व के बारे में चर्चा की गई है और इसकी शुरुआत में परमेश्वर मूसा और हारून को निर्देश देते हैं कि उन्हें लोगों को क्या सिखाना है और आगे क्या होने वाला है। इस निर्देश में पहले महीने, जिसे अबीब कहा जाता है, के दसवें दिन एक मेमने को अलग करना और उसे 14वें दिन तक बचाकर रखना शामिल था। जिस दिन इसे गोधूलि बेला में मारा जाना था - 14वें दिन की शुरुआत।

फसह के बारे में निम्नलिखित निर्देशों से एक बात पर ध्यान दें:

21तब मूसा ने इस्राएल के सभी बुजुर्गों को बुलाया और उनसे कहा, "अपने-अपने परिवारों के अनुसार मेमने चुन लो और फसह के मेमने को मार डालो।"²²और तुम एक गुच्छा हिसोब लेकर उसे पात्र में रखे हुए रक्त में डुबोकर उस रक्त से चौखट और दोनों दरवाजों के खंभों पर लेप करना। और तुममें से कोई भी सुबह होने तक अपने घर से बाहर न निकले। (Exodus^{12:21,22})

“सुबह तक” अभिव्यक्ति हिब्रू शब्द से आई है जिसका अर्थ है “दिन के उजाले का फूटना,” “दिन का आना,” या “सूर्योदय का आना।”

इसलिए, इस्राएली 14 तारीख की सुबह होने तक अपने घरों से बाहर नहीं निकले। उस रात पहले क्या हुआ था?

29और आधी रात को ऐसा हुआ कि यहोवा ने मिस्र देश में सभी पहलौठों को मार डाला, फिरौन के पहलौठे से लेकर, जो अपने सिंहासन पर बैठा था, उस कैदी के पहलौठे तक, जो कारागार में था, और सभी पशुओं के पहलौठों को भी...³³और मिस्रियों ने लोगों से आग्रह किया कि वे उन्हें शीघ्र ही देश से बाहर निकाल दें। क्योंकि उन्होंने कहा, "हम सब मर जाएंगे।" (Exodus^{12:29,33})

मूसा और हारून रात के समय बाहर नहीं गए थे - यह एक गलत धारणा है जो कई लोगों के मन में है:

²⁸तब फ़राओ ने उससे कहा, "मुझसे दूर हो जाओ! अपनी जान बचाओ और मेरा चेहरा फिर कभी मत देखना! क्योंकि जिस दिन तुम मेरा चेहरा देखोगे, उसी दिन तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी!"

²⁹तब मूसा ने कहा, "तुमने ठीक कहा। मैं तुम्हारा चेहरा फिर कभी नहीं देखूंगा।" (Exodus^{10:28-29})

प्रथमजात की मृत्यु के बाद, मिस्र छोड़ने से पहले इस्राएलियों को कई कार्य पूरे करने थे। उन्हें सुबह तक, यानी सूर्योदय होने तक, अपने घरों में रहना था, न खाए गए मेमनों के अवशेषों को जलाना था, उन गांवों और शहरों में जाना था जहाँ मिस्रवासी रहते थे और उनसे चांदी, सोना और वस्त्र मांगना था, अपने साथ ले जाने योग्य सामान इकट्ठा करके लादना था और अपने पशुओं और भेड़ों के झुंडों के साथ पैदल यात्रा करनी थी, कुछ लोगों को बीस मील तक की दूरी तय करके रामसेस जाना था, जहाँ से मिस्र से उनकी संगठित यात्रा शुरू होनी थी। ध्यान दें:

³⁴और लोगों ने अपना आटा खमीर उठने से पहले ही ले लिया, और अपने गूँथने के बर्तनों को अपने कपड़ों में बांधकर अपने कंधों पर रख लिया।³⁵और इस्राएलियों ने मूसा के वचन के अनुसार किया; और उन्होंने मिस्रियों से चांदी के गहने, सोने के गहने और वस्त्र उधार लिए।³⁶और यहोवा ने मिस्रियों की दृष्टि में उन लोगों को अनुग्रह प्रदान किया, जिससे उन्होंने उन्हें उनकी आवश्यकतानुसार वस्तुएँ उधार दीं। और उन्होंने मिस्रियों को लूट लिया।³⁷और इस्राएल के लोग रामसेस से सुक्कोत तक पैदल चले, जिनमें लगभग छह लाख पुरुष थे, बच्चों के अलावा।³⁸और उनके साथ एक मिश्रित भीड़ भी गई; और भेड़-बकरियाँ, मवेशी और बहुत सारे पशु भी थे।³⁹और उन्होंने उस आटे से खमीर रहित रोटियाँ बनाईं जो वे मिस्र से लाए थे, क्योंकि वह आटा खमीर रहित था; क्योंकि उन्हें मिस्र से निकाल दिया गया था और वे वहाँ ठहर नहीं सकते थे, और न ही उन्होंने अपने लिए कोई भोजन तैयार किया था। (Exodus^{12:34-39}, केजेवी)

जिस रात का स्मरण किया जाना है, वह वह रात है जब उन्होंने रामसेस को छोड़ा था। वह रात जब उन्होंने वास्तव में मिस्र को छोड़ा था।

ईश्वर द्वारा दिए गए आदेश का पालन करने के बाद, वे चले गए।

Exodus13:18 में लिखा है, “इस्राएल के लोग व्यवस्थित पंक्तियों में मिस्र देश से निकले।” लोगों की संख्या और उनकी उम्र को देखते हुए, यह उल्लेखनीय है कि वे फसह के बाद की रात तक यह सब करने में सक्षम थे।

खमीर रहित रोटी

हम ईसाई मानते हैं कि यीशु ने फसह के पर्व पर हमारे पापों का दंड चुकाया और हमें उनके समान, पाप और पाखंड के बिना जीने का प्रयास करना चाहिए, जिसका प्रतीकात्मक रूप से प्रतिनिधित्व खमीर कर सकता है (Luke12:1)।

दिवंगत हर्बर्ट डब्ल्यू. आर्मस्ट्रांग ने इसके बारे में लिखा था:

और, जिस प्रकार इस्राएली गुलामी से मुक्ति पाकर अत्यंत प्रसन्न और आनंदित होकर निकले (Numbers33:3), उसी प्रकार एक नवजन्मित मसीही भी अपने मसीही जीवन की शुरुआत आनंद और हर्षोल्लास के बादलों में डूबे हुए करता है। लेकिन आगे क्या होता है?

शैतान और पाप तुरंत ही परमेश्वर के नवजात पुत्र का पीछा करते हैं—और जल्द ही नया और अनुभवहीन ईसाई खुद को निराशा की गहराई में डूबा हुआ पाता है, और हार मानकर सब कुछ छोड़ने के लिए प्रलोभित होता है।

निर्गमन अध्याय 14 के पहले पद 10 पर ध्यान दीजिए—जैसे ही इस्राएलियों ने इस विशाल सेना को अपना पीछा करते देखा, उनका साहस टूट गया। उन पर भय छा गया। वे बड़बड़ाने और शिकायत करने लगे। उन्होंने देखा कि फिरौन और उसकी सेना से बच निकलना उनके लिए असंभव था, क्योंकि वह उनसे कहीं अधिक शक्तिशाली था। और वे असहाय हो गए। ठीक यही स्थिति हमारे साथ भी है।

हमारी क्षमता पर्याप्त नहीं है!

लेकिन मूसा के माध्यम से परमेश्वर का उन्हें दिया गया संदेश ध्यान से सुनो: "डरो मत, स्थिर खड़े रहो, और यहोवा का उद्धार देखो... क्योंकि मिस्रियों को तुम फिर कभी नहीं देखोगे। यहोवा तुम्हारे लिए लड़ेगा!" कितना अद्भुत!

असहाय अवस्था में, हमें स्थिर खड़े रहने और प्रभु के उद्धार को देखने के लिए कहा गया है। वह हमारे लिए लड़ेंगे। हम शैतान और पाप पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते, लेकिन वह कर सकते हैं। यह पुनर्जीवित मसीह हैं - हमारे महायाजक - जो हमें शुद्ध करेंगे - हमें पवित्र करेंगे - हमें छुड़ाएंगे - जिन्होंने कहा था कि वह हमें कभी नहीं छोड़ेंगे और न ही हमारा साथ छोड़ेंगे!

हम अपनी शक्ति और सामर्थ्य से आज्ञाओं का पालन नहीं कर सकते। परन्तु हमारे भीतर मौजूद मसीह ही उनका पालन कर सकते हैं! हमें विश्वास के साथ उन पर भरोसा रखना चाहिए। (आर्मस्ट्रांग एच.डब्ल्यू. ईश्वर के पवित्र दिन - या मूर्तिपूजक त्यौहार - कौन सा? वर्ल्डवाइड चर्च ऑफ गॉड, 1976)

त्यौहार का उद्देश्य

लेकिन आइए इसका पूरा महत्व समझें। परमेश्वर ने इन पर्वों को क्यों निर्धारित किया? उनका महान उद्देश्य क्या था? अब Exodus 13, पद 3 की ओर देखें: "...मूसा ने लोगों से कहा, इस दिन को याद रखो, जिस दिन तुम मिस्र से निकले थे..." यह अबीब माह का 15वां दिन था। पद 6: "सात दिन तक तुम अखमीरी रोटी खाओगे, और सातवां दिन परमेश्वर के लिए पर्व होगा... यह परमेश्वर के उस कार्य के कारण किया गया है [एक स्मारक]... और यह एक चिन्ह होगा" — (पहचान का चमत्कारी प्रमाण) — "तुम्हारे हाथ पर, और तुम्हारी आँखों के बीच एक स्मारक के रूप में" — क्यों? — "ताकि यहोवा की व्यवस्था तुम्हारे मुँह में रहे... इसलिए तुम इस नियम का पालन करोगे..."

हे प्रिय भाइयों, क्या आप इस अद्भुत अर्थ को समझ पा रहे हैं? क्या आप इसके सच्चे महत्व को जान पा रहे हैं? क्या आप परमेश्वर के उद्देश्य को देख पा रहे हैं? फसह का पर्व बीते हुए पापों की क्षमा के लिए मसीह की मृत्यु का प्रतीक है। उनके लहू को स्वीकार करने से हमारे भविष्य में किए जाने वाले पाप क्षमा नहीं होते — यह हमें पाप में बने रहने की छूट नहीं देता — इसलिए जब हम इसे स्वीकार करते हैं, तो हमारे पाप केवल उस समय तक ही क्षमा होते हैं — बीते हुए पाप।

लेकिन क्या हम यहीं रुक जाएँ? बीते हुए पाप क्षमा हो गए। लेकिन हम अब भी नश्वर प्राणी हैं। हमें अब भी प्रलोभनों का सामना करना पड़ेगा।

पाप ने हमें अपने चंगुल में जकड़ रखा है—हम पाप के गुलाम बन गए हैं, उसकी शक्ति के अधीन हो गए हैं। और हम उससे खुद को मुक्त करने में असमर्थ हैं। हम पाप के बंधन में हैं। आइए इस तस्वीर—इसका अर्थ—समझें। (आर्मस्ट्रांग एच.डब्ल्यू. फसह और अखमीरी रोटी के पर्व के बारे में आपको क्या जानना चाहिए। गुड न्यूज, मार्च 1979)

ईसाइयों को किस हद तक पाप से दूर रहना चाहिए? पूरी तरह से, जैसा कि यीशु ने सिखाया, “तुम सिद्ध बनो, जैसे तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है” (Matthew 5:48)। खमीर प्रतीकात्मक रूप से पाप का प्रतीक हो सकता है (देखें 1 Corinthians 5:7-8)। पाप की तरह, खमीर भी फूल जाता है।

क्योंकि सात ईश्वर का वह अंक है जो पूर्णता का प्रतीक है, इसलिए ईसाइयों को फसह पर्व के बाद सात दिनों तक खमीर रहित रोटी खानी चाहिए। फसह पर्व का अर्थ और प्रतीकवाद केवल फसह पर्व तक ही सीमित नहीं है। फसह पर्व मसीह के लहू को स्वीकार करने और पिछले पापों की क्षमा तथा यीशु की मृत्यु का प्रतीक है।

क्या हमें मसीह को प्रतीकात्मक रूप से उनकी मृत्यु के वृक्ष पर लटका हुआ छोड़ देना चाहिए (Galatians 3:13 देखें)? नहीं। फसह के बाद सात दिनों तक अखमीरी रोटी खाने से हमें पापों के पूर्ण निवारण और आज्ञाओं के पालन का चित्र मिलता है - यीशु के बलिदान के फलस्वरूप पिछले पापों की क्षमा हो जाने के बाद।

खमीर रहित रोटी के दिन पुनर्जीवित यीशु के जीवन और कार्य को दर्शाते हैं। यीशु परमेश्वर के सिंहासन पर आरोहण कर गए, जहाँ वे अब हमारे महायाजक के रूप में हमारे लिए सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं, हमें पाप से शुद्ध कर रहे हैं (Hebrews 2:17-18) और हमें उसकी शक्ति से पूरी तरह मुक्त कर रहे हैं।

यहाँ इब्रानी धर्मग्रंथों में अखमीरी रोटी के दिनों के बारे में कुछ अंश दिए गए हैं:

¹⁵सात दिन तक खमीर रहित रोटी खाना। पहले दिन अपने घरों से खमीर निकाल देना। क्योंकि जो कोई पहले दिन से सातवें दिन तक खमीर वाली रोटी खाएगा, उसे इस्राएल से अलग कर दिया जाएगा।¹⁶पहले दिन एक पवित्र सभा होगी, और सातवें दिन तुम्हारे लिए एक पवित्र सभा होगी। उन दिनों किसी प्रकार का कार्य नहीं किया जाएगा; केवल वही भोजन तुम तैयार कर सकते हो जो सभी को खाना है।¹⁷अतः तुम अखमीरी रोटी का पर्व मनाओगे, क्योंकि इसी दिन मैं तुम्हारी सेनाओं को मिस्र देश से बाहर निकाल लाऊंगा। अतः तुम इस पर्व को अपनी सभी पीढ़ियों में एक

चिरस्थायी नियम के रूप में मनाओगे।¹⁸पहले महीने की चौदहवीं तारीख की शाम को, आप बिना खमीर की रोटी खाएंगे, और यह सिलसिला महीने की इक्कीसवीं तारीख की शाम तक जारी रहेगा।¹⁹सात दिनों तक तुम्हारे घरों में खमीर नहीं पाया जाएगा, क्योंकि जो कोई भी खमीरयुक्त भोजन खाएगा, उसे इस्राएल की मंडली से निकाल दिया जाएगा, चाहे वह परदेशी हो या उस देश का निवासी।²⁰तुम खमीरयुक्त कुछ भी नहीं खाओगे; तुम अपने सभी घरों में बिना खमीर की रोटी खाओगे।" (Exodus^{12:15-20})

Leviticus 23:6-8 में भी इसके बारे में बताया गया है। और Deuteronomy 16:16 से पता चलता है कि अखमीरी रोटी के दिनों, पेंटेकोस्ट और शरद ऋतु के पवित्र दिनों में भेंट चढ़ाने की अपेक्षा की जाती थी।

जब परमेश्वर ने उन्हें मिस्र देश से निकाला (Jeremiah 7:22), तब वहाँ कोई "होमबलि या बलिदान" नहीं थे। अवज्ञा के कारण इन्हें जोड़ा गया (Jeremiah 7:21-27) और नया नियम स्पष्ट करता है कि अब हमें होमबलि या पशुबलि की आवश्यकता नहीं है (Hebrews 9:11-15)।

जैसे-जैसे हम प्रतिदिन खमीर रहित रोटी खाते हैं, हमें यह एहसास होता है कि हमें उस पाप से बचना होगा जो हमारे आसपास की दुनिया में बहुत प्रचलित है।

क्या इसे खत्म कर दिया जाए या रखा जाए?

क्या खमीर रहित रोटी के दिन समाप्त हो गए? हर्बर्ट डब्ल्यू. आर्मस्ट्रांग द्वारा लिखित एक अन्य बात पर विचार करें:

पुराने अनुबंध के साथ समाप्त नहीं हुआ

ध्यान दें कि अखमीरी रोटी के दिन एक अवधि हैं, जिसमें दो प्रमुख सप्ताह के दिन शामिल हैं। और यह अवधि हमेशा के लिए स्थापित है - जब इस्राएली अभी मिस्र में थे - मूसा की विधिक व्यवस्था के दिए जाने या लिखे जाने से पहले - परमेश्वर द्वारा पुरानी वाचा का प्रस्ताव रखने से पहले भी! जो मूसा की व्यवस्था या पुरानी वाचा ने नहीं लाया या स्थापित नहीं किया, उसे वे नहीं छीन सकते! फेंटन के अनुवाद में, 17वें पद का अनुवाद इस प्रकार है: "इसलिए इस अवधि को एक शाश्वत संस्था के रूप में मनाओ।" पूरी अवधि इसमें शामिल है।

इससे ही यह साबित हो जाना चाहिए कि पवित्र दिन - और अखमीरी रोटी के सात दिन - आज और हमेशा के लिए बाध्यकारी हैं!

अब, यदि ये पाठ 14वें के बजाय 15वें पर लागू होते हैं, जैसा कि निश्चित रूप से होता है, और यहाँ निर्णायक रूप से सिद्ध हो चुका है, तो क्या फसह का पर्व सदा के लिए स्थापित है? बिलकुल है! लेकिन ऊपर दिए गए पाठ पर्व की बात करते हैं, न कि फसह की। Exodus 12:21 से शुरू होने वाले अनुच्छेद में फिर से फसह का उल्लेख किया गया है, और पद 24 इसे सदा के लिए स्थापित करता है!...

केवल फसह का पर्व मनाना और फिर सात दिनों तक अखमीरी रोटी का पालन न करना, प्रतीकात्मक रूप से, मसीह के लहू को स्वीकार करने और पाप में बने रहने का अर्थ है... यह कहना कि... व्यवस्था समाप्त हो गई है, हम अनुग्रह के अधीन हैं, जिसका अर्थ है पाप में बने रहने की छूट!

सात दिनों तक खमीर रहित रोटी खाने का अर्थ है दस आज्ञाओं का पालन करना, जो दूसरे शब्दों में पाप से मुक्ति पाने का प्रतीक है। (आर्मस्ट्रॉंग एच.डब्ल्यू. फसह और खमीर रहित रोटी के पर्व के बारे में आपको क्या जानना चाहिए। गुड न्यूज, मार्च 1979)

प्रारंभिक ईसाई यह नहीं मानते थे कि अखमीरी रोटी के दिन समाप्त हो गए हैं। प्रेरित पौलुस ने अखमीरी रोटी के साथ इस पर्व को विधिपूर्वक मनाने का समर्थन किया (1 Corinthians 5:7)। वह और अन्य लोग अभी भी इसे मनाते थे और यहूदिया के बाहर भी इसका पालन करते थे।

लेकिन अखमीरी रोटी के दिनों के बाद हम फिलिप्पी से रवाना हुए और पाँच दिन बाद ट्रौआस में उनसे मिले, जहाँ हम सात दिन ठहरे। (Acts 20:6)

यदि ईसाई लोग अखमीरी रोटी के दिनों का पालन नहीं करते, तो पवित्र आत्मा ने इसे इस प्रकार दर्ज करने की प्रेरणा नहीं दी होती। फिलिप्पी मकिदुनिया (Macedonia) का एक गैर-यहूदी नगर था। इस पर रोमियों का शासन था—इसलिए इन दिनों का पालन केवल यरूशलेम जैसे स्थान तक सीमित नहीं था। नए नियम में कम से कम दो स्थानों पर हम देखते हैं कि अखमीरी रोटी के दिनों का पालन गैर-यहूदी क्षेत्रों में भी किया जाना था (1 Corinthians 5:7; Acts 20:6)।

Acts12:3 में दिए गए कथन "यह अखमीरी रोटी के दिनों के दौरान हुआ था" पर भी विचार करें। चूंकि गैर-यहूदी लेखक लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक एक अन्य गैर-यहूदी को संबोधित करते हुए लिखी थी (Acts1:1), तो अगर ये दिन गैर-यहूदी मसीहियों के लिए अज्ञात थे और उनका अस्तित्व समाप्त हो चुका था, तो उन्होंने इन दिनों का उल्लेख क्यों किया होगा?

शायद यह भी जोड़ा जाना चाहिए कि नकली 3 तृतीय शतक *प्रेरितों का पत्र* दावा किया जाता है कि यीशु ने अपने अनुयायियों को सिखाया था कि जब तक वह वापस नहीं आ जाते, तब तक उन्हें अखमीरी रोटी के दिनों का पालन करना चाहिए। हालांकि हम उस दस्तावेज़ पर भरोसा नहीं कर सकते, लेकिन यह इंगित करता है कि कुछ लोग उन दिनों को तीसरी शताब्दी तक मनाते रहे।

बाइबल के बाहर से मिली जानकारी के अनुसार, प्रेरित पौलुस, यूहन्ना और फिलिप, स्मिरना के पॉलीकार्प और अन्य प्रारंभिक ईसाइयों के साथ, अखमीरी रोटी के दिनों का पालन करते थे (पियोनियस। पॉलीकार्प का जीवन, अध्याय 2)।

इसके बावजूद, कैनेन 38 का *लाओडिसिया की परिषद* चौथी शताब्दी (लगभग 363-364) के दौरान आयोजित परिषद ने अखमीरी रोटी के दिनों के पालन पर प्रतिबंध लगा दिया था। ईश्वर के गिरजाघर के लोग इस परिषद के कई फरमानों का पालन नहीं कर सके, जो बाइबिल और विश्वासियों की प्रारंभिक परंपराओं के विरुद्ध थे।

इसलिए, विभिन्न सभ्य मानने वाले लोग बाद में भी अखमीरी रोटी के दिनों का पालन करते रहे (प्रिज़. नाज़रीन यहूदी ईसाई धर्म. मैग्रास, जेरूसलम, 1988, पृ. 35; जेरोम जैसा कि प्रिज़ में उद्धृत है, पृ. 58, 62, 63; एफ़िफ़ेनियस. सलामिस के एफ़िफ़ेनियस का पैनारियन: पुस्तक ॥ (खंड 1-46) खंड 1, अध्याय 19, 7-9. ब्रिल, 1987, पृ. 117-119) और मध्य युग और उसके बाद भी (लीच्ची डी. सोलहवीं शताब्दी में सब्बवाद. एंड्रयूज यूनिवर्सिटी प्रेस, बेरियन स्प्रिंग्स (एमआई), 1993, पृ. 61-62; फाल्कनर जॉन. जॉन ट्रैस्केस के यहूदी और नवीन कल्पनाओं का संक्षिप्त खंडन, पृ. 57-58, जैसा कि बॉल बी. सेवेंथ डे मेन: सब्बवादी और सब्बवाद में उद्धृत है) इंग्लैंड और वेल्स, 1600-1800, द्वितीय संस्करण। जेम्स क्लार्क एंड कंपनी, 2009, पृष्ठ 49-50)।

जैसा कि हम में Continuing Church of God इस बात को स्वीकार नहीं करता है किलाओडिसिया की परिषदसच्चे ईसाई चर्च की ओर से बोलते हुए, हम आज भी अखमीरी रोटी के दिनों का पालन करते हैं। बाइबल के निर्देशानुसार (Exodus12:15; 13:6; 23:15; 34:18), हम सातों दिन अखमीरी रोटी खाते हैं। यह

रोटी विभिन्न अनाजों/मेवों से बनाई जा सकती है—गेहूं का उपयोग बाइबल के अनुसार अनिवार्य नहीं है।

(शायद यह उल्लेख करना उचित होगा कि इस पर्व के दौरान खमीर रहित रोटी के अलावा अन्य खाद्य पदार्थ भी खाए जा सकते हैं, बस खमीर वाली रोटियाँ नहीं खानी चाहिए। साथ ही, फसह के विपरीत, खमीर रहित रोटी का पहला और आखिरी दिन, साप्ताहिक सब्त की तरह, ऐसे दिन होते हैं जब काम नहीं करना चाहिए।)

हालांकि कुछ लोग बाइबिल के कई हिस्सों को प्रतीकात्मक अर्थों में ढालने की कोशिश करते हैं, लेकिन पवित्र दिनों का आध्यात्मिक अर्थ तो निश्चित रूप से है ही, साथ ही इसका भौतिक अर्थ भी है। और भौतिक रूप से इन दिनों का पालन करने से हमें आध्यात्मिक शिक्षाओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलती है।

खमीर रहित रोटी के दिन हमें यह दर्शाने में मदद करते हैं कि हम मसीहियों को अपने जीवन से पाप और पाखंड को दूर करने का प्रयास करना चाहिए (देखें Matthew 16:6-12; 23:28; Luke 12:1)। इन्हें भौतिक रूप से मनाने से हमें परमेश्वर द्वारा निर्धारित आध्यात्मिक शिक्षाओं को बेहतर ढंग से सीखने में सहायता मिलती है।

4. पेंटेकोस्ट: आपके बुलावे के बारे में सच्चाई और ईश्वर का अद्भुत उपहार

जो लोग मसीह में विश्वास रखते हैं, उनमें से अधिकांश पेंटेकोस्ट के बारे में कुछ न कुछ जानते हैं। कई लोग इसे नए नियम के चर्च की शुरुआत मानते हैं, जो कि बिल्कुल सही है।

यीशु की मृत्यु के बाद, उनके शिष्यों को पवित्र आत्मा की शक्ति प्राप्त करने के लिए प्रतीक्षा करने को कहा गया था:

⁴और उनके साथ एकत्रित होकर, उसने उन्हें यरूशलेम से न जाने की आज्ञा दी, बल्कि पिता के वादे की प्रतीक्षा करने को कहा, "जो," उसने कहा, "तुमने मुझसे सुना है;⁵क्योंकि यूहन्ना ने तो सचमुच जल से बपतिस्मा दिया था, परन्तु तुम कुछ ही दिनों में पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे। (Acts^{1:4-5})

तो उन्होंने इंतजार किया और:

¹जब पेंटेकोस्ट का दिन पूरी तरह से आ गया, तो वे सब एकमत होकर एक जगह पर थे (Acts^{2:1})।

ध्यान दें कि यह कथन इस तथ्य पर जोर देता है कि **पेंटेकोस्ट का दिन पूरी तरह से आ चुका था।** बाइबल यह स्पष्ट कर रही है कि आगे घटित होने वाली घटनाएँ सीधे तौर पर इस तथ्य से संबंधित थीं कि **पेंटेकोस्ट का दिन पूरी तरह से आ चुका था।** और, शिष्यों के साथ ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि वे सभी मिलकर इसे देख रहे थे।

इसके बाद जो हुआ वह इस प्रकार है:

²और अचानक आकाश से एक आवाज़ आई, जैसे तेज़ हवा का झोंका हो, और उसने उस पूरे घर को भर दिया जहाँ वे बैठे थे।³फिर उन्हें आग की लपटों के समान दो अलग-अलग जीभें दिखाई दीं, और उनमें से प्रत्येक पर एक-एक जीभ बैठी हुई थी।⁴और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए और आत्मा की प्रेरणा से दूसरी भाषाओं में बोलने लगे।

³⁸तब पतरस ने उनसे कहा, “पश्चात्ताप करो, और तुममें से प्रत्येक यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले ताकि तुम्हारे पापों की क्षमा हो जाए।”

पापों का निवारण करो; और तुम्हें पवित्र आत्मा का वरदान प्राप्त होगा।³⁹क्योंकि यह वादा तुम्हारे लिए और तुम्हारे बच्चों के लिए, और उन सभी के लिए है जो दूर हैं, उन सभी के लिए जिन्हें हमारा परमेश्वर यहीवा बुलाएगा।

⁴⁰और उसने अनेक अन्य शब्दों से गवाही दी और उन्हें समझाते हुए कहा, “इस भ्रष्ट पीढ़ी से बचो।”⁴¹फिर जिन्होंने सहर्ष उसका वचन ग्रहण किया, उन्हें बपतिस्मा दिया गया; और उस दिन लगभग तीन हजार आत्माएँ उनसे जुड़ गईं।⁴²और वे प्रेरितों के उपदेशों और संगति में, रोटी तोड़ने में और प्रार्थनाओं में दृढ़तापूर्वक लगे रहे।⁴⁷परमेश्वर की स्तुति करना और सब लोगों की कृपा पाना। और प्रभु प्रतिदिन कलीसिया में उद्धार पा रहे लोगों को जोड़ता रहा। (Acts^{2:2-4, 38, 42, 47})

उन्हें पवित्र आत्मा की कुछ शक्ति प्राप्त हुई। रोमन कैथोलिक, पूर्वी ऑर्थोडॉक्स, अधिकांश प्रोटेस्टेंट, यहीवा के साक्षी और चर्च ऑफ गॉड समूह इसे ईसाई चर्च की शुरुआत मानते हैं। इसलिए पवित्र आत्मा एक निश्चित समय पर दी गई थी (उसी समय जब कई यहूदी पेंटेकोस्ट मनाते थे) और यीशु के शिष्य भी उस समय इसे मना रहे थे।

यह कोई संयोग नहीं था।

क्या पेंटेकोस्ट में और भी कुछ है?

बहुत से लोग यह नहीं समझते कि पेंटेकोस्ट का मतलब पवित्र आत्मा का दिया जाना और नए नियम के चर्च की शुरुआत से कहीं अधिक था।

पुराने और नए नियम में दिए गए अंशों को देखने से इस दिन और इसके अर्थ के बारे में अधिक जानकारी मिलती है।

प्रारंभिक पेंटेकोस्ट पर्व के बाद ईसाइयों द्वारा इसे मनाया जाता रहा, लेकिन इसमें अन्य भाषाओं में बोलने का कोई उल्लेख नहीं था। प्रेरित पौलुस ने प्रेरितों के कार्य की पुस्तक के दूसरे अध्याय में वर्णित पेंटेकोस्ट के दशकों बाद भी इसे मनाना जारी रखा। ध्यान दीजिए कि उन्होंने लगभग 56 ईस्वी में क्या लिखा:

⁸मैं अब रास्ते में तुमसे मिलना नहीं चाहता; परन्तु यदि प्रभु की कृपा हुई तो मैं तुम्हारे साथ कुछ समय ठहरना चाहता हूँ। परन्तु मैं पेंटेकोस्ट तक इफिसुस में ठहरूँगा (1 Corinthians^{16:8})।

इससे पता चलता है कि पौलुस को पता था कि पेंटेकोस्ट कब है, उसे लगता था कि कुरिंथियों को भी पता होना चाहिए कि पेंटेकोस्ट कब है, और इफिसियों को भी पता होगा कि पेंटेकोस्ट कब है। इस प्रकार, स्पष्ट रूप से पौलुस और इफिसुस और कुरिंथ में रहने वाले अन्यजातियों द्वारा इसे मनाया जा रहा था।

एक अन्य वर्ष में, प्रेरित पौलुस ने भी लगभग 60 ईस्वी में पेंटेकोस्ट के अवसर पर यरूशलेम में उपस्थित होने की इच्छा व्यक्त की थी।

¹⁶पौलुस ने इफिसुस से आगे निकल जाने का फैसला किया था, ताकि उसे एशिया में समय न बिताना पड़े; क्योंकि वह जल्दी में था कि यदि संभव हो तो पेंटेकोस्ट के दिन यरूशलेम पहुँच जाए (Acts^{20:16})।

इस प्रकार, यरूशलेम में ईसाई अभी भी पेंटेकोस्ट मना रहे थे और पौलुस भी इसे मना रहा था। अन्यथा, पौलुस के पेंटेकोस्ट के दिन यरूशलेम में होने का कोई स्पष्ट कारण नहीं होता।

पेंटेकोस्ट शब्द ग्रीक भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है 50वां यह शब्द तिथि की गणना करने के निम्नलिखित हिब्रू विवरण से लिया गया है:

¹⁵और तुम सब्ब के दिन के बाद से, जिस दिन तुमने भेंट की बाली लाई थी, उस दिन से गिनना शुरू करोगे: सात सब्ब पूरे हो जाएँगे।¹⁶सातवें सब्ब के दिन के बाद पचास दिन गिनें (Leviticus^{23:15-16})।

पेंटेकोस्ट दिवस के कई नाम हैं, और इसी वजह से कुछ लोग इसे लेकर भ्रमित हो जाते हैं। बाइबल में इसके अन्य नाम हैं: फसल का पर्व, सप्ताहों का पर्व और प्रथम फल का दिवस।

यहूदी परंपराएं और पेंटेकोस्ट कब मनाया जाता है?

ईश्वर के पवित्र त्योहारों के दौरान अक्सर गीत गाए जाते थे, जो सूर्यास्त के समय शुरू होते थे।

29तुम ऐसे गीत गाओगे जैसे किसी पवित्र पर्व के अवसर पर रात में गाए जाते हैं, और तुम्हारे हृदय में ऐसी प्रसन्नता होगी जैसे कोई बांसुरी बजाते हुए यहोवा के पर्वत पर, इस्राएल के सर्वशक्तिमान परमेश्वर के पास जाता है। (Isaiah^{30:29})

आधुनिक यहूदी लोग पेंटेकोस्ट को शावूत (Shavuot) नाम से पुकारते हैं।

कुछ लोग इस बात को लेकर भ्रमित हैं कि पेंटेकोस्ट कब मनाया जाता है। कई यहूदी इसे उसी दिन नहीं मनाते जिस दिन Continuing Church of God इसे मनाता है।

यहूदी सद्दकियों ने सही कहा था कि "पेंटेकोस्ट हमेशा रविवार को ही पड़ेगा," हालांकि "तालमुद के बाद के साहित्य और जियोनिक साहित्य में... पेंटेकोस्ट सिवान की छठी तारीख को पड़ता है" (पिनेल्स, "डार्क शेल तोराह," पृष्ठ 212, वियना, 1861; पेंटेकोस्ट। यहूदी विश्वकोश 1906)। कई यहूदी अब जिस तिथि का उपयोग करते हैं (जो तालमुद के बाद के साहित्य में है, जिसे पुराने नियम के बाद संकलित किया गया था और यह धर्मग्रंथ नहीं है), वह बाद का परिवर्तन है और बाइबिल की तिथि नहीं है। हम Continuing Church of God बाइबिल में वर्णित पद्धति का पालन करता है।

पूर्व मुख्य रब्बी लॉर्ड सैक्स की निम्नलिखित बातों पर भी ध्यान दें:

फरीसी, जो लिखित और मौखिक दोनों कानूनों में विश्वास करते थे, यहाँ "सब्ब" का अर्थ फसह के पहले दिन (15 निसान) समझते थे। सद्दकी, जो केवल लिखित कानूनों में विश्वास करते थे, उन्होंने पाठ को अक्षरशः लिया। सब्ब के बाद का दिन रविवार होता है। इस प्रकार, गिनती हमेशा रविवार से शुरू होती है, और पचास दिन बाद आने वाला शवोत भी हमेशा रविवार को ही पड़ता है। (सैक्स एल. यहूदी धर्म: शवोत पर एक विचार। अरुत्ज़ शेवा, 3 जून 2014।)

ईसाइयों को याद रखना चाहिए कि यीशु ने फरीसियों की निंदा इसलिए की थी क्योंकि वे लिखित व्यवस्था की बजाय मौखिक व्यवस्था पर अधिक भरोसा करते थे (Mark7:5-13)। यीशु ने उनसे कहा था, "तुम अपनी उन परंपराओं के द्वारा, जो तुमने पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही हैं, परमेश्वर के वचन को निष्प्रभावी कर रहे हो। और तुम ऐसे बहुत से काम करते हो" (Mark7:13)।

और, जैसा कि नीचे दिखाया गया है, पेंटेकोस्ट पचास की गिनती के समय को प्रथम फल से संबंधित होने के रूप में संदर्भित करता है:

¹⁶सातवें सब्त के दिन के बाद पचास दिन गिनो; फिर तुम यहोवा को अन्न का नया चढ़ावा चढ़ाओगे।¹⁷तुम अपने घरों से दो लहरदार रोटियाँ लाना, जो एक एफा के दो-दसवें हिस्से के बराबर हों। वे उत्तम आटे की बनी हों और खमीर से पकाई गई हों। वे यहोवा के लिए प्रथम फल हैं (Leviticus^{23:16-17})।

जब आप सातवें सब्त के बाद पचास दिन गिनते हैं, तो आप पाते हैं कि पेंटेकोस्ट हमेशा रविवार को आता है। पेंटेकोस्ट शनिवार को सूर्यास्त से लेकर रविवार को सूर्यास्त तक चलता है। इरेनियस, जिन्होंने स्मिरना के पालीकार्प से मिलने का दावा किया था, ने लिखा कि प्रेरितों ने पेंटेकोस्ट रविवार को मनाया था (इरेनियस के अंश, 7)।

पहले फल

“प्रथम फल” शब्द का प्रयोग दूसरी फसल का संकेत देता है। और वास्तव में, इस बात का उल्लेख पुराने नियम में भी किया गया है:

¹⁶...फसल कटाई का पर्व, तुम्हारे परिश्रम का पहला फल जो तुमने खेतों में बोया है;¹⁷और साल के अंत में फसल कटाई का पर्व, जब तुम खेतों से अपने परिश्रम का फल इकट्ठा कर लेते हो (Exodus^{23:16-17})। ²²और तुम सप्ताहों का पर्व, गेहूँ की फसल के पहले फल का पर्व, और वर्ष के अंत में फसल कटाई का पर्व मनाओगे (Exodus^{34:22})।

²⁶और प्रथम फल के दिन, जब तुम अपने सप्ताहों के पर्व पर यहोवा को नया अनाज भेंट लाते हो, तो तुम एक पवित्र सभा करोगे (Numbers^{28:26})।

जबकि कुछ प्रोटेस्टेंट टीकाकार लहराती बाली भेंट को प्रथम फल पर्व के रूप में संदर्भित करते हैं (उदाहरण के लिए, राडमाकर ई.डी. एड. द नेल्सन स्टडी बाइबल. थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, नैशविले, 1997, पृ. 213), यह एक गलत नामकरण है। जबकि उस समय "प्रथम फलों का एक गट्टा" चढ़ाया गया था (Leviticus^{23:10-11}), जैसा कि ऊपर दिखाया गया है, बाइबिल सप्ताहों के पर्व को प्रथम फलों के समय के रूप में संदर्भित करती है (न कि केवल एक गट्टे के रूप में)।

प्रथम फल की अवधारणा हमें इस दिन को समझने में कैसे मदद करती है?

पेंटेकोस्ट का पर्व या प्रथम फल का पर्व (Exodus^{34:22}) हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर अभी केवल एक छोटी सी “प्रथम फल” की आध्यात्मिक फसल को बुला

रहा है, क्योंकि आने वाला अंतिम महान दिन एक बड़ी फसल का प्रतीक है। अधिकांश क्षेत्रों में, वसंत ऋतु की फसल, शरद ऋतु की बड़ी फसल की तुलना में बहुत छोटी होती है, और यह मानवता के लिए परमेश्वर की उद्धार योजना के अनुरूप है।

लेकिन यीशु के बारे में क्या? क्या वह प्रथम फल का प्रतीक नहीं थे?

जी हाँ, वह निश्चित रूप से थे। पॉल लिखते हैं:

²⁰लेकिन अब मसीह मृतकों में से जी उठा है, और जो सो गए हैं उनमें से पहला फल बन गया है।²¹क्योंकि मनुष्य के द्वारा ही मृत्यु आई, और मनुष्य के द्वारा ही मरे हुएों का पुनरुत्थान भी हुआ।²²क्योंकि जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसे ही मसीह में सब जीवित किए जाएँगे।²³लेकिन हर एक अपने-अपने क्रम में: मसीह पहला फल है, उसके बाद वे जो उसके आने पर मसीह के हैं। (1 Corinthians^{15:20,23})

Leviticus 23:10-11 में वर्णित अनाज की बाली भेंट की पूर्ति यीशु मसीह ने की। वे प्रथम फल की बाली हैं। पुनरुत्थान के बाद रविवार को (जब अनाज की बाली भेंट रविवार को हुई थी) स्वर्गारोहण के समय भी उन्होंने इस भूमिका को पूर्ण किया (John 20:1,17)। परन्तु न तो उन्होंने और न ही उनके सच्चे अनुयायियों ने उस पर्व को मनाया जिसे अब ईस्टर कहा जाता है।

इसके अलावा, जेम्स बताते हैं कि यीशु ने हमें प्रथम फल के प्रतीक के रूप में भी उत्पन्न किया है:

¹⁸अपनी इच्छा से उसने हमें सत्य के वचन द्वारा उत्पन्न किया, ताकि हम उसकी सृष्टि के प्रथम फल के समान हों (James^{1:18})।

अतः, जहाँ यीशु मूल रूप से पहली फसल थे जो लहराते हुए अनाज के गट्टे का प्रतिनिधित्व करते थे, वहीं सच्चे ईसाई भी एक प्रकार की पहली फसल हैं, जिनका प्रतिनिधित्व पेंटेकोस्ट का दिन करता है। "पहली फसल" का अर्थ है कि इस युग में केवल कुछ ही लोग फसल का हिस्सा होंगे (Luke 12:32; Romans 9:27; 11:5 देखें) - लेकिन इसका यह भी अर्थ है कि एक बड़ी फसल होगी - एक ऐसा समय जब वे सभी जिन्हें कभी उद्धार का अवसर नहीं मिला, उन्हें बाद में एक सच्चा और वास्तविक अवसर मिलेगा।

ध्यान दीजिए कि पीटर ने पेंटेकोस्ट के दिन क्या कहा था:

²⁹"भाइयों और भाइयों, मैं आप लोगों से कुलपति दाऊद के बारे में खुलकर बात करना चाहता हूँ, कि वह मर चुका है और दफनाया जा चुका है, और उसकी कब्र आज तक हमारे साथ है।"³⁰इसलिए, भविष्यवक्ता होने के नाते, और यह जानते हुए कि परमेश्वर ने उससे शपथ लेकर वादा किया था कि वह उसके शरीर के फल से, शारीरिक रूप से, मसीह को उसके सिंहासन पर बिठाएगा,³¹उसने इस बात का पूर्वाभास करते हुए मसीह के पुनरुत्थान के विषय में कहा कि उसकी आत्मा पाताल लोक में नहीं छोड़ी गई और न ही उसके शरीर में सड़न हुई।³²इस यीशु को परमेश्वर ने जीवित किया है, जिसके हम सब साक्षी हैं।³³अतः परमेश्वर के दाहिने हाथ पर लूँचा उठाया जाकर और पिता से पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा पाकर, उसने यह उंडेल दिया जिसे अब तुम देखते और सुनते हो। (Acts^{2:29-33})

ध्यान दें कि पेंटेकोस्ट के दिन पतरस ने यीशु को फल कहा और बताया कि वह जी उठे थे। पेंटेकोस्ट दर्शाता है कि परमेश्वर अपनी पवित्र आत्मा प्रदान करके इस छोटी फसल को आशीष देते हैं ताकि हम इस "वर्तमान दुष्ट युग" में रहते हुए भी विजय प्राप्त कर सकें, उनका कार्य कर सकें और आध्यात्मिक रूप से विकसित हो सकें (Galatians 1:4)।

यीशु न केवल प्रथम फल थे, बल्कि वे बहुत से भाइयों में प्रथम पुत्र भी थे:

²⁹जिनके बारे में उसने पहले से ही जान लिया था, उनके लिए उसने अपने पुत्र की छवि के अनुरूप होने के लिए भी पूर्वनियोजित किया था, ताकि वह बहुत से भाइयों में पहला जन्म लेने वाला हो (Romans^{8:29})। ⁵यीशु मसीह, सच्चा गवाह, मृतकों में से पहला जन्मा (Revelation^{1:5})।

क्योंकि यीशु प्रथमजात हैं, इसका स्पष्ट अर्थ है कि उनके जैसे और भी लोग होंगे। इस प्रकार, यीशु मसीह के समान बनना भी पेंटेकोस्ट के संदेश का एक हिस्सा है। बेशक, मसीह के समान बनने का विचार पूरी बाइबिल में सिखाया गया है और यह केवल पेंटेकोस्ट तक सीमित नहीं है। ध्यान दीजिए कि यूहन्ना ने क्या लिखा है:

²...हम उसके समान होंगे (¹ John^{3:2})।

क्योंकि यह एक पवित्र सभा है, इसलिए इसे साप्ताहिक सब्त के समान मनाया जाता है, लेकिन भेटों के साथ (Deuteronomy 16:16)। पुराने नियम में, प्रथम फल से संबंधित सप्ताहों का पर्व, फसल के बाद सब्त के 50 दिन बाद मनाया जाता था।

ईसा मसीह की मृत्यु के बाद, उस दिन प्रेरित एकत्रित हुए। और उस दिन पवित्र आत्मा उंडेली गई ताकि मसीहियों को परमेश्वर तक पहुँच प्राप्त हो सके, मानो वे प्रथम फल हों। यीशु इन प्रथम फलों में से प्रथम थे और इस युग में बुलाए गए मसीही भी उन्हीं की तरह प्रथम फल हैं (बाद में बुलाए गए लोग भी यीशु के समान हैं, लेकिन वे प्रथम फल नहीं होंगे)।

क्या पवित्र दिवस यरूशलेम के बाहर भी मनाए जा सकते हैं?

कुछ लोगों का मानना है कि बाइबिल में वर्णित पवित्र दिनों को अब नहीं मनाया जा सकता क्योंकि इसके लिए सभी को यरूशलेम जाना होगा।

लेकिन ऐतिहासिक रूप से ऐसा नहीं था, यहां तक कि यीशु के मामले में भी नहीं।

अपने सेवकाई के आरंभ में, नासरत में रहते हुए, यीशु ने “सब्त के दिन” (Luke 4:16) के बारे में बात की। पेंटेकोस्ट को सप्ताहों/सब्तों का पर्व भी कहा जाता है (Deuteronomy 16:10,16)। लूका का तात्पर्य बहुवचन से था, इसकी पुष्टि वास्तविक यूनानी शब्द को देखकर की जा सकती है। वास्तविक शब्द (न किस्ट्रॉन्ससमान शब्दों का समूह) सब्त के लिए, σαββάτω, बहुवचन है (σαββάτω, जैसा कि Luke 14:1 में है, एकवचन है)। इस अंश का शाब्दिक अनुवाद इस प्रकार है:

¹⁶और वह नासरत में आया, जहाँ उसका पालन-पोषण हुआ था। और अपनी आदत के अनुसार, वह सब्त के दिनों में आराधनालय में जाता और पढ़ने के लिए खड़ा होता। (Luke 4:16, ग्रीन)

अतः, इससे यह स्पष्ट होता है कि यीशु की तरह, कोई व्यक्ति यरूशलेम के अलावा किसी अन्य स्थान पर भी पवित्र दिवस मना सकता था। ऐसा प्रतीत होता है कि Luke 6:1-2 में वर्णित अनुसार, उन्होंने गलीलिया में भी संभवतः एक और पवित्र दिवस मनाया था (ग्रीन जेपी, सीनियर, इंटरलिनियर ग्रीक-इंग्लिश न्यू टेस्टामेंट, तीसरा संस्करण, बेकर बुक्स, 2002)।

शायद यह उल्लेख किया जाना चाहिए कि जब सामरी स्त्री ने संकेत दिया कि पूजा संभवतः यरूशलेम क्षेत्र तक ही सीमित होनी चाहिए (John 4:19), तो यीशु ने कहा कि यरूशलेम में पूजा पर कोई प्रतिबंध नहीं था:

²¹यीशु ने उससे कहा, “हे स्त्री, मेरा विश्वास करो, वह समय आ रहा है जब तुम न तो इस पर्वत पर और न ही यरूशलेम में पिता की उपासना कर

पाओगी।”²²तुम जिसकी पूजा करते हो उसे जानते नहीं; हम जिसकी पूजा करते हैं उसे जानते हैं, क्योंकि उद्धार यहूदियों से ही प्राप्त होता है।²³लेकिन वह समय आ रहा है, और अब आ चुका है, जब सच्चे उपासक पिता की आत्मा और सच्चाई से उपासना करेंगे; क्योंकि पिता ऐसे ही लोगों को खोज रहे हैं जो उनकी उपासना करें।²⁴परमेश्वर आत्मा है, और जो उसकी उपासना करते हैं उन्हें आत्मा और सच्चाई से उपासना करनी चाहिए। (John⁴:21-24)

नया नियम स्पष्ट रूप से दिखाता है कि पवित्र दिन या अन्य पूजा यरूशलेम तक ही सीमित नहीं है (Matthew10:23; 23:24 भी देखें)।

यह ध्यान देने योग्य है कि ग्रीको-रोमन चर्च भी मानते हैं कि पेंटेकोस्ट, जिसे पुराने नियम में कभी-कभी सप्ताहों का पर्व (Leviticus23:15-16) या प्रथम फल का दिन (Numbers28:26) कहा जाता है, का ईसाई महत्व था। और वे इसके पालन को किसी एक शहर तक सीमित नहीं रखते।

यह भी ध्यान रखें कि मसीहियों के प्रथम फल होने का विचार नए नियम में पुष्ट किया गया है (James1:18)। प्राचीन इस्राएल में, वसंत ऋतु में कम फसल होती थी और शरद ऋतु में अधिक फसल होती थी। वसंत ऋतु का पवित्र पर्व पेंटेकोस्ट, जब सही ढंग से समझा जाए, तो यह स्पष्ट करता है कि परमेश्वर अभी केवल कुछ लोगों को उद्धार के लिए बुला रहा है (John6:44; 1 Corinthians1:26; Romans11:15), और बाद में अधिक फसल होगी (John7:37-38)।

कई ग्रीको-रोमन चर्च पेंटेकोस्ट के किसी न किसी रूप का पालन करते हैं। फिर भी, आंशिक रूप से इसलिए कि वे बाइबल के कुछ अन्य पवित्र दिनों का पालन नहीं करते, वे यह समझने में विफल रहते हैं कि परमेश्वर केवल कुछ लोगों को ही अभी क्यों बुला रहा है, और यह कि उसके पास सभी को उद्धार प्रदान करने की योजना है (Luke3:6; Isaiah52:10)। दया न्याय पर विजय प्राप्त करती है” (James2:13)।

5. तुरही का पर्व: मसीह का आगमन और उससे पहले की घटनाएँ

अधिकांश ग्रीको-रोमन चर्च बाइबिल में वर्णित उन पवित्र दिनों को नहीं मनाते जो आमतौर पर शरद ऋतु में पड़ते हैं। फिर भी, ये पवित्र दिन ईश्वर की योजना में कई महत्वपूर्ण घटनाओं को दर्शाते हैं।

तुरही का पर्व न केवल मृतकों में से प्रथम फल को पुनर्जीवित करने के लिए मसीह के आगमन को दर्शाता है, बल्कि यह आने वाले विनाश के भयानक समय और जीवितों को पूर्ण विनाश से बचाने और पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य की स्थापना के लिए यीशु मसीह के हस्तक्षेप को भी दर्शाता है।

आइए समझते हैं कि यह त्योहार ईश्वर की महान योजना में किस प्रकार समाहित है।

ध्यान दें कि पेंटेकोस्ट दिवस और तुरही पर्व के बीच एक लंबा समय अंतराल है। चूंकि नए नियम की कलीसिया की शुरुआत पेंटेकोस्ट से हुई और मूलतः यीशु के अंतिम तुरही बजने पर वापसी के साथ समाप्त होती है (1 Corinthians 15:51-57), इसलिए एक अर्थ में पेंटेकोस्ट और तुरही पर्व के बीच की अवधि को कलीसिया युग का प्रतिनिधित्व करने वाला माना जा सकता है।

चौथा पवित्र दिवस, तुरही का पर्व, “सातवें महीने के पहले दिन” मनाया जाता है (Leviticus 23:23-25)।

ईश्वर की योजना में सात अंक पूर्णता और परिपूर्णता का प्रतीक है। ईश्वर के पंचांग का सातवाँ महीना (सितंबर और/या अक्टूबर में आता है) अंतिम चार त्योहारों का प्रतीक है, जो हमारे लिए ईश्वर की महान योजना की पूर्णता को दर्शाता है। इस महीने के पहले दिन पड़ने वाला त्योहार ईश्वर की योजना की अंतिम घटनाओं की शुरुआत का प्रतीक है।

यह नियमित कार्य से विश्राम का एक और वार्षिक सब्त है, और इसे तुरही बजाने की स्मृति के रूप में मनाया जाना था (Leviticus 23:24-25)। यह परमेश्वर के मार्ग सीखने का भी समय है (Nehemiah 8:2-3; Ezra 3:1-7 देखें)। इस्राएलियों के साथ जो कुछ हुआ, उसका अधिकांश भाग हमारे लिए उदाहरण के रूप में लिखा गया है, और यह हमारे लिए चेतावनी के रूप में लिखा गया है, जिन पर युगों का अंत आ गया है (1 Corinthians 10:11)।

तुरही बजाने की ध्वनि से ही तुरही पर्व का नाम पड़ा है।

इन तुरहियों को बजाने से गहरा प्रतीकात्मक अर्थ जुड़ा हुआ है, खासकर उस अंतिम समय के संदर्भ में जिसमें हम जी रहे हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि इस तिथि का आधुनिक यहूदी नाम, रोश हाशानाह, न तो बाइबिल में है और न ही यहूदियों का मूल नाम है। यह वह नाम है जिसे उन्होंने ईश्वर द्वारा उन्हें दिए जाने के सदियों बाद और पुराने नियम के लिखे जाने के बाद अपनाया था (क्रेमर, एमी जे. रोश हाशानाह की उत्पत्ति। कॉपीराइट © 1998-1999 एवरीथिंग ज्यूइश, इंक.)।

बाइबल सिखाती है कि तुरही परमेश्वर के पर्वों की घोषणा करने के साथ-साथ लोगों को इकट्ठा होने के लिए बुलाने के लिए बजाई जाती थी (Numbers10:1-3, 10)।

जीवन की पुस्तक

दिलचस्प बात यह है कि यहूदी विद्वानों ने तुरही पर्व को 'जीवन की पुस्तक' से जोड़ा है (पेल्टज़ एम, रब्बी। रोश हशानाह की शुभकामना में क्या है? हरेतज़, 17 सितंबर, 2012)। यह दिलचस्प क्यों है?

बाइबल सिखाती है कि जिनका नाम 'जीवन की पुस्तक' में लिखा है (Philippians4:3; Revelation3:5), उनका पुनरुत्थान होगा (Hebrews12:22-23)। कब? सातवें और अंतिम तुरही बजने पर।

⁵¹देखो, मैं तुम्हें एक रहस्य बताता हूँ: हम सब सोएंगे नहीं, बल्कि हम सब बदल जाएंगे।⁵²पल भर में, पलक झपकते ही, अंतिम तुरही बजने पर। क्योंकि तुरही बजेगी, और मरे हुए अविनाशी रूप में जी उठेंगे, और हम बदल जाएंगे।⁵³क्योंकि इस नाशवान शरीर को अविनाशी शरीर धारण करना होगा, और इस मरणशील शरीर को अमरता धारण करनी होगी। (1 Corinthians^{15:51-53})

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक स्पष्ट रूप से सिखाती है कि सात तुरही बजाई जाएंगी (8:2), जो परमेश्वर द्वारा संरक्षित नहीं हैं उन पर दंड आएगा (9:4), और फिर परमेश्वर का राज्य और न्याय आएगा (11:15-18)। अंत में यह सिखाती है कि जिनके नाम जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं, उन्हें दूसरी मृत्यु का सामना करना पड़ेगा (Revelation20:14-15)।

तुरही की आवाजें

इस बात पर विचार करें कि बाइबल दर्शाती है कि इज़राइल के इतिहास के दौरान, जो संघर्षों और विद्रोहों से भरा हुआ था, तुरहियों का उपयोग चेतावनी देने, हथियार उठाने का आह्वान करने या महत्वपूर्ण संदेशों की प्रस्तावना के रूप में किया जाता रहा - हमेशा पूरे राष्ट्र के लिए अत्यधिक महत्व की घटना को चिह्नित करने के लिए।

परमेश्वर ने यशायाह, यहजेकेल, होशे और योएल जैसे भविष्यवक्ताओं का भी उपयोग किया, ताकि वे इस्राएल को उनके द्वारा अपने नियमों के निरंतर विद्रोह के लिए दी जाने वाली सजाओं के बारे में चेतावनी दे सकें। इन भविष्यवक्ताओं को अपनी आवाज़ को तुरही की तरह बुलंद करके परमेश्वर के लोगों को अपनी चेतावनी सुनानी थी।

ज़ोर से पुकारो, संकोच न करो; तुरही की तरह अपनी आवाज़ बुलंद करो; मेरे लोगों को उनके अपराध बताओ, और याकूब के घराने को उनके पाप बताओ। (Isaiah^{58:1})

हम में Continuing Church of God आज यही करने के लिए प्रयासरत है। हम समाज के पापों के बारे में निडरता से बताते हैं और यह भी बताते हैं कि विश्व की घटनाएँ किस प्रकार सही ढंग से समझी गई भविष्यवाणी के अनुरूप हो रही हैं— जिसकी व्याख्या करने का भी हम प्रयासरत हैं।

लेकिन भविष्य में सचमुच तुरही की आवाज़ें भी सुनाई देंगी, जैसा कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक सिखाती है (Revelation 8:1-13, 9:1-18)। लेकिन अधिकांश लोग उन चेतावनियों पर ध्यान नहीं देंगे।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में कई तुरही बजाई जानी थीं, और तुरही पर्व पर बहुत सी तुरही बजाई जानी थीं (Leviticus 23:24) - उम्मीद है कि बहुत से लोग संबंध देख सकते हैं।

लेकिन सबसे महत्वपूर्ण तुरही, एक अर्थ में, अंतिम, सातवीं तुरही हो सकती है। प्रकाशितवाक्य इसके बारे में क्या सिखाता है, यहाँ बताया गया है:

¹⁵फिर सातवें स्वर्गदूत ने तुरही बजाई: और स्वर्ग में ऊँची आवाज़ें सुनाई दीं, जो कह रही थीं, "इस संसार के राज्य हमारे प्रभु और उनके मसीह के राज्य बन गए हैं, और वह सदा-सर्वदा राज्य करेंगे!"¹⁶और वे चौबीस प्राचीन जो परमेश्वर के सामने अपने सिंहासनों पर बैठे थे, अपने मुँह के बल गिर पड़े और परमेश्वर की आराधना की।¹⁷कहते हुए: "हे सर्वशक्तिमान प्रभु

परमेश्वर, जो हैं, जो थे और जो आने वाले हैं, हम आपको धन्यवाद देते हैं, क्योंकि आपने अपनी महान शक्ति धारण करके राज्य किया है।"18राष्ट्र क्रोधित थे, और तेरा क्रोध आ गया है, और मृतकों का समय आ गया है, जब उनका न्याय किया जाएगा, और तू अपने सेवकों, भविष्यवक्ताओं और संतों को, और तेरे नाम से डरने वालों को, छोटे-बड़े सभी को पुरस्कृत करेगा, और पृथ्वी को नष्ट करने वालों का नाश करेगा।19फिर स्वर्ग में परमेश्वर का मंदिर खोला गया, और उसकी वाचा का संदूक उसके मंदिर में दिखाई दिया। और वहाँ बिजली चमकी, शोर हुआ, गरज हुई, भूकंप आया और बड़े-बड़े ओले गिरे। (Revelation 11:15-19)

तुरही पर्व भविष्य में तुरहियों के बजने और इस वास्तविकता को दर्शाता है कि यीशु आएंगे और पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य की स्थापना करेंगे। परमेश्वर के आने वाले राज्य का सुसमाचार वह महत्वपूर्ण संदेश है जिसे यीशु चाहते हैं कि उनके सेवक अभी घोषित करें (Matthew 24:14; 28:19-20), और फिर अंत आएगा (Matthew 24:14)। तुरही पर्व इस संसार पर मसीह की विजय की ओर इशारा करता है।

ग्रीको-रोमन इतिहासकारों, जैसे जेरोम और एपिफेनियस (कैथोलिका ओमनिया टैबुलिनम डी एक्लेसिया पैट्रिबस डॉक्टोरिबसक्यू मटेरिया मिग्रे जेपी आर्गुमेंटम पैट्रोलोजिया लैटिना वॉल्यूम एमपीएल025 अब कोलुम्ना एड कुलुम्नाम 1415 - 1542ए, पृष्ठ 922, 930 और एपिफेनियस (एपिफेनियस। द पैनारियन ऑफ एपिफेनियस ऑफ सलामिस: बुक ॥ (सेक्ट्स 1-46) सेक्शन 1, चैप्टर 19, 7-9। फ्रैंक विलियम्स, संपादक। प्रकाशक ब्रिल, 1987, पृष्ठ 117-119), ने दर्ज किया कि 'नाज़रीन ईसाई' चौथी और पाँचवीं शताब्दी तक शरद ऋतु के पवित्र दिनों का पालन करते रहे। यरूशलेम में वफादार ईसाइयों द्वारा भी इनका पालन किया जाता था, जिन्होंने चौथी शताब्दी तक यरूशलेम में मूल ईसाई इमारत पर दावा किया था, जब तक कि उन्हें शाही अधिकारियों द्वारा रोक नहीं दिया गया (पिक्सनर बी. चर्च ऑफ द एपोस्टल्स फाउंड ऑन माउंट सियोन)। बाइबिल पुरातत्व समीक्षा, मई/जून 1990: 16-35,60)।

यहूदी-विरोधी जॉन क्रिसॉस्टम ने विशेष रूप से चौथी शताब्दी के उत्तरार्ध में लोगों को तुरही पर्व मनाने से रोकने का प्रयास किया (जॉन क्रिसॉस्टम. यहूदियों के विरुद्ध उपदेश I:5; VI:5; VII:2)। हालाँकि, आस्थावान बने रहने का प्रयास करने वाले लोग इतिहास भर ऐसा करते रहे। Continuing Church of God अब ऐसा करता है।

6. प्रायश्चित का दिन: शैतान का निष्कासन

शरद ऋतु का अगला पवित्र दिवस प्रायश्चित दिवस है:

²⁶और यहोवा ने मूसा से कहा:²⁷"इस सातवें महीने का दसवां दिन प्रायश्चित का दिन होगा। यह तुम्हारे लिए एक पवित्र सभा होगी; तुम अपने मन को दुखी करोगे और प्रभु को अग्नि द्वारा अर्पित भेंट चढ़ाओगे।"²⁸और उस दिन तुम कोई काम मत करना, क्योंकि वह प्रायश्चित का दिन है, ताकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के सामने तुम्हारे पापों का प्रायश्चित हो सके।²⁹जो व्यक्ति उस दिन मन से दुखी नहीं होगा, उसे अपने लोगों से अलग कर दिया जाएगा।³⁰और जो कोई भी उस दिन कोई काम करेगा, उसे मैं उसके लोगों में से नष्ट कर दूंगा।³¹तुम किसी भी प्रकार का काम नहीं करोगे; यह तुम्हारे सभी घरों में तुम्हारी पीढ़ियों के लिए हमेशा के लिए एक नियम रहेगा।³²यह तुम्हारे लिए गंभीर विश्राम का सब्ब होगा, और तुम अपने मन को दुखी करोगे; महीने के नौवें दिन शाम को, शाम से शाम तक, तुम अपना सब्ब मनाओगे।" (Leviticus^{23,26,32})।

⁷"इस सातवें महीने के दसवें दिन तुम पवित्र सभा करोगे। तुम अपने मन को दुखी करोगे; तुम कोई काम नहीं करोगे। (Numbers^{29:7})"

ऐतिहासिक रूप से, उपवास का अर्थ मुख्य रूप से "अपनी आत्माओं को कष्ट दो" वाक्यांश से लिया गया है, जिसे यहूदी और चर्च ऑफ गॉड समुदायों द्वारा समझा जाता है (यह Psalm35:13; 69:10 और Isaiah58:5 जैसे अंशों से भी प्रमाणित होता है), जब तक कि कोई व्यक्ति किसी प्रकार से बीमार न हो, और इस प्रकार पहले से ही कष्ट में न हो। शाम से शाम का अर्थ है सूर्यास्त से सूर्यास्त तक।

नए नियम में प्रायश्चित के दिन को "उपवास" कहा गया है (Acts27:9), जो न केवल यह दर्शाता है कि प्रेरित पौलुस इसे रख रहा था (जो Acts21:18-24; 28:17 में दिए गए कथनों के अनुसार वह रख रहा होगा), बल्कि यह भी कि यूनानी नाम वाला थियोफिलस (वह ईसाई जिसे Acts1:1 में संबोधित किया गया था) भी इसे रख रहा होगा, अन्यथा किसी अन्य शब्द का प्रयोग किया जाता।

चर्च ऑफ गॉड से जुड़े धर्मनिष्ठ व्यक्ति आज रात सूर्यास्त से लेकर कल रात सूर्यास्त तक उपवास रखेंगे (यदि वे शारीरिक रूप से सक्षम हों - स्तनपान कराने वाली माताओं, छोटे बच्चों, गर्भवती महिलाओं और अन्य बीमार व्यक्तियों से उपवास

करने की अपेक्षा नहीं की जाती है - यह इस क्षेत्र में यहूदी प्रथाओं के अनुरूप है। इस उपवास में हम भोजन और पेय का सेवन नहीं करते हैं।

विचित्र रूप से, एक प्रोटेस्टेंट रिपोर्ट का दावा है कि ईसाइयों को प्रायश्चित दिवस मनाने की आवश्यकता इसलिए नहीं है क्योंकि आज कोई यहूदी मंदिर नहीं है (कोचेरेल बी.एल. क्या मसीह के अनुयायियों को प्रायश्चित दिवस पर उपवास करना चाहिए?)। जबकि बाइबिल की वास्तविकता यह है कि इस्राएल के लोग मंदिर बनने से सदियों पहले प्रायश्चित दिवस मनाते थे और दूसरी वास्तविकता यह है कि नया नियम दर्शाता है कि ईसाई अब परमेश्वर का मंदिर हैं (1 Corinthians 3:16-17)।

दो बकरियाँ

पुराने नियम में, प्रायश्चित दिवस के उपलक्ष्य में एक समारोह होता था जिसमें अज़ाज़ेल नामक बकरे को जंगल में भेजा जाता था (Leviticus 16:1-10)। कुछ ईसाई अज़ाज़ेल बकरे को भेजे जाने को उस समय का प्रतीक मानते थे जब शैतान को हजार वर्षों के लिए अथाह गड्ढे में बांध दिया जाएगा (Revelation 20:1-4)। इसका अर्थ यह है कि उस दौरान वह प्रलोभन और छल नहीं कर पाएगा। यीशु के बलिदान के कारण, इस दिन बकरे की बलि नहीं दी जाती (Hebrews 10:1-10 देखें)।

हालाँकि यीशु हमारे लिए बलिदान किया गया हमारा फसह का मेमना था (1 Corinthians 5:7-8) और उसे केवल एक बार मारा गया था (Hebrews 9:28), हम फसह के अलावा एक और समय भी देखते हैं जहाँ यीशु को औपचारिक रूप से मारा जाता है।

क्यों?

कई लोगों ने अटकलें लगाई हैं, लेकिन इस तथ्य के साथ-साथ कुछ सुराग भी हो सकते हैं कि यह बलिदान दूसरी बकरी को छोड़ने से पहले होता है।

मूल फसह पर्व में केवल इस्राएलियों को उनके पापों के लिए क्षमा कर दिया गया था। इस युग में, सच्चे ईसाई यीशु के अंतिम सांसारिक फसह पर्व पर किए गए बलिदान को अपने पापों का दंड चुकाने का श्रेय देते हैं। परन्तु सच्चे ईसाई विश्व की जनसंख्या का एक छोटा सा अल्पसंख्यक वर्ग हैं (Luke 12:32; Romans 11:5)।

बाइबल शैतान को “इस युग का देवता” कहती है जिसने संसार को “अंधा” कर दिया है (2 Corinthians 4:4)। इसलिए, अधिकांश लोग अंधे हो चुके हैं और यीशु के बलिदान से अभी तक अछूते नहीं रहे हैं। फिर भी, यह लगभग उन सभी के साथ

होगा जिन्हें बुलाया जाएगा—चाहे इस युग में या आने वाले युग में (Matthew 12:32)। कलीसिया युग के समाप्त होने के बाद विधिपूर्वक बलिदान को दर्शाना यह साबित करने में सहायक होता है कि यीशु का बलिदान केवल कलीसिया युग में बुलाए गए लोगों के लिए नहीं था, क्योंकि परमेश्वर की योजना में सभी को उद्धार प्रदान करना शामिल है, न कि केवल आज के चुने हुए लोगों को।

दूसरे बकरे को छोड़े जाने से पहले बलिदान को दिखाकर, यह प्रदर्शित किया जाता है कि यीशु शैतान के पापों को दूर नहीं कर रहे थे।

यीशु ने समस्त मनुष्यों का दंड अपने ऊपर ले लिया। परन्तु यह मनुष्यों पर तब तक लागू नहीं होता जब तक परमेश्वर हमें बुलाकर पश्चाताप का अवसर न दे (John 6:44), और हम पश्चाताप करने को तैयार न हो जाएँ और विश्वास न करने लगें। केवल यीशु में ही नहीं, बल्कि पुत्र और पिता में भी विश्वास करें, अर्थात् उनके वचनों में विश्वास करें। इसके अतिरिक्त, हम पश्चाताप करके, बपतिस्मा लेकर, पवित्र आत्मा प्राप्त करके (Acts 2:38) और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीवन जीने का प्रयास करके इसे सिद्ध करते हैं (देखें 1 John 2:6)।

इतिहास भर संरक्षित

प्रायश्चित दिवस चौथी शताब्दी में मनाया जाता था, जैसा कि जॉन क्रिसॉस्टम के अनुसार है, जिन्होंने इसके खिलाफ प्रचार किया (जॉन क्रिसॉस्टम। यहूदियों के खिलाफ उपदेश I:5; VI:5; VII:2)।

यह सीरियाई संस्करण के कैनन 69/70 में भी देखा जा सकता है। *प्रेरितिक कैनन* लगभग इसी समय जिसने इसे प्रतिबंधित करने का प्रयास किया (सीवर जे.ई. रोमन साम्राज्य में यहूदियों का उत्पीड़न (300-438), कंसास विश्वविद्यालय प्रकाशन का अंक 30: मानविकी अध्ययन। कंसास विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1952, पृ. 34-35)।

पांचवीं से दसवीं शताब्दी के एक मुस्लिम दस्तावेज़ में कहा गया है कि यीशु और उनके शिष्यों ने यहूदियों के समान ही उपवास रखा था। इससे संकेत मिलता है कि यहूदी-ईसाई अभी भी प्रायश्चित दिवस मना रहे थे, जबकि ग्रीको-रोमन लोगों ने 50 दिनों का लेंट पर्व शुरू किया था।

उपवास की अवधि जिसका पालन यीशु ने नहीं किया (टॉमसन पी. लैम्बर्स-पेट्री एल. प्राचीन यहूदी और ईसाई साहित्य में यहूदी-ईसाइयों की छवि, खंड 158, 2003, पृ.

70-72; स्टर्न एस.एम. 'अब्द अल-जब्बार में अपोकलिफ़ल सुसमाचारों से उद्धरण। जर्नल ऑफ़ थियोलॉजिकल स्टडीज़, एनएस. खंड XVIII, (1) अप्रैल 1967: 34-57)। अन्य इतिहासकारों की रिपोर्टें इस दृष्टिकोण का समर्थन करती हैं (जैसे पाइंस, पृष्ठ 32-34)। इसके अलावा, हमें ऐतिहासिक रिपोर्टों से पता चलता है कि इसे 16वीं शताब्दी में भी ट्रांसिल्वेनिया में ही रखा गया था। (लीच्ची, पृ. 61-62)।

पुराने रेडियो चर्च ऑफ गॉड ने 20वीं शताब्दी के दौरान प्रायश्चित दिवस (और अन्य पवित्र दिनों) का पालन किया। हम Continuing Church of God आज भी इसका पालन करता है।

7. तम्बू पर्व: मसीह के शासनकाल में दुनिया कैसी दिखती थी, इसकी एक झलक

तम्बू पर्व परमेश्वर की योजना की एक चरम घटना का प्रतीक है। यीशु ने हमारे पापों के लिए अपनी जान देकर मानवजाति का उद्धार किया, पवित्र आत्मा को हमारे पास भेजा और अपने नाम के लिए एक विशेष प्रजा को चुना जो राजा और याजक बनकर पृथ्वी पर उनके साथ राज्य करेंगे (Revelation 5:10)। उनके दूसरे आगमन के बाद, उन्होंने अंततः सारे पापों का भार शैतान के सिर पर डाल दिया, जिससे शैतान और उसके पाप दोनों परमेश्वर और उसकी प्रजा से अलग हो गए (जिससे हम अंततः उनके साथ एक हो गए, प्रायश्चित्त हुआ)। तब हम घटनाओं की उस अंतिम श्रृंखला के लिए तैयार होते हैं, जो पृथ्वी पर परमेश्वर के सहस्राब्दी राज्य की स्थापना का आरंभ है।

तम्बू पर्व यीशु मसीह के हजार वर्षों के शासनकाल में होने वाली आध्यात्मिक और भौतिक समृद्धि का चित्रण करता है, जब लोग शैतान के छल से मुक्त होकर परमेश्वर के नियमों का पालन करेंगे (Revelation 20:1-6)। यह उस स्थिति के विपरीत है जो आज शैतान द्वारा धोखे में डाली गई दुनिया में हो रही है (Revelation 12:9)। शैतानी छल, जो तब समाप्त हो जाएगा (Revelation 20:1-3), इस बात का एक कारण है कि क्यों अधिकांश ईसाई धर्म का दावा करने वाले लोग 'अच्छे' झूठे सेवकों द्वारा गुमराह किए गए हैं, और इसी कारण कई सेवक स्वयं भी गुमराह हुए हैं (2 Corinthians 11:14-15)।

स्वयं यीशु ने तम्बू पर्व मनाया और John 7:10-26 के अनुसार इसकी शिक्षा भी दी।

हिब्रू धर्मग्रंथों से इसके बारे में कुछ निर्देश यहाँ दिए गए हैं:

³³तब यहोवा ने मूसा से कहा, ³⁴इस्राएलियों से कहो: “इस सातवें महीने का पंद्रहवाँ दिन यहोवा के लिए सात दिनों तक तम्बू पर्व के रूप में मनाया जाएगा।”³⁵पहले दिन एक पवित्र सभा होगी। उस दिन आप कोई भी सामान्य कार्य न करें।

⁴¹तुम इसे साल में सात दिन तक यहोवा के लिए पर्व के रूप में मनाओगे। यह तुम्हारी पीढ़ियों के लिए सदा के लिए नियम रहेगा। तुम इसे सातवें महीने में मनाओगे।⁴²तुम सात दिन तक तम्बूओं में रहोगे। सभी मूल इस्राएली तम्बूओं में रहेंगे। (Leviticus ^{23:33-35}, ⁴¹⁻⁴²)

¹³"तुम तम्बू पर्व सात दिन तक मनाओगे,..."¹⁴और तुम सब अपने पर्व में आनन्द मनाओगे, तुम, तुम्हारा बेटा, तुम्हारी बेटी, तुम्हारा नौकर, तुम्हारी दासी, लेवी, परदेशी, अनाथ और विधवा, जो तुम्हारे फाटकों के भीतर हैं।¹⁵तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लिए उस स्थान पर सात दिन तक पवित्र पर्व मनाओगे जिसे यहोवा चुनेगा, क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारी सारी उपज और तुम्हारे हाथों के सारे काम में तुम्हें आशीष देगा, जिससे तुम निश्चय ही आनन्दित होगे।

¹⁶"साल में तीन बार तुम्हारे सभी पुरुष तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के सामने उस स्थान पर उपस्थित होंगे जिसे वह चुनेगा: अखमीरी रोटी के पर्व पर, सप्ताहों के पर्व पर और तम्बू पर्व पर; और वे यहोवा के सामने खाली हाथ उपस्थित नहीं होंगे।"¹⁷हर व्यक्ति अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान करे, उस आशीष के अनुरूप जो यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें दी है। (Deuteronomy^{16:13-17})

परमेश्वर ने प्राचीन इस्राएल को दशकों तक जंगल में बने तंबूओं (हिब्रू में 'सुक्कोस') में रहने के लिए कहा, इससे पहले कि वे प्रतिज्ञा किए गए देश में प्रवेश करें। एक तरह से, वे तंबू इस बात का प्रतीक थे कि वे प्रतिज्ञा किए गए देश के एकमात्र उत्तराधिकारी हैं। यहाँ तक कि सहस्राब्दी काल में भी, जब परमेश्वर का राज्य नश्वर राष्ट्रों पर शासन करेगा, तब भी नश्वर लोग ही राज्य के एकमात्र उत्तराधिकारी होंगे। प्रतिज्ञाओं को प्राप्त करने के लिए उन्हें विजय प्राप्त करनी होगी और ज्ञान और बुद्धि में वृद्धि करनी होगी।

परमेश्वर इफ्राईम के बारे में कहते हैं (शास्त्रों में कभी-कभी इसे समस्त इस्राएल का प्रतीक बताया जाता है) कि वे "पर्व के दिनों की तरह तम्बूओं में निवास करेंगे" (Hosea12:9, डुआय-रीम्स)। जंगल में इस्राएल उन सभी लोगों का प्रतीक था जिन्हें परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को प्राप्त करने के लिए परीक्षाओं और कष्टों से गुजरना पड़ता है (1 Corinthians10:11)। वे परदेसी थे, परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को प्राप्त करने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

हम मसीहियों को यह समझना चाहिए कि इस युग में हमारा कोई स्थायी शहर नहीं है और हमें आने वाले युग की ओर देखना चाहिए (Hebrews13:14)। तम्बू पर्व के दौरान अस्थायी आवासों में रहना हमें इस बात की याद दिलाता है। मसीहियों को तम्बू पर्व के प्रत्येक दिन, यदि संभव हो, तो चर्च की सेवाओं में भाग लेना चाहिए ताकि वे जीवित बलिदान बनना सीख सकें (Deuteronomy31:10-13; Nehemiah8:17-18), जो हमारी "उचित सेवा" है (Romans12:1)।

तंबू पर्व का समय है आनंद (Deuteronomy 14:26; 16:15)। संबंधित दशांश (जिसे आम तौर पर “दूसरा दशांश” कहा जाता है) का उपयोग दर्शाता है कि यह प्रचुरता का समय होगा (Deuteronomy 14:22-26), और साथ ही यह भी कि इस युग में सेवकाई का ध्यान रखा जाना चाहिए (Deuteronomy 14:27)। तंबू पर्व सहस्राब्दी की प्रचुरता के समय को चित्रित करने में सहायक होता है। यह हमें यीशु के लौटने के बाद के समय की एक झलक देता है।

सहस्राब्दी परमेश्वर की 7,000 वर्ष की योजना का सातवाँ दिन है। दिलचस्प बात यह है कि हर सात साल में तंबू पर्व के अवसर पर व्यवस्था की पुस्तक पढ़ने का आदेश दिया गया था (Deuteronomy 31:10-13)। इससे यह स्पष्ट होता है कि सहस्राब्दी में भी व्यवस्था, जिसमें दस आज्ञाएँ भी शामिल हैं, का पालन किया जाएगा, क्योंकि बाइबल के अनुसार उस समय व्यवस्था सिखाई जाएगी (Isaiah 2:2-3; आज्ञाओं के बारे में अधिक जानकारी हमारी निःशुल्क ऑनलाइन पुस्तिका The Ten Commandments में उपलब्ध है)। परमेश्वर के नियमों के अनुसार जीवन जीना ही सहस्राब्दी के दौरान आशीर्वाद और समृद्धि लाएगा।

हम ईसाई अब आने वाले सहस्राब्दी और अंतिम तुरही (1 Corinthians 15:52) पर होने वाले परिवर्तन की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जिसे पहला पुनरुत्थान भी कहा जाता है:

⁴और मैंने सिंहासन देखे, और वे उन पर बैठे, और न्याय करने का अधिकार उन्हें सौंपा गया। फिर मैंने उन लोगों की आत्माओं को देखा, जिनके सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण काट दिए गए थे, जिन्होंने न तो उस पशु की पूजा की थी और न ही उसकी मूर्ति की, और न ही अपने माथे या हाथों पर उसका चिह्न लिया था। और वे जीवित रहे और मसीह के साथ हजार वर्ष तक राज्य किया। (Revelation^{20:4})

बाइबल दर्शाती है कि यीशु द्वारा कलीसिया को अपने पास एकत्रित करने और अपने सिंहासन पर विराजमान होने के बाद, जहाँ हम उनके साथ शासन करेंगे, वह राष्ट्रों को अपने सामने एकत्रित करेंगे और मसीहियों से कहेंगे:

³⁴हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ और राज्य के उत्तराधिकारी बनो।

जगत की नींव से ही तुम्हारे लिए तैयार किया गया है: (Matthew 25:34)।

अब, जो लोग तंबू पर्व मनाते हैं, वे इसकी प्रतीक्षा करते हैं क्योंकि यह सहस्राब्दी राज्य की कल्पना करने में मदद करता है।

दूसरी शताब्दी के आरंभ में, हिरापोलिस के पापियास ने कहा:

मृतकों के पुनरुत्थान के बाद लगभग एक हजार वर्षों की अवधि होगी, और उस दौरान मसीह का राज्य इसी पृथ्वी पर भौतिक रूप में स्थापित होगा।

तम्बू पर्व का पालन परमेश्वर के आने वाले सहस्राब्दी राज्य की एक छाया है जिसे वफादार ईसाई नए नियम के समय से ही निभाते आ रहे हैं।

इसे कहाँ रखा जा सकता है?

तम्बू पर्व मूलतः एक 'तीर्थयात्रा' (Psalm 84:1-5) का समय है, जिसका अर्थ है कि इसमें आमतौर पर व्यक्ति अपने सामान्य समुदाय से बाहर यात्रा करता है। जब यीशु यहाँ थे, तब वे मनुष्यों के साथ 'तंबू में रहे' (जैसा कि John 1:14 में ग्रीक शब्द ἐοικήσαντες का अनुवाद ग्रीन जेपी. इंटरलिनियर ग्रीक-इंग्लिश न्यू टेस्टामेंट. बेकर बुक्स, 1996, 5वां संस्करण 2002, पृष्ठ 282 के अनुसार किया जा सकता है)।

कुछ लोग यह गलत दावा करते हैं कि तम्बू पर्व अतीत से लेकर वर्तमान तक केवल यरूशलेम में ही मनाया जाना चाहिए, लेकिन यह गलत है। Leviticus 23 में इसके पालन के आदेश लिखे जाने के बाद सदियों तक इस्राएली यरूशलेम में रहे ही नहीं थे—इसलिए यरूशलेम उनके लिए प्रारंभिक विकल्प नहीं था। बाइबल दर्शाती है कि तम्बू पर्व यरूशलेम के अलावा अन्य शहरों में भी मनाया जा सकता है (Nehemiah 8:15; Deuteronomy 14:23-24 देखें)। दूसरे मंदिर काल (530 ईसा पूर्व – 70 ईस्वी) के दौरान, यहूदी अक्सर इसे अन्य स्थानों पर मनाते थे (हैयिम शॉसे ने लिखा, "सुक्कोस यरूशलेम के बाहर भी एक बड़ा त्योहार था।" शॉसे एच. यहूदी त्योहार: उनके इतिहास और पालन के लिए एक मार्गदर्शिका, 1938. शेकेन, पृष्ठ 184)।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि दूसरी शताब्दी में स्मरना के पॉलीकार्प (पॉलीकार्प का जीवन, अध्याय 19) और चौथी शताब्दी के उत्तरार्ध में एशिया माइनर के कुछ अन्य लोगों ने तम्बू पर्व यरूशलेम में नहीं बल्कि एशिया माइनर में मनाया। इसकी पुष्टि कैथोलिक संत जेरोम (Patrologia Latina Volumen MPL025 Ab Columna ad Culumnam 1415 - 1542A) जैसे स्रोतों से, और 20वीं शताब्दी के कार्डिनल जीन डैनियलौ द्वारा किए गए शोध (डैनियलौ, कार्डिनल जीन-गुएनोल-मैरी। यहूदी ईसाई धर्म का धर्मशास्त्र। जॉन ए. बेकर द्वारा अनुवादित। द वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1964, पृ. 343-346) से होती है।

उन्नीसवीं शताब्दी के एक सहस्राब्दी-विरोधी विद्वान, जियोवानी बतिस्ता पगानी ने तीसरी शताब्दी के मिस्र के बिशप नेपोस और सहस्राब्दी का समर्थन करने वालों के बारे में निम्नलिखित लिखा:

...वे सभी जो यहूदी विचारों के अनुसार गढ़े गए सहस्राब्दी काल का उपदेश देते हैं, यह कहते हुए कि इस सहस्राब्दी काल के दौरान मूसा की व्यवस्था बहाल की जाएगी... इन्हें यहूदी सहस्राब्दीवादी कहा जाता है, इसलिए नहीं कि वे यहूदी हैं, बल्कि इसलिए कि उन्होंने एक सहस्राब्दी काल का आविष्कार किया और उसका समर्थन किया... इस त्रुटि के प्रमुख लेखक नेपोस थे, जो एक अफ्रीकी बिशप थे, जिनके विरुद्ध संत डायोनिशियस ने प्रतिज्ञाओं पर अपनी दो पुस्तकें लिखीं; और अपोलिनारिस, जिन्हें संत एपिफेनियस ने विधर्मियों के विरुद्ध अपने कार्य में भ्रामक बताया। (पगानी, जियोवानी बतिस्ता। चार्ल्स डोलमैन द्वारा प्रकाशित, 1855, पृष्ठ 252-253)

यह ध्यान देने योग्य है कि बिशप नेपोस और अपोलिनारिस दोनों ही यहूदी नहीं थे, फिर भी उन्हें यहूदी मान्यताओं वाले धर्म को मानने के कारण निंदा का सामना करना पड़ा। और चूंकि अपोलिनारिस को कैथोलिक संत कहा जाता है, इससे स्पष्ट होता है कि तीसरी शताब्दी के आरंभ में सम्मानित गैर-यहूदी ईसाई नेताओं ने भी उन विचारों को अपनाया था जिनकी रूपकवादियों ने निंदा की थी। उनका "मूसा की व्यवस्था" का पालन करना इस बात का प्रमाण है कि वे दोनों ही तंबू पर्व का अर्थ समझते थे और उसे मनाते थे, लेकिन ईसाई दृष्टिकोण के साथ।

तीसरी शताब्दी के उत्तरार्ध या चौथी शताब्दी के आरंभ में ओलंपस के ग्रीको-रोमन बिशप और संत मेथोडियस ने यह सिखाया कि तंबू पर्व मनाना अनिवार्य था और इसमें ईसाइयों के लिए सबक थे।

क्योंकि परमेश्वर ने छह दिनों में आकाश और पृथ्वी को बनाया, और समस्त संसार का निर्माण पूरा किया, और सातवें दिन अपने समस्त कार्यों से विश्राम किया, और सातवें दिन को आशीष देकर पवित्र ठहराया। इसी प्रकार, सातवें महीने में, जब पृथ्वी की फसलें एकत्र हो जाती हैं, तो हमें प्रभु के लिए पर्व मनाने की आज्ञा दी गई है। ...यह आज्ञा दी गई है कि हमारे तंबूओं का पर्व प्रभु के लिए मनाया जाए... क्योंकि जैसे इस्राएली मिस्र की सीमाओं को छोड़कर पहले तंबूओं में आए, और वहाँ से फिर से निकलकर प्रतिज्ञा की भूमि में आए, वैसे ही हम भी करते हैं। क्योंकि मैं भी, अपनी

यात्रा पर निकलकर, इस जीवन के मिस्र से निकलकर, पहले पुनरुत्थान में आया, जो तंबूओं का सच्चा पर्व है, और वहाँ पुनरुत्थान के प्रथम दिन, जो न्याय का दिन है, सद्गुणों के फलों से सुशोभित अपना तंबू स्थापित करके, मसीह के साथ विश्राम के सहस्राब्दी पर्व को मनाता हूँ, जिसे सातवाँ दिन, अर्थात् सच्चा सप्ताह कहा जाता है। (मेथोडियस. दस कुंवारी कन्याओं का भोज, प्रवचन 9)

कैथोलिक पादरी और विद्वान जेरोम ने कहा कि नाज़रीन ईसाई इस पर्व को मनाते थे और उनका मानना था कि यह यीशु मसीह के सहस्राब्दी शासनकाल की ओर इशारा करता है (Patrologia Latina Volumen MPL025 Ab Columna ad Culumnam 1415 - 1542A)। चौथी शताब्दी के उत्तरार्ध में नाज़रीन ईसाइयों द्वारा तंबू पर्व मनाने की इस प्रथा की पुष्टि कैथोलिक और पूर्वी रूढ़िवादी संत एपिफेनियस ऑफ सलामिस ने भी की थी।

ईसाई धर्म में इस्राएलियों से अंतर

मुख्य रूप से नए नियम के धर्मग्रंथों पर आधारित, ईसाई लोग तंबू पर्व को इस्राएलियों की तुलना में थोड़ा अलग तरीके से मनाते हैं।

अभिलेखों से पता चलता है कि मध्य युग के दौरान यूरोप में तंबू पर्व मनाया जाता था (एंबेसडर कॉलेज पत्राचार पाठ्यक्रम, पाठ 51. "और वह स्त्री जंगल में भाग गई, जहाँ उसका एक स्थान है ..." Revelation 12:6. 1968) और विशेष रूप से 1500 के दशक में ट्रांसिल्वेनिया में (लीच्ची, पृष्ठ 61-62), उन स्थानों पर जहाँ ताड़ की शाखाएँ नहीं थीं। कुछ प्रमाण यह भी बताते हैं कि यह पर्व 1600 और 1700 के दशक में अमेरिका में मनाया जाता था। 20वीं शताब्दी में पुराने रेडियो चर्च ऑफ गॉड और वर्ल्डवाइड चर्च ऑफ गॉड द्वारा इसे दुनिया भर में मनाया जाता था।

हम में Continuing Church of God दुनिया भर में कई जगहों पर इसे मनाना जारी रखता है और हम यह भी सिखाते हैं कि तम्बू पर्व परमेश्वर के राज्य में यीशु मसीह के सहस्राब्दी शासन की ओर इशारा करता है।

आधुनिक ईसाई अक्सर तंबू पर्व को अस्थायी आवास के रूप में इस्तेमाल करते हैं, न कि केवल खजूर की झोपड़ियों में, जैसा कि इस्राएली आमतौर पर करते थे। इस दौरान वे तंबू या होटल/मोटल के कमरों में रहते हैं। नया नियम दर्शाता है कि ईसाइयों का एक अलग तरह का तंबू है (Hebrews 8:2; 9:11-15 देखें), जो इस बात से मेल खाता है कि उन्हें स्वयं खजूर की झोपड़ी बनाने की आवश्यकता नहीं होती।

बाइबल दर्शाती है कि Exodus 33:8 के अनुसार इस्राएल के लोग चालीस वर्षों तक जंगल में रहे और इस दौरान वे मुख्य रूप से तंबूओं में (और Deuteronomy 4:45-49 के अनुसार कभी-कभी अन्य अस्थायी घरों में भी) रहे। Leviticus 23:43 के अनुसार परमेश्वर ने उन्हें भी "तंबू" माना। आज के समय में तंबूओं या होटल के कमरों में रहना भी इसी प्रकार का एक अस्थायी आवास है।

बाइबल बताती है कि मसीहियों को पशु बलि/भेंट चढ़ाने की आवश्यकता नहीं है (Hebrews 9:9), जैसे कि इस्राएल के लोग तम्बू पर्व के दौरान होमबलि चढ़ाते थे (Leviticus 23:36-37)। इसके बजाय, हमें स्वयं को जीवित बलिदान के रूप में अर्पित करना है, जो हमारी उचित सेवा है (Romans 12:1)—जिसमें सामान्यतः तम्बू पर्व के दौरान नियमित रूप से चर्च की सेवाओं में भाग लेना शामिल है।

कुछ लोगों को आश्चर्य हो सकता है कि तम्बू पर्व के सभी दिनों में प्रार्थना सभा में उपस्थित होना अनिवार्य क्यों है, जबकि अखमीरी रोटी के दिनों में ऐसा करना आवश्यक नहीं है। इसका मूल कारण बाइबल में यह है कि आज्ञा कहती है, "तुम तम्बू पर्व सात दिन तक मनाओगे... सात दिन तक तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लिए उस स्थान में पवित्र पर्व मनाओगे जिसे यहोवा चुनेगा" (Deuteronomy 16:13,15), लेकिन अखमीरी रोटी के दिनों के संदर्भ में ऐसा नहीं कहा गया है—Leviticus 23:6 और Deuteronomy 16:3 में आज्ञा दी गई है कि सात दिन तक अखमीरी रोटी खाओ, न कि सात दिन तक पर्व मनाओ (हम प्रत्येक दिन अखमीरी रोटी खाकर सात दिनों की अखमीरी रोटी का 'बलिदान' करते हैं)। बाइबल तम्बू पर्व के दौरान अस्थायी आवासों में रहने के लिए भी कहती है (Leviticus 23:42), लेकिन अन्य पवित्र दिनों के संदर्भ में ऐसा नहीं कहती।

क्योंकि शैतान को सहस्राब्दी शासन के लिए बांध दिया जाएगा (Revelation 20:1-2), इसलिए उस समय छल-कपट कम होगा। तम्बू पर्व के समय के लिए एकांतवास करना और प्रतिदिन मिलना उस समय की कल्पना करने में सहायक होता है जब संसार आज की तुलना में काफी भिन्न होगा।

“तेरा राज्य आए!” (Matthew 6:10)।

बाइबल सिखाती है कि तंबू पर्व सहस्राब्दी में मनाया जाएगा और परमेश्वर अंततः हमारे साथ 'तंबू में निवास' करेगा।

बाइबल की भविष्यवाणी से पता चलता है कि तंबू पर्व सहस्राब्दी में मनाया जाएगा:

¹⁶और ऐसा होगा कि यरूशलेम के विरुद्ध आने वाले सभी राष्ट्रों में से जो कोई भी बच जाएगा, वह वर्ष-दर-वर्ष राजा, सेनाओं के प्रभु यहोवा की उपासना करने और तम्बू पर्व मनाने के लिए ऊपर जाएगा।¹⁷ और ऐसा होगा कि पृथ्वी के जिन परिवारों में से कोई भी राजा, सेनाओं के प्रभु यहोवा की उपासना करने के लिए यरूशलेम नहीं आएगा, उन पर वर्षा नहीं होगी।¹⁸ यदि मिस्र के लोग ऊपर आकर प्रवेश नहीं करेंगे, तो उन्हें वर्षा नहीं मिलेगी; उन्हें उस विपत्ति का सामना करना पड़ेगा जिससे यहोवा उन राष्ट्रों को दंडित करता है जो तम्बू पर्व मनाने के लिए ऊपर नहीं आते।¹⁹ यह मिस्र का दंड होगा और उन सभी राष्ट्रों का दंड होगा जो तम्बू पर्व मनाने के लिए नहीं आते (Zechariah^{14:16-19})।

इसलिए बाइबल सिखाती है कि भविष्य में परमेश्वर सभी से तम्बू पर्व मनाने की अपेक्षा करेगा। यहाँ तक कि कैथोलिक टीकाकार भी मानते हैं कि परमेश्वर की योजना में तम्बू पर्व शामिल है। Zechariah 14 के अंशों पर एक कैथोलिक टीका कहती है:

इस बीच, जो लोग पहले चर्च पर अत्याचार करते थे, वे परिवर्तित हो जाएँगे, और बड़ी श्रद्धा से पर्व मनाएँगे और ईश्वर के सम्मान में धार्मिक अनुष्ठान करेंगे; और उन्हें महान पुरस्कार प्राप्त होंगे। (द ओरिजिनल एंड टू डु आय ओल्ड टेस्टामेंट ऑफ एनो डोमिनी 1610 वॉल्यूम 2, पृष्ठ 824)

परमेश्वर का राज्य इस संसार के सभी राज्यों की जगह लेगा (Revelation 11:15), और यह त्योहार ईसाई तीर्थयात्रियों (1 Peter 2:1-12) को उनकी सामान्य दिनचर्या से अलग करके (तुलना करें Revelation 18:4; 1 John 2:18-19) इसे चित्रित करने में मदद करता है।

तम्बू पर्व मनाने से हमें इस युग में भविष्य के सहस्राब्दी राज्य की झलक मिलती है। बाइबल यह भी दर्शाती है कि बाद में, “परमेश्वर का तम्बू” पृथ्वी पर होगा “और वह हमारे साथ निवास करेगा” (Revelation 21:3)।

तम्बू पर्व को अभी मनाना परमेश्वर के राज्य में आने वाली चीजों की एक झलक है।

8. अंतिम महान दिन: मानवजाति के लिए ईश्वर की अद्भुत मुक्ति योजना

यह आठवां दिन, जो तम्बू पर्व के सात दिनों के ठीक बाद आता है, उद्धार की योजना की पूर्णता को दर्शाता है।

उद्धार का प्रतीक "जीवन की पुस्तक" खोली जाएगी (Revelation 20:12)। यह नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के आने से ठीक पहले की घटना है (Revelation 21:1)। यहूदी इस पर्व को शेमिनी 'अज़रेट कहते हैं, जिसका अर्थ है "सभा का आठवां दिन" (यह भी संकेत मिलता है कि तम्बू पर्व के पिछले सात दिन सभा के दिन थे)।

बाइबल में आठवें दिन के बारे में और अधिक जानकारी यहाँ दी गई है:

³⁴... 'इस सातवें महीने के पंद्रहवें दिन से सात दिनों तक प्रभु के लिए तम्बू पर्व मनाया जाएगा।...'³⁶आठवें दिन तुम एक पवित्र सभा करोगे। ... यह एक पवित्र सभा है, और तुम उस दिन कोई भी सामान्य कार्य नहीं करोगे। (Leviticus^{23:34, 36})

चर्च ऑफ गॉड के समुदायों में इस दिन को अक्सर इस रूप में जाना जाता है *आखिरी शानदार दिनों* क्योंकि नए नियम में इसके बारे में यही कहा गया है:

³⁷उस महान पर्व के अंतिम दिन, यीशु खड़े होकर पुकारते हुए बोले, "यदि कोई प्यासा हो, तो वह मेरे पास आए और पिए।"³⁸जो मुझ पर विश्वास करता है, जैसा कि पवित्रशास्त्र में कहा गया है, उसके हृदय से जीवनदायी जल की नदियाँ बहेंगी। (John^{7:37-38})

इसलिए यीशु ने उस दिन को मनाया जो सहस्राब्दी के उत्सव के ठीक बाद आता है, और उस दिन उपदेश दिया।

सहस्राब्दी के बाद क्या होगा?

पुनरुत्थान (Revelation 20:5)।

मृत लोग ईश्वर के सामने खड़े होते हैं। इसमें आज के सच्चे ईसाई शामिल नहीं हैं, क्योंकि यीशु के लौटने पर उनका पुनरुत्थान होगा। इस पुनरुत्थान में वे लोग शामिल होंगे जो ईश्वर की सच्ची योजना से अनभिज्ञ रहते हुए मरे।

बीते युगों में। यही वह न्याय का दिन है जिसका उल्लेख यीशु ने बार-बार किया था:

⁷और जब तुम जाओ, तो प्रचार करते हुए कहो, 'स्वर्ग का राज्य निकट है।' ¹⁴और जो कोई तुम्हारा स्वागत न करे और तुम्हारी बातें न सुने, तो जब तुम उस घर या शहर से विदा हो जाओ, तो अपने पैरों की धूल झाड़ दो। ¹⁵मैं तुमसे सच कहता हूँ, न्याय के दिन सदोम और गोमोरा देश के लिए उस नगर की अपेक्षा कहीं अधिक सहन करने योग्य होगा! (Matthew^{10:7, 14-15})

²³और हे कफरनाउम, जो स्वर्ग तक ऊँचे उठाए गए हो, तुम्हें पाताल में गिरा दिया जाएगा; क्योंकि यदि वे चमत्कार जो तुझमें किए गए थे, सदोम में किए गए होते, तो वह आज तक बना रहता। ²⁴लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ कि न्याय के दिन सदोम देश के लिए तुम्हारे सामर्थ्य से कहीं अधिक सहन करने योग्य होगा। (Matthew^{11:23-24})

ध्यान दें कि न्याय के दिन उन लोगों के लिए अधिक सहनीय है जिन्हें परमेश्वर ने सदोम और गोमोरा में नष्ट कर दिया (Genesis 19:24) उन लोगों की तुलना में जिन्होंने जानबूझकर मसीह और उसके राज्य के संदेश को अस्वीकार कर दिया।

यीशु ने यह भी सिखाया कि "सभी पाप क्षमा किए जाएँगे" (Mark 3:28), सिवाय 'अक्षमा योग्य पाप' (Mark 3:29) के। अंतिम महान दिन की पूर्ति के साथ ही वे सभी लोग जिन्हें उद्धार का अवसर नहीं मिला है, वास्तव में वह अवसर प्राप्त करेंगे, और लगभग सभी उस प्रस्ताव को स्वीकार करेंगे।

लगभग सभी मनुष्य जो कभी इस दुनिया में रहे हैं, उन्हें बचा लिया जाएगा!

2रा शताब्दी में कहा जाता है कि स्मिरना के पॉलीकार्प ने तंबू पर्व और अंतिम महान दिन के बारे में सिखाया था (पॉलीकार्प का जीवन, अध्याय 19)।

बाइबल का सत्य यह है कि ईश्वर के प्रेम के कारण ही यीशु सभी के लिए मरने आए थे।

¹⁶क्योंकि परमेश्वर ने जगत को इतना प्रेम किया कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, बल्कि अनन्त जीवन पाए। ¹⁷क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा कि वह जगत को दोषी ठहराए, बल्कि इसलिए भेजा कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। (John^{3:16-17})

तो क्या प्रेममय ईश्वर ने अपने पुत्र को कुछ गिने-चुने लोगों के लिए या पूरी दुनिया के लिए मरने के लिए भेजा?

प्रोटेस्टेंट, जो अक्सर John3:16 का हवाला देते हैं, यह सिखाने की प्रवृत्ति रखते हैं कि दुनिया बच सकती है, लेकिन जो लोग अब तक इस दुनिया में रहे हैं, उनमें से अधिकांश को हमेशा के लिए पीड़ा सहनी पड़ेगी। वे इस बात को भी नज़रअंदाज़ करते दिखते हैं कि यीशु सभी के लिए मरने आए थे (John3:17)। क्या सर्वज्ञानी और प्रेममय ईश्वर इस तरह की उद्धार योजना बना सकते हैं? क्या बाइबल इस विचार का समर्थन करती है कि अब सभी का उद्धार हो सकता है? यदि नहीं, तो क्या यह उचित है?

क्योंकि ईश्वर सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है और प्रेम है (1 John4:8,16), क्या ईश्वर ने अपने जीवन में अधिकांश लोगों को शाश्वत यातना के लिए पूर्वनियोजित किया होगा?

नहीं।

निश्चित रूप से ईश्वर इतना बुद्धिमान है कि उसके पास एक ऐसी योजना है जो वास्तव में कारगर है।

Romans9:14-15 में कहा गया है:

14तो फिर हम क्या कहें? क्या परमेश्वर के साथ कोई अन्याय है? बिलकुल नहीं! 15क्योंकि उसने मूसा से कहा, “मैं जिस पर दया करना चाहूंगा, उस पर दया करूंगा, और जिस पर करुणा करना चाहूंगा, उस पर करुणा करूंगा।”

हम जानते हैं कि पुराने नियम में परमेश्वर ने इस्राएल के एक भाग को चुना था, और कुछ ही लोगों को। यदि बाकी लोगों को अनंत यातना भोगनी पड़े तो यह कैसा प्रेम है?

परमेश्वर “चाहता है कि सब मनुष्य उद्धार पाएँ और सत्य का ज्ञान प्राप्त करें” (1 Timothy2:4)। इस युग में सभी को इसलिए नहीं बुलाया गया क्योंकि वह जानता था कि अधिकांश लोग अंत तक सत्य को स्वीकार नहीं करेंगे और उद्धार पाने के लिए उसमें धीरज नहीं रखेंगे (Mark13:13; Luke8:5-15)। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि जिन्हें अभी नहीं बुलाया गया वे सब अलग-थलग पड़ गए और खो गए।

बाइबल सिखाती है कि इस युग में बहुतों को जानबूझकर अंधा किया गया है (John12:37-40; Isaiah44:18)। इस युग में अंधे किए गए लोगों के पास अभी भी अवसर है (John9:41; Isaiah42:16-18 देखें)। यह भी ध्यान दें:

14मैं एक बार फिर इस जनसमुदाय के बीच अद्भुत कार्य करूंगा...²⁴ये भी, जो मन से भटक गए थे, समझ प्राप्त करेंगे, और जो शिकायत करते थे, वे शिक्षा सीखेंगे। (Isaiah^{29:14, 24})

परमेश्वर किसी के साथ भेदभाव नहीं करता (Romans2:11)। सभी के लिए अवसर होगा क्योंकि “पृथ्वी के सभी छोर हमारे परमेश्वर के उद्धार को देखेंगे” (Isaiah52:10)।

जो लोग इस प्रथम पुनरुत्थान का हिस्सा नहीं हैं, जिन्हें “शेष मरे हुए” कहा जाता है (Revelation20:5), उनका पुनरुत्थान सहस्राब्दी समाप्त होने के बाद होगा। यह एक शारीरिक पुनरुत्थान होगा और इसमें वे लोग शामिल होंगे जिन्हें लगता है कि उनकी आशा समाप्त हो गई है (Ezekiel37:1-14)।

यद्यपि उन्हें पाप का दोषी ठहराया जाएगा (Revelation20:12; Romans3:23; तुलना करें 1 Peter4:17), “दया न्याय पर विजय प्राप्त करती है” (James2:13)। परमेश्वर सभी मनुष्यों से विनती करेगा (Jeremiah25:31; Isaiah3:13) और बहुत से लोग उत्तर देंगे (Isaiah65:24)। यद्यपि सभी लोग उसके प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करेंगे, और यह दूसरा मौका नहीं है (जिन्हें वास्तव में मौका मिला था और जिन्होंने परमेश्वर के पवित्र आत्मा को पूरी तरह से अस्वीकार कर दिया, उन्हें Mark3:29 के अनुसार क्षमा पाने का वह अवसर नहीं मिलेगा), फिर भी बहुत से लोग पश्चात्ताप करेंगे। अंतिम महान दिन इसे दर्शाने में सहायक होता है।

निम्नलिखित बातों पर भी विचार करें:

19हे प्रभु, मेरी शक्ति और मेरा गढ़, संकट के दिनों में मेरी शरण, पृथ्वी के छोरों से अन्यजाति तेरे पास आकर कहेंगे, “निःसंदेह हमारे पूर्वजों को झूठ, व्यर्थता और निष्फल वस्तुएँ विरासत में मिली हैं।”²⁰क्या कोई व्यक्ति अपने लिए ऐसे देवता बनाएगा, जो देवता नहीं हैं?²¹अतः देखो, मैं उन्हें केवल एक बार ही यह बात बताऊँगा, मैं उन्हें अपने हाथ और अपनी शक्ति का ज्ञान कराऊँगा; और वे जान जाएँगे कि मेरा नाम यही है। (Jeremiah^{16:19-21})

¹⁷और शेष भाग से वह एक देवता की मूर्ति बनाता है, अपनी प्रतिमा। वह उसके सामने गिरकर उसकी पूजा करता है, उससे प्रार्थना करता है और कहता है, "मुझे बचाओ, क्योंकि तुम ही मेरे ईश्वर हो!"¹⁸वे न जानते हैं और न समझते हैं; क्योंकि उसने उनकी आँखें बंद कर दी हैं, ताकि वे देख न सकें, और उनके हृदय बंद कर दिए हैं, ताकि वे समझ न सकें।²²मैंने तुम्हारे अपराधों को घने बादल की तरह मिटा दिया है, और तुम्हारे पापों को बादल की तरह। मेरे पास लौट आओ, क्योंकि मैंने तुम्हें छुड़ा लिया है। (Isaiah^{44:17, 18, 22})

यहां तक कि वे लोग जिन्होंने झूठी परंपराओं को स्वीकार किया, जिनमें मूर्तिपूजक भी शामिल थे (Isaiah44:17-18), उन्हें भी उद्धार का पहला वास्तविक अवसर मिलेगा (Isaiah44:22)। युगों-युगों से अफ्रीका, यूरोप, एशिया, अमेरिका और द्वीपों में अरबों लोगों ने यीशु और राज्य के सच्चे सुसमाचार के बारे में कभी नहीं सुना—और परमेश्वर को इसका पूर्वज्ञान था और उसने एक योजना बनाई थी (Romans11:2)।

हम में Continuing Church of God इस बात से सहमत है कि "हमारा परमेश्वर उद्धार का परमेश्वर है" (Psalm68:20) और सिखाता है कि उसके पास उद्धार की एक योजना है जो वास्तव में कुछ ही लोगों के लिए नहीं बल्कि बहुत से लोगों के लिए काम करती है।

स्वर्ग के नीचे केवल एक ही नाम है जिसके द्वारा मनुष्य उद्धार पा सकते हैं (Acts4:12; तुलना करें Isaiah43:11) और वह है यीशु मसीह (Acts4:10; John3:18)। चूंकि अधिकांश मानवजाति ने यीशु और परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार के बारे में सच्चाई कभी नहीं सुनी है (विवरण के लिए, हमारी निःशुल्क पुस्तिका The Gospel of the Kingdom of God, www.ccog.org पर देखें), और "सभी लोग परमेश्वर का उद्धार देखेंगे" (Luke3:6), सभी के लिए उद्धार प्राप्त करने का अवसर होगा—या तो इस युग में या आने वाले युग में (तुलना करें Matthew12:31-32; Luke13:29-30)।

भविष्य का युग दूसरे पुनरुत्थान के बाद आता है (क्योंकि उस समय के सच्चे ईसाई पहले पुनरुत्थान में Revelation20:5-6 के अनुसार उठाए जाते हैं) और इसमें श्वेत सिंहासन न्याय का समय शामिल है (Revelation20:11-12)। यशायाह (Isaiah65:20), साथ ही रोमन और ऑर्थोडॉक्स कैथोलिक संत इरेनियस (एडवर्सस हेरेसेस, पुस्तक V, अध्याय 34, पद 2-3,4) इससे संकेत मिलता है कि आने वाला यह विशेष युग लगभग सौ वर्ष लंबा होगा।

यह विचार मध्य युग में भी उन लोगों द्वारा माना जाता था जिन्हें रोम के चर्च द्वारा सताया गया था, जैसा कि जांचकर्ता बिशप बर्नार्ड गाइडोनीस (बर्नार्ड गाइडोनीस: जांचकर्ता की नियमावली, अध्याय 5) द्वारा रिपोर्ट किया गया है।

यह सिद्धांत 20वीं शताब्दी में रेडियो/वर्ल्डवाइड चर्च ऑफ गॉड द्वारा सिखाया गया था। और आज भी इसके द्वारा पढ़ाया जाता है Continuing Church of God।

ईश्वर की मुक्ति योजना

बाइबल में वर्णित पवित्र दिनों का पालन करना सच्चे ईसाइयों को ईश्वर की उद्धार की सच्ची योजना की याद दिलाता है। Continuing Church of God समझता है कि इस संबंध में परमेश्वर की योजना उनके पर्वों के पालन द्वारा कैसे निर्धारित की गई है (Leviticus 23:37)।

ईश्वर स्पष्ट रूप से सिखाता है कि वह नहीं चाहता कि उसकी उपासना के लिए मूर्तिपूजा की प्रथाओं का उपयोग किया जाए:

29 जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उन जातियों को तुम्हारे सामने से नष्ट कर दे जिन्हें तुम हड़पने जा रहे हो, और तुम उन्हें हटाकर उनकी भूमि में बस जाओ, 30 तो सावधान रहना कि उनके नष्ट होने के बाद तुम उनके पीछे न भागो, और उनके देवताओं के बारे में न पूछो, यह कहते हुए कि, 'इन जातियों ने अपने देवताओं की उपासना कैसे की? मैं भी वैसा ही करूँगा।' 31 तुम अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना उस प्रकार न करना; क्योंकि उन्होंने अपने देवताओं के साथ वे सभी घृणित कार्य किए हैं जिनसे यहोवा घृणा करता है; वे अपने पुत्र-पुत्रियों को भी अपने देवताओं के लिए आग में जला देते हैं। 32 जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ, उसका पालन करना; उसमें कुछ जोड़ना या घटाना मत। (Deuteronomy 12:29-32)

जो लोग मूर्तिपूजा की प्रथाओं को बाइबिल की प्रथाओं के साथ मिलाते हैं, वे ईश्वर की मुक्ति की योजना को अस्पष्ट करते हैं और आम तौर पर इसे समझते नहीं हैं।

नया नियम दिखाता है कि प्रेरित पौलुस ने बाइबिल के पवित्र दिनों का पालन किया (जैसे Acts 18:21; 20:6,16; 27:9; 1 Corinthians 5:7-8, 16:8) क्योंकि उसने अपने लोगों के कानून और रीति-रिवाजों का पालन किया।

पौलुस ने विशेष रूप से बाइबिल के अनुष्ठानों में मूर्तिपूजा की प्रथाओं को शामिल करने की निंदा की (1 Corinthians 10:20-23)। पौलुस ने स्वयं अपने जीवन के अंत

में कहा कि उसने यहूदियों द्वारा पालन की जाने वाली सभी प्रथाओं का पालन किया (Acts28:17-19; तुलना करें Acts21:18-24) और इसमें Leviticus 23 में सूचीबद्ध सभी पवित्र दिन शामिल होने चाहिए थे।

सामान्यतः, ग्रीको-रोमन चर्च प्रेरित पौलुस की इस सलाह का पालन नहीं करते कि वे पौलुस का अनुकरण करें जैसे पौलुस ने मसीह का अनुकरण किया (1 Corinthians11:1), और न ही प्रेरित यूहन्ना की इस सलाह का कि वे उसी मार्ग पर चलें जिस पर वे और यीशु चले (1 John2:6, 18-19), क्योंकि वे बाइबल के सभी पवित्र दिनों का पालन नहीं करते। इसके अलावा, ये चर्च आमतौर पर अपनी उपासना में गैर-ईसाई प्रथाओं को भी शामिल करते हैं, जिनका प्रेरितों ने विरोध किया था (1 Corinthians10:20-23; 2 Corinthians6:14-18; यहूदा 3-4, 12; 1 John2:6)।

ईश्वर के पवित्र दिनों को न मनाकर, बल्कि बाइबल से इतर अन्य दिनों को अपनाकर, बहुत से लोग यह नहीं समझते कि पाप को वास्तव में हमारे जीवन से निकालना आवश्यक है, कि ईश्वर केवल कुछ लोगों को ही अभी बुला रहा है, कि इस युग में या आने वाले युग में सभी को उद्धार का अवसर मिलेगा, और लगभग वे सभी जो कभी जीवित रहे हैं, बाद के युग में बचाए जाएंगे।

ईश्वर के पवित्र दिनों में उनकी मुक्ति योजना के कुछ ऐसे पहलू बताए गए हैं जिन्हें अधिकांश लोग नहीं समझते। यह एक अद्भुत और प्रेमपूर्ण योजना है।

9. गलत अनुवाद और सब्त का दिन

यीशु में विश्वास रखने वाले अधिकांश लोग बाइबल में वर्णित पवित्र दिनों का पालन क्यों नहीं करते? यहूदी-विरोधी भावना, समझौता, अज्ञानता और 'परंपरा' के बारे में गलत धारणाओं के अलावा, बाइबल के गलत अनुवाद भी एक कारण हैं कि कई लोग यह स्वीकार करने को तैयार नहीं दिखते कि उन्हें ईश्वर के त्योहारों का पालन करना चाहिए।

आमतौर पर कुछ गलत अनुवादित/गलत समझे गए अंश होते हैं जिन्हें लोग बाइबिल के पवित्र दिनों के समाप्त होने के कथित 'सबूत' के रूप में पेश करते हैं।

Colossians2:16-17

संभवतः, बाइबिल का वह अंश जिसे अक्सर इस बात के "सबूत" के रूप में उद्धृत किया जाता है कि सब्त और बाइबिल के पवित्र दिन समाप्त हो गए हैं, Colossians2:16-17 है। तो आइए, इसके एक मामूली गलत अनुवाद की जाँच करें:

¹⁶इसलिए कोई भी व्यक्ति खाने-पीने, किसी त्योहार, अमावस्या या सब्त के दिन के संबंध में तुम्हारा न्याय न करे।¹⁷जो आने वाली चीजों की छाया हैं; परन्तु शरीर है मसीह का (Colossians^{2:16-17}, केजेवी)।

उपरोक्त अनुवाद लगभग सही है, हालांकि इसमें एक शब्द "है" जोड़ा गया है (यही कारण है कि केजेवी अनुवादकों ने इसे तिरछे अक्षरों में लिखा), जो मूल ग्रीक में नहीं है।

एक पूर्णतः शाब्दिक अनुवाद में इसे छोड़ दिया जाएगा क्योंकि यह उसमें नहीं है। ध्यान दें स्ट्रॉन्स कॉन्कार्डेंस लोक 17 के लिए संख्याएँ और संबंधित शब्द:

3739. 2076 4639... 3588... 3195....3588 1161 4983 9999 3588 5547

यह ध्यान देने योग्य है कि 9999 का अर्थ है कि बाइबिल के पाठ में कोई शब्द नहीं था - "है" शब्द इस धर्मग्रंथ में नहीं है।

क्योंकि वही तीन स्ट्रॉन्स शब्द (#4983, 3588, और 5547) नए नियम में चार अन्य बार उपयोग किए गए हैं और उन समयों में केजेवी उनका अनुवाद "मसीह का शरीर" के रूप में करता है (Romans7:4; 1 Corinthians10:16; 1

Corinthians12:27; Ephesians4:12) - जैसा कि एनकेजेवी करता है - इसलिए केजेवी को भी ऐसा ही करना चाहिए था।

इसलिए, यदि वे अनुवादक केवल अपने ही विचारों में सुसंगत होते, तो वे Colossians2:16-17 का अनुवाद इस प्रकार करते (और इसमें कोष्ठक या अल्पविराम शामिल करते):

¹⁶इसलिए खाने-पीने के मामले में, त्योहारों के संबंध में, अमावस्या के दिन के पालन के संबंध में या सब्त के दिन के संबंध में कोई भी तुम्हारा न्याय न करे।¹⁷(क्योंकि वे बातें तो आने वाली बातों की छाया मात्र हैं), परन्तु मसीह का शरीर।

दूसरे शब्दों में कहें तो, पवित्र दिनों के विषय में आपका न्याय मसीह के शरीर (कलीसिया, Colossians1:18) के बाहर के लोगों द्वारा न किया जाए, बल्कि केवल सच्ची कलीसिया द्वारा ही किया जाए। Colossians2:16-17 यह नहीं कह रहा है कि सब्त और पवित्र दिन समाप्त हो गए हैं।

यहां तक कि मिलान के प्रारंभिक ऑर्थोडॉक्स बिशप एम्ब्रोस ने भी यह स्वीकार किया कि Colossians2:17 "मसीह के शरीर" को संदर्भित कर रहा था, जैसा कि उन्होंने उस पद पर टिप्पणी करते हुए निम्नलिखित लिखा था:

तो आइए, हम मसीह के शरीर की खोज करें... जहाँ मसीह का शरीर है, वहीं सत्य है। (मिलान के एम्ब्रोस। पुस्तक ॥. पुनरुत्थान में विश्वास पर, खंड 107)

यह दुखद है कि ग्रीक भाषा के आधुनिक अनुवादकों ने अक्सर इस अभिव्यक्ति के वास्तविक अर्थ को नजरअंदाज कर दिया है।

किसी गलत अनुवाद के आधार पर यह दावा करना कि पवित्र दिन समाप्त हो गए हैं, बाइबिल की व्याख्या का एक खराब तरीका है।

Galatians4:8-10

पवित्र दिनों को मनाने के विरोध में एक और आम आपत्ति Galatians4:8-10 का हवाला देती है। कुछ प्रोटेस्टेंट इसका इस्तेमाल यह कहने के लिए करते हैं कि बाइबल में वर्णित किसी भी तिथि का पालन नहीं किया जाना चाहिए। तो आइए देखें कि वास्तव में ये शास्त्र क्या सिखाते हैं:

लेकिन वास्तव में, जब आप ईश्वर को नहीं जानते थे, तब आप उनकी सेवा करते थे जो स्वभाव से देवता नहीं हैं। लेकिन अब जब तुम परमेश्वर को जान चुके हो, या यों कहें कि परमेश्वर तुम्हें जान चुका है, तो तुम फिर से उन कमजोर और तुच्छ तत्वों की ओर क्यों मुड़ रहे हो, जिनके तुम फिर से गुलाम बनना चाहते हो? 10 तुम दिन, महीने, ऋतुएँ और वर्ष मनाते हो।

यहां पवित्र दिवस के विरोध में दिए गए तर्क में कई समस्याएं हैं।

एक कारण यह है कि गलातियों गैर-यहूदी थे (हालाँकि बाद के छंदों में कुछ यहूदियों का भी उल्लेख किया गया है) और वे धर्मांतरण से पहले बाइबिल के पवित्र दिनों का पालन नहीं कर रहे थे।

इसके अलावा, बाइबिल में बाइबिल की आवश्यकताओं को "तुच्छ तत्व" कहना तो संभव ही नहीं है। पौलुस स्पष्ट रूप से मूर्तिपूजा की प्रथाओं के विरुद्ध चेतावनी दे रहा था क्योंकि गलातियों ने "उनकी सेवा की थी जो स्वभाव से देवता नहीं थे।"

एक और बात यह है कि कैथोलिक/प्रोटेस्टेंट/पूर्वी ऑर्थोडॉक्स को यह ध्यान रखना चाहिए कि वे अक्सर विभिन्न दिनों और वर्षों (रविवार, ईस्टर, क्रिसमस, नया साल) का पालन करते हैं, इसलिए यदि उन्हें लगता है कि कोई धार्मिक दिन नहीं मनाया जाना चाहिए, तो उन्हें किसी भी धार्मिक दिन का पालन नहीं करना चाहिए।

Galatians 4:8-10 बाइबिल के पवित्र दिनों को समाप्त नहीं कर रहा है, बल्कि गैर-बाइबिल अनुष्ठानों से चिपके रहने के खिलाफ एक चेतावनी है।

सातवें दिन के सब्त के बारे में क्या?

सातवें दिन का सब्त Leviticus 23 में सूचीबद्ध परमेश्वर के त्योहारों में से पहला है। यद्यपि यह एक साप्ताहिक पवित्र दिवस है, वार्षिक नहीं, फिर भी कुछ संक्षिप्त टिप्पणियाँ करना उचित होगा।

सप्ताह का सातवाँ दिन, बाइबिल में वर्णित सब्त, अब शनिवार कहलाता है। हालाँकि कुछ कैलेंडरों में रविवार को सप्ताह का सातवाँ दिन दिखाया जाता है, लेकिन वास्तविकता यह है कि रविवार सप्ताह का पहला दिन है। नया नियम स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि यीशु (Luke 4:16, 21; 6:6; 13:10) के साथ-साथ प्रेरितों और विश्वासियों (Acts 13:13-15, 42-44; 17:1-4; 18:4; Hebrews 4:9-11) ने सातवें दिन का सब्त मनाया।

कई लोग दावा करते हैं कि नए नियम में सातवें दिन के सब्त का उल्लेख नहीं है, इसलिए आज इसे मनाने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन इस दावे का एकमात्र आधार बाइबल के गलत अनुवाद हैं। यदि मूल ग्रीक, मूल अरामी और मूल लैटिन वुलगेट को देखा जाए, तो इन सभी भाषाओं में यह स्पष्ट है कि सातवें दिन का सब्त ईसाइयों के लिए अनिवार्य है।

बाइबल के कुछ कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट अनुवादों के अनुसार भी, सातवें दिन का सब्त का विश्राम केवल ईश्वर के आज्ञाकारी ईसाई लोगों के लिए ही शेष रहना था।

“क्योंकि उसने सातवें दिन के विषय में कहीं इस प्रकार कहा है, “और परमेश्वर ने सातवें दिन अपने सभी कार्यों से विश्राम किया”;⁵ और फिर, पहले बताए गए स्थान पर, “वे मेरे विश्राम में प्रवेश नहीं करेंगे।”⁶ इसलिए, चूंकि कुछ लोग इसमें प्रवेश करेंगे, और जो लोग पहले खुशखबरी प्राप्त कर चुके थे, वे अवज्ञा के कारण प्रवेश नहीं कर पाए, ...⁹ इसलिए, परमेश्वर के लोगों के लिए अभी भी सब्त का विश्राम शेष है।¹⁰ और जो कोई परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करता है, वह अपने कर्मों से विश्राम पाता है, जैसे परमेश्वर ने अपने कर्मों से विश्राम पाया।¹¹ इसलिए, आइए हम उस विश्राम में प्रवेश करने का प्रयास करें, ताकि कोई भी उसी अवज्ञा के उदाहरण का अनुसरण करके न गिरे। (Hebrews^{4:4-6, 9-11}, एनएबी)

“क्योंकि कहीं उसने सातवें दिन के बारे में इन शब्दों में कहा है: “और सातवें दिन परमेश्वर ने अपने सभी कार्यों से विश्राम किया।”⁵ और ऊपर दिए गए अंश में वह फिर से कहता है, “वे कभी मेरे विश्राम में प्रवेश नहीं करेंगे।”⁶ अब भी यही स्थिति है कि कुछ लोग उस विश्राम में प्रवेश करेंगे, और वे लोग जिन्हें पहले सुसमाचार सुनाया गया था, वे अपनी अवज्ञा के कारण उसमें प्रवेश नहीं कर पाए...⁹ अतः परमेश्वर के लोगों के लिए एक सब्त का विश्राम शेष रहता है;¹⁰ जो कोई परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करता है, वह अपने काम से भी विश्राम पाता है, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर ने अपने काम से विश्राम पाया था।¹¹ अतः आइए हम उस विश्राम में प्रवेश करने के लिए हर संभव प्रयास करें, ताकि कोई भी उनकी अवज्ञा के उदाहरण का अनुसरण करके न गिरे (Hebrews^{4:4-6, 9-11}, एनआईवी)

नए नियम में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि मसीहियों को सातवें दिन का सब्त मनाना चाहिए। आध्यात्मिक विकास और आत्मिक कायाकल्प के अलावा, सब्त परमेश्वर के सहस्राब्दी विश्राम के आगामी समय का भी प्रतीक है।

हालांकि बहुत से लोग सातवें दिन के सब्त को पवित्र दिन नहीं मानते, बाइबल इसे पवित्र दिन मानती है (Leviticus23:3; Exodus20:8; Isaiah58:13)। नया नियम इसे न मानने के खिलाफ चेतावनी देता है (Hebrews4:4-11), फिर भी बहुत से लोग "खोखले शब्दों" से तर्क करते हैं (Ephesians5:26 देखें)।

यह भी उल्लेख करना शायद उचित होगा कि अनुवादों में कुछ और संकेत मिलने के बावजूद, दूसरी शताब्दी के बिशप इग्नाटियस ऑफ एंटीओक ने सातवें दिन के सब्त को रविवार से प्रतिस्थापित नहीं किया था (थील बी. इग्नाटियस और सब्त। द सब्त सेंटिनल, खंड 69 (3): 18-21, 2016 और थील बी. इग्नाटियस और सब्त पर अधिक जानकारी। द सब्त सेंटिनल, खंड 70 (2): 15-17, 2017)। न ही प्राचीन दस्तावेज़ जिसे कहा जाता है *ह Didache* (थील बी. डिडाचे और सब्त। सब्त सेंटिनल, खंड 69 (2): 10, 19-20, 2016)।

चर्च के इतिहास के बारे में अधिक दस्तावेजी जानकारी के लिए, पुस्तिकाओं को देखें। *आज सच्चा ईसाई चर्च कहाँ है?* और यह *Continuing History of the Church of God* www.cog.org पर।

10. पुनः प्रस्तुत किए गए राक्षसी अवकाश

क्रिसमस, ईस्टर और अन्य धार्मिक दिनों के बारे में क्या जो कई ईसाई धर्मावलंबी मनाते हैं?

क्या ये बातें बाइबल से ली गई हैं? यदि नहीं, तो कहाँ से? बाइबल के अनुसार, क्या इन्हें मानना या न मानना मायने रखता है?

विश्व के विभिन्न चर्चों द्वारा अनेक त्योहारों का समर्थन किया जाता है, हालांकि सभी चर्चों द्वारा इनका समर्थन नहीं किया जाता। इतिहास में, कुछ चर्चों ने इन्हीं त्योहारों का कभी समर्थन किया है, तो कभी इनकी निंदा भी की है।

हालांकि इस पुस्तिका में प्रत्येक त्योहार और उनकी उत्पत्ति के बारे में सभी विवरणों में जाना संभव नहीं है, लेकिन वास्तविकता यह है कि इनमें से कई त्योहारों को नए रूप में प्रस्तुत किया गया है क्योंकि वे अक्सर मूल रूप से किसी मूर्तिपूजक देवता/देवी का सम्मान करने के लिए बनाए गए थे, जिन्हें बाद में विभिन्न चर्चों ने अपना लिया और/या उनका नाम बदल दिया।

कई लोगों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि ग्रीको-रोमन धर्मशास्त्रियों ने कभी-कभी इन त्योहारों को मूर्तिपूजा और ईसाइयों के लिए अनुपयुक्त बताकर इनकी निंदा की है—इसके बावजूद कि 21वीं शताब्दी में विभिन्न ग्रीको-रोमन चर्च इन्हें बढ़ावा देते हैं।

नव वर्ष दिवस पर जानूस (समय के देवता) और स्ट्रेनुआ (शुद्धिकरण और कल्याण की देवी) का सम्मान किया जाता है।

बाइबल के अनुसार वर्ष की शुरुआत वसंत ऋतु में होती है (Exodus 12:2), लेकिन जिसे आम तौर पर नव वर्ष दिवस कहा जाता है, वह 1 जनवरी को मनाया जाता है। आधुनिक कैलेंडरों पर। 2वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ग्रीको-रोमन धर्मशास्त्री टर्टुलियन ने उन लोगों की निंदा की जो ईसा मसीह में विश्वास रखते थे लेकिन उसके किसी रूप का उत्सव मना रहे थे। लेकिन, इससे उन बहुत से लोगों को उत्सव मनाने से नहीं रोका जा सका जो ऐसा करना चाहते थे।

कैथोलिक विश्वकोश रिपोर्ट:

ईसाई लेखकों और परिषदों ने वर्ष के आरंभ में मनाए जाने वाले इस त्योहार से जुड़ी मूर्तिपूजा की अय्याशी और अतिवाद की निंदा की। टर्टुलियन उन

ईसाइयों को दोषी ठहराते हैं जो नव वर्ष दिवस की अधिष्ठात्री देवी स्टेनिया के नाम पर दिए जाने वाले पारंपरिक उपहारों (जिन्हें स्ट्रेने (फ्रेंच: एट्रेनेस) कहा जाता है) को केवल मैत्रीपूर्ण मेलजोल का प्रतीक मानते थे (देखें ओविड, फास्टी, 185-90) (डी आइडल. xiv)। (टियरनी जे. नव वर्ष दिवस. कैथोलिक विश्वकोश. खंड 11, 1911)

लगभग 487 ईस्वी में, ग्रीको-रोमन लोगों ने 1 जनवरी को "खतना का पर्व" मनाना शुरू किया। लेकिन इससे सभी मूर्तिपूजा संबंधी गतिविधियां बंद नहीं हुईं।

कैथोलिक विश्वकोश टिप्पणियाँ:

आज भी नव वर्ष के प्रारंभ के धर्मनिरपेक्ष पहलू खतना के धार्मिक पालन में बाधा डालते हैं और उस पवित्र दिवस को महज एक अवकाश बना देते हैं। संत ऑगस्टीन ने इस दिन को मनाने के मूर्तिपूजक और ईसाई तरीकों में अंतर बताया है: मूर्तिपूजक दावतों और अतिभोगों का प्रायश्चित ईसाई उपवास और प्रार्थना द्वारा किया जाता था (पी. एल., XXXVIII, 1024 sqq.; सेर्म. cxcvii, cxcviii)। (वही)

इसलिए इसमें यह भी कहा गया है:

छठी शताब्दी के अंत में ऑक्सरे की परिषद (कैनन 1) ने ईसाइयों को प्रतिबंधित कर दिया था। *शैतानी चालों का अवलोकन करने के लिए*।

इजहार *शैतानी चालों का अवलोकन करने के लिए* एलैटिन से अंग्रेजी में इसका मोटा-मोटा अनुवाद "शैतान के नए समय का पालन करना" होता है। संभवतः नए साल के संकल्प उस मूर्तिपूजक देवी के लिए की जाने वाली प्रार्थनाओं और प्रथाओं से संबंधित हैं।

1 जनवरी यह बाइबिल में वर्णित कोई त्योहार नहीं है, और यहां तक कि रोम के चर्च ने भी इसके कुछ पहलुओं को राक्षसी बताकर प्रतिबंधित कर दिया है।

वेलेंटाइन डे पर फॉनस/पैन (पशुओं के झुंड और उर्वरता के देवता) का सम्मान किया जाता है।

बाइबल में वेलेंटाइन डे जैसा कोई अवकाश नहीं है, लेकिन बहुत से लोग इसे मनाते हैं।

एक कैथोलिक स्रोत ने इसके बारे में यह लिखा है:

सेंट वैलेंटाइन डे की जड़ें प्राचीन रोमन त्योहार लूपरकेलिया में निहित हैं, जो 15 फरवरी को मनाया जाता था। 800 वर्षों तक रोमवासियों ने इस दिन को देवता लूपरकस को समर्पित किया था। लूपरकेलिया के दिन, एक युवक लॉटरी में एक युवती का नाम निकालता था और फिर उस युवती को पूरे वर्ष के लिए अपनी यौन साथी के रूप में रखता था।

कैथोलिक चर्च अब आधिकारिक तौर पर सेंट वैलेंटाइन को सम्मानित नहीं करता है, लेकिन इस त्योहार की जड़ें रोमन और कैथोलिक दोनों धर्मों में हैं। (सेंट वैलेंटाइन डे की उत्पत्ति। <http://www.americancatholic.org>)

मूर्तिपूजा और यौन स्वतंत्रता से जुड़ा यह दिन ईसाइयों के लिए मनाना बिल्कुल भी उचित नहीं है। इस प्रकार के व्यवहार के विरुद्ध नए नियम में चेतावनी दी गई है (1 Corinthians 6:18; Jude 4)।

वैलेंटाइन डे के बारे में कुछ इस्लामी टिप्पणियों पर ध्यान दें:

वैलेंटाइन डे मनाना जायज़ नहीं है क्योंकि: पहला, यह एक नया बनाया गया त्योहार है... ईसाई लोग वैलेंटाइन डे की मूर्तिपूजा वाली जड़ों से वाकिफ थे। **ईसाइयों द्वारा सेंट वैलेंटाइन डे को अपनाने का तरीका एक सबक होना चाहिए।** मुसलमानों के लिए... **हमें मूर्तिपूजा से जुड़ी अनैतिक प्रथाओं से बचना चाहिए।** परिवार, दोस्तों और विवाहित लोगों के बीच प्यार को ऐसे दिन मनाने की ज़रूरत नहीं है जिसकी उत्पत्ति इतनी बुरी तरह से हुई हो। (वैलेंटाइन डे मनाने पर निर्णय। <http://www.contactpakistan.com>)

ध्यान दें कि मुसलमान वैलेंटाइन डे को ईसाई धर्म (स्पष्ट रूप से झूठे और समझौतावादी प्रकार के ईसाई धर्म) और पाप से जोड़ते हैं।

दूसरे शब्दों में, वैलेंटाइन डे (ईसाई धर्म शब्द के माध्यम से) अन्यजातियों के बीच मसीह के नाम की निंदा का कारण बनता है (Romans 2:24; Isaiah 52:5)। मूर्तिपूजा के त्योहार मनाने के कारण “परमेश्वर के नाम की निंदा न हो” (Romans 2:24)।

सच्चे ईसाई शैतानी त्योहारों के नए रूप को नहीं मनाते (देखें 1 Corinthians 10:21)।

मार्डी ग्रास: शैतान का कार्निवल

मार्डी ग्रास और वैलेंटाइन डे (जिसे नीचे लूपरकेलिया कहा गया है) जैसे कार्निवल की उत्पत्ति मूर्तिपूजा से हुई है:

वसंत ऋतु के वार्षिक उत्सवों में से एक सबसे पहला दर्ज उदाहरण मिस्र का ओसिरिस उत्सव है; यह नील नदी की वार्षिक बाढ़ से होने वाले जीवन के नवीनीकरण का स्मरणोत्सव था। ईसा पूर्व छठी शताब्दी में एथेंस में, देवता डायोनिसस के सम्मान में मनाया जाने वाला वार्षिक उत्सव, झांकी के उपयोग का पहला दर्ज उदाहरण था। रोमन साम्राज्य के दौरान कार्निवल नागरिक अशांति और अनैतिकता के चरम पर पहुँच गए थे। प्रमुख रोमन कार्निवल बैकेनेलिया, सैटर्नलिया और ल्यूपरकेलिया थे। यूरोप में वसंत ऋतु के उर्वरता उत्सवों की परंपरा ईसाई काल तक जारी रही... क्योंकि कार्निवल यूरोप के मूर्तिपूजक अंधविश्वासों और लोककथाओं में गहराई से निहित हैं, रोमन कैथोलिक चर्च उन्हें समाप्त करने में असमर्थ रहा और अंततः उनमें से कई को चर्च की गतिविधियों के हिस्से के रूप में स्वीकार कर लिया। (कार्निवल। कोलंबिया विश्वकोश, छठा संस्करण, 2015)

बैकेनेलिया उत्सव देवता बैक्सस को समर्पित था, जिन्हें डायोनिसस भी कहा जाता था। ग्रीक पौराणिक कथाओं में वे अंगूर की फसल, शराब बनाने और शराब, अनुष्ठानिक उन्माद, उर्वरता, रंगमंच और धार्मिक परमानंद के देवता थे। बैकेनेलिया उत्सव में यौन अश्लीलता भी शामिल थी। तीसरी शताब्दी में ग्रीको-रोमन नेता कॉमोडियनस ने उनकी पूजा की निंदा की थी (कॉमोडियनस: ईसाई अनुशासन पर। निकिया से पूर्व के धर्मगुरुओं से, खंड 4)।

शराब, विशेषकर वाइन, ने ग्रीक संस्कृति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसमें डायोनिसस एक शोरगुल भरी जीवन शैली का एक महत्वपूर्ण कारण था (गेटली आई. ड्रिंक. गोथम बुक्स, 2008, पृ. 11)। मार्डी ग्रास और कार्निवल इससे संबंधित प्रतीत होते हैं।

दूसरी शताब्दी के उत्तरार्ध में, रोमन कैथोलिक बिशप और पूर्वी रूढ़िवादी संत इरेनियस ने विधर्मी वैलेंटिनस के अनुयायियों की मांसाहारी मूर्तिपूजक त्योहारों में भाग लेने के लिए निंदा की, जैसा कि उन्होंने लिखा:

इसलिए ऐसा होता है कि उनमें से "सबसे सिद्ध" लोग बिना किसी भय के उन सभी प्रकार के निषिद्ध कार्यों में लिप्त हो जाते हैं जिनके बारे में पवित्रशास्त्र हमें आश्वस्त करता है कि "जो लोग ऐसे कार्य करते हैं वे परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी नहीं होंगे।" उदाहरण के लिए, वे मूर्तियों

को चढ़ाए गए मांस को खाने में कोई संकोच नहीं करते, यह सोचकर कि इस तरह वे अपवित्र नहीं हो सकते। फिर, मूर्तियों के सम्मान में मनाए जाने वाले प्रत्येक मूर्तिपूजक उत्सव में, ... उनमें से कुछ लोग अत्यधिक लालच के साथ देह की वासनाओं के आगे झुक जाते हैं, यह मानते हुए कि सांसारिक चीजें सांसारिक स्वभाव के लिए हैं, जबकि आध्यात्मिक चीजें आध्यात्मिक के लिए हैं। इसके अलावा, उनमें से कुछ उन स्त्रियों को अपवित्र करने के आदी हैं जिन्हें उन्होंने उपरोक्त सिद्धांत सिखाया है, जैसा कि उन स्त्रियों द्वारा अक्सर स्वीकार किया गया है जो उनमें से कुछ द्वारा गुमराह की गई थीं, परमेश्वर के चर्च में लौटने पर, और अपनी अन्य गलतियों के साथ इसे भी स्वीकार करती हैं। (इरेनियस. विधर्मियों के विरुद्ध. पुस्तक 1, अध्याय 6, श्लोक 3)

बाद में, रूढ़िवादी कैथोलिक धर्म के समर्थक अर्नोबियस (जिनकी मृत्यु 330 में हुई) ने मूर्तिपूजकों द्वारा किए जाने वाले उपवासों के प्रकार के विरुद्ध चेतावनी दी:

हे इरेनियस के बुद्धिमान पुत्रों, आप क्या कहते हैं? हे मिनर्वा के नागरिकों, क्या? मन यह जानने के लिए उत्सुक है कि आप किन शब्दों से उस बात का बचाव करेंगे जिसे बनाए रखना इतना खतरनाक है, या आपके पास कौन सी कलाएँ हैं जिनसे आप उन व्यक्तियों और उद्देश्यों को सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं जो इतनी बुरी तरह घायल हो चुके हैं। यह कोई झूठा अविश्वास नहीं है, न ही आप पर झूठे आरोप लगाए जा रहे हैं: आपके एलुसिनिया की बदनामी उनके नीच आरंभ और प्राचीन साहित्य के अभिलेखों, यहाँ तक कि उन संकेतों से भी ज़ाहिर होती है जिनका उपयोग आप पवित्र वस्तुओं को ग्रहण करते समय पूछे जाने पर करते हैं, - "मैंने उपवास किया है और पेय पिया है; मैंने रहस्यमयी कुंड से निकाला है और टोकरी में रखा है; मैंने फिर से ग्रहण किया है और छोटी पेट्टी में स्थानांतरित किया है।" (अर्नोबियस। विधर्मियों के विरुद्ध, पुस्तक v, अध्याय 26)

अर्नोबियस ने तो यहाँ तक चेतावनी दी थी कि 'मार्डी ग्रास' भोज के बाद उपवास रखा जाएगा:

कल बृहस्पति का पर्व है। मेरा मानना है कि बृहस्पति भोजन करते हैं, और उन्हें भव्य भोजों से तृप्त होना पड़ता है, और उपवास के कारण उन्हें भोजन

की तीव्र इच्छा होती है, और सामान्य अंतराल के बाद उन्हें भूख लगती है।
(अर्नोबियस, विधर्मियों के विरुद्ध, पुस्तक 7, अध्याय 32)

इसलिए, प्रारंभिक लेखकों ने उन छुट्टियों की निंदा की जो कार्निवल/मार्डी ग्रास से मिलती-जुलती थीं, क्योंकि उनका संबंध मूर्तिपूजा से था।

बाइबल सिखाती है:

¹³आइए हम दिन के उजाले में उचित मार्ग पर चलें, न कि मौज-मस्ती और नशे में, न ही व्यभिचार और वासना में, न ही झगड़े और ईर्ष्या में।¹⁴परन्तु प्रभु यीशु मसीह को धारण करो, और अपनी वासनाओं को पूरा करने के लिए शरीर को तृप्त न करो। (Romans^{13:13-14})

बाइबल में उत्सव मनाने की निंदा नहीं की गई है, फिर भी मार्डी ग्रास और इससे जुड़े रीति-रिवाज बाइबल के विपरीत हैं। बोलीविया में इसे "शैतान का कार्निवल" कहा जाता है और खुलेआम शैतान को अपना देवता मानकर उसकी पूजा की जाती है!

शैतान का कार्निवल (ला डियाब्लाडा): हर वसंत ऋतु में, ओरुरो कार्निवल के रंग में रंग जाता है... इसका एक मुख्य आकर्षण शैतान नर्तक हैं, जिनकी परंपरा एक विशेष प्रकार की शैतान पूजा से जुड़ी है। ओरुरो एक खनन नगर है और यहाँ के स्थानीय लोग, जो अपना अधिकांश समय भूमिगत बिताते हैं, उन्होंने पाताल लोक के देवता को अपना देवता मान लिया। ईसाई परंपरा के अनुसार, यह देवता शैतान होना चाहिए और ओरुरो के श्रद्धालु शैतान, या सुपे, को अपना देवता मान लेते हैं। (फ्रॉमर्स।
<http://events.frommers.com/sisp/>
[index.htm?fx=event&event_id=5769](http://events.frommers.com/sisp/index.htm?fx=event&event_id=5769))

कार्निवल/मार्डिस ग्रास एक शैतानी त्योहार है और निश्चित रूप से ईसाई त्योहार नहीं है। इसे न तो यीशु ने मनाया था और न ही उनके शुरुआती अनुयायियों में से किसी ने।

लेंट: क्या यह अखमीरी रोटी और पेंटेकोस्ट के दिनों का विकृत रूप है?

लेंट के बारे में क्या?

हालांकि 'लेंट' शब्द का अर्थ वसंत ऋतु है, लेकिन अब इसे मुख्य रूप से सर्दियों में मार्टी ग्रास के ठीक बाद मनाया जाता है।

द विश्व पुस्तक विश्वकोश राज्यों:

लेंट वसंत ऋतु में मनाया जाने वाला एक धार्मिक पर्व है... यह ईस्टर से 40 दिन पहले, रविवार को छोड़कर, ऐश वेडनेसडे से शुरू होता है और ईस्टर रविवार को समाप्त होता है (रैम बी. लेंट. वर्ल्ड बुक एनसाइक्लोपीडिया, 50वां संस्करण, 1966)।

ऐश वेडनेसडे के बारे में क्या?

वैसे, यह न तो मूल ईसाई धर्म का पवित्र दिन है और न ही बाइबिल में वर्णित पवित्र दिन है।

कैथोलिक विश्वकोश रिपोर्ट:

ऐश बुधवार नाम ऐश बुधवार राख का दिन) जिसका उल्लेख रोमन मिस्सल में मिलता है, ग्रेगोरियन कैलेंडर की सबसे पुरानी मौजूदा प्रतियों में पाया जाता है और संभवतः कम से कम आठवीं शताब्दी का है।

इस दिन प्राचीन रीति-रिवाज के अनुसार सभी श्रद्धालुओं को प्रार्थना सभा शुरू होने से पहले वेदी के पास आने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, और वहाँ पुजारी अपने अंगूठे को पहले से पवित्र की गई राख में डुबोकर माथे पर निशान लगाता है (थर्स्टन एच. ऐश वेडनेसडे. द कैथोलिक एनसाइक्लोपीडिया, 1907)।

इसलिए, रोम के चर्च ने इसे 8वीं शताब्दी में आधिकारिक तौर पर अपना लिया।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि माथे पर राख का क्रॉस बनाने का विचार सूर्य देवता की पूजा और अन्य प्रकार के मूर्तिपूजा से आया है।

मिश्राटिक दीक्षा प्राप्त करने वाले लोग अब से अपने माथे पर सूर्य क्रॉस का चिह्न बनवाते थे। ईसाई धर्म में बुधवार को माथे पर बनाई जाने वाली राख की क्रॉस से इसकी समानता स्पष्ट है। कुछ लोगों का मानना है कि यह प्रारंभिक ईसाइयों द्वारा मिश्राटिक पंथ से प्रेरणा लेने का एक उदाहरण है; जबकि अन्य का सुझाव है कि दोनों पंथ एक ही मूल तत्व से प्रेरित थे।

(नबार्ज पी. मिथास के रहस्य: वह मूर्तिपूजक विश्वास जिसने ईसाई जगत को आकार दिया। इनर ट्रेडिशन/बेयर एंड कंपनी, 2005, पृष्ठ 36)

ऐश वेडनेसडे (राख बुधवार): यह कथित तौर पर ईसाई त्योहार रोमन मूर्तिपूजा से आया है, जिसने इसे वैदिक भारत से लिया था। राख को अग्नि देवता का बीज माना जाता था, जिसमें सभी पापों को दूर करने की शक्ति होती थी। मार्च में रोम के नव वर्ष के प्रायश्चित्त पर्व पर, लोग बोरी के कपड़े पहनते थे और अपने पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए राख में स्नान करते थे। तब भी और अब भी, नव वर्ष की पूर्व संध्या खाने-पीने और पाप करने का त्योहार था, इस सिद्धांत पर कि अगले दिन सभी पाप मिट जाएंगे। मार्च के मरते हुए देवता मार्स अपने उपासकों के पापों को अपने साथ मृत्यु में ले गए। इसलिए कार्निवल 'डाइस मार्टिस' यानी मार्स के दिन पड़ता था। अंग्रेजी में, यह मंगलवार था, क्योंकि मार्स सैक्सन देवता टिव से जुड़ा हुआ था। फ्रेंच में कार्निवल के दिन को 'मार्टिस ग्रास', यानी "मोटा मंगलवार" कहा जाता था, जो ऐश वेडनेसडे से पहले का उत्सव का दिन था। (वॉकर बी. द वुमन्स एनसाइक्लोपीडिया ऑफ मिथ्स एंड सीक्रेट्स. हार्परकोलिन्स, 1983, पृ. 66-67)

चालीस दिन के उपवास की उत्पत्ति कहाँ से हुई?

बाइबल में गिनती के लिए 50 दिनों की अवधि का उल्लेख है, जिससे हमें पेंटेकोस्ट नाम मिला है। लगभग चौथी-छठी शताब्दी में, ग्रीको-रोमन लोग एक प्रकार का 50 दिनों का उपवास रखते थे जो इस्लाम के रमजान उपवास से मिलता-जुलता था (पाइंस, पृष्ठ 32)। समय के साथ, यह नियम बदलकर चालीस दिनों तक एक या अधिक (सामान्यतः खाद्य) वस्तुओं से परहेज करने में बदल गया।

प्रारंभिक ईसाई, निश्चित रूप से, लेंट का पालन नहीं करते थे, जैसा कि पांचवीं शताब्दी में कैथोलिक संत एबॉट जॉन कैसियन ने भी महसूस किया था:

हालांकि आपको यह पता होना चाहिए कि जब तक प्रारंभिक चर्च अपनी पूर्णता को अक्षुण्ण बनाए रखता था, तब तक लेंट का यह पालन अस्तित्व में नहीं था। (कैसियन जॉन. सम्मेलन 21, एबॉट थियोनास का पहला सम्मेलन. पचास दिनों के दौरान विश्राम पर. अध्याय 30)

इस प्रकार, उन्होंने स्वीकार किया कि लेंट का पर्व बाद में जोड़ा गया था और मूल अनुयायी इसका पालन नहीं करते थे।

प्रेरित पौलुस ने फसह और अखमीरी रोटी के दिनों को मनाने का आह्वान किया (1 Corinthians 5:7-8)। फिर भी उन्होंने ऐसा उपवास काल के लिए नहीं किया। हालांकि, चूंकि अखमीरी रोटी के दिनों में खमीर रहित भोजन से सात दिन का उपवास शामिल होता है, जो कि ईस्टर के समय के आसपास होता है, इसलिए हो सकता है कि रोम और मिस्र से जुड़े कुछ लोगों ने महसूस किया हो कि परहेज की अवधि उचित होगी, लेकिन समय की अवधि और जिन चीजों से परहेज किया गया, वे भिन्न-भिन्न थीं।

सुकरात स्कोलास्टिकस ने 5वीं शताब्दी में लिखा था:

ईस्टर से पहले के उपवासों को विभिन्न लोगों में अलग-अलग तरीके से मनाया जाता है। रोम में रहने वाले लोग ईस्टर से पहले लगातार तीन सप्ताह तक उपवास रखते हैं, शनिवार और रविवार को छोड़कर। इलिरिक और पूरे ग्रीस और अलेक्जेंड्रिया में रहने वाले लोग छह सप्ताह का उपवास रखते हैं, जिसे वे 'चालीस दिनों का उपवास' कहते हैं। कुछ लोग ईस्टर से सातवें सप्ताह पहले से अपना उपवास शुरू करते हैं और केवल तीन से पांच दिन, और वह भी अंतराल पर, उपवास रखते हैं, फिर भी उस समय को 'चालीस दिनों का उपवास' कहते हैं। ... कुछ लोग इसके लिए एक कारण बताते हैं, तो कुछ लोग अपनी-अपनी धारणाओं के अनुसार दूसरा कारण बताते हैं। भोजन से परहेज करने के तरीके और दिनों की संख्या को लेकर भी मतभेद देखा जा सकता है। कुछ लोग सजीव चीजों से पूरी तरह परहेज करते हैं: कुछ लोग सभी जीवित प्राणियों में से केवल मछली खाते हैं: कई लोग मछली के साथ-साथ पक्षी भी खाते हैं, यह कहते हुए कि मूसा के अनुसार, ये भी जल से उत्पन्न हुए थे। कुछ लोग अंडे और सभी प्रकार के फलों से परहेज करते हैं: कुछ लोग केवल सूखी रोटी खाते हैं; कुछ लोग तो यह भी नहीं खाते: जबकि कुछ लोग नौवें घंटे तक उपवास रखने के बाद बिना किसी भेदभाव के किसी भी प्रकार का भोजन कर लेते हैं... यद्यपि कोई भी लिखित आदेश को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत नहीं कर सकता... (सुकरात स्कोलास्टिकस। चर्च का इतिहास, खंड V, अध्याय 22)

प्रेरितों के उपवासों में निश्चित रूप से कोई भिन्नता नहीं थी और न ही उनके लिए कोई अलग-अलग नियम थे (देखें 1 Corinthians 1:10; 11:1)। चालीस दिनों का लेंट उपवास बाइबल में वर्णित चालीस दिनों के उपवासों जैसा नहीं था, जिनमें भोजन और पानी से पूरी तरह परहेज करना पड़ता था (Exodus 34:28; Luke 4:2)।

लेंट की उत्पत्ति के संबंध में, एक विद्वान ने जो लिखा है उस पर ध्यान दें:

बेबीलोन की इशतारा देवी के उपासकों और मिस्र के महान मध्यस्थ देवता एडोनिस् या ओसिरिस के उपासकों द्वारा चालीस दिनों का उपवास रखा जाता था... मूर्तिपूजकों के बीच, यह उपवास अवधि वार्षिक (आमतौर पर वसंत ऋतु) के बड़े त्योहारों से पहले एक अनिवार्य पूर्वपेक्षा प्रतीत होती थी। (बैचियोची एस. गॉड्स फेस्टिवल्स इन स्क्रिप्चर एंड हिस्ट्री, पार्ट 1. बिब्लिकल पर्सपेक्टिव्स, बेरियन स्प्रिंग्स (एमआई), 1995, पृ. 108)

ऐसा माना जाता है कि चालीस दिन के उपवास का विचार मिस्र के अलेक्जेंड्रिया या ग्रीस से आया होगा और इसका संबंध मूर्तिपूजक देवी इशतार से है। बेबीलोनियों द्वारा यूनानियों और मिस्रियों पर विजय प्राप्त करने के बाद ही शायद उन्होंने इस प्रथा की शुरुआत की होगी।

चूंकि प्रारंभिक ईसाई अखमीरी रोटी के दिनों का पालन करते थे, इसलिए ग्रीको-रोमन लोगों द्वारा विभिन्न तरीकों से पुनर्गठित मूर्तिपूजक उपवासों को प्रतिस्थापित किया गया था।

ध्यान दें कि प्रेरित पौलुस मूर्तिपूजा संबंधी अनुष्ठानों में शामिल होने के खिलाफ चेतावनी देता है:

¹⁴अविश्वासियों के साथ एक असमान दल में शामिल न हों; सच्चाई और कानून तोड़ना कैसे भागीदार हो सकते हैं, या प्रकाश और अंधकार में क्या समानता हो सकती है?¹⁵मसीह बेलियार के साथ समझौता कैसे कर सकते हैं और एक विश्वासी और एक अविश्वासी के बीच क्या साझेदारी हो सकती है?¹⁶परमेश्वर का मंदिर झूठे देवताओं से समझौता नहीं कर सकता, और हम वही हैं - जीवित परमेश्वर का मंदिर। (² Corinthians^{6:14-16}, एनजेबी)

¹⁹इसका क्या अर्थ है? क्या इसका मतलब यह है कि झूठे देवताओं को भोजन अर्पित करने का कोई महत्व है? या फिर झूठे देवताओं का स्वयं कोई महत्व है?²⁰नहीं, ऐसा नहीं है; बात सिर्फ इतनी है कि जब मूर्तिपूजक बलिदान करते हैं, तो उनके द्वारा बलिदान की गई वस्तु उन राक्षसों को अर्पित की जाती है जो ईश्वर नहीं हैं। मैं नहीं चाहता कि तुम शैतान के साथ साझा करोएस। ²¹तुम प्रभु का प्याला और दुष्ट आत्माओं का प्याला एक साथ नहीं पी सकते; तुम प्रभु की मेज और दुष्ट आत्माओं की मेज पर एक साथ भोजन नहीं कर सकते।²²क्या हम सचमुच प्रभु को ईर्ष्यालु बनाना चाहते हैं? क्या हम उससे अधिक शक्तिशाली हैं? (¹ Corinthians^{10:19-22}, एनजेबी)

चाहे मिस्र से हो, रोमन मूर्तिपूजा से हो, या अन्य शैतानी स्रोतों से, उपवास का उद्गम बाइबल से नहीं हुआ। न ही यह यीशु के पहले अनुयायियों की प्रारंभिक परंपराओं से आया।

कुछ लोग सोचते हैं कि वे आध्यात्मिक रूप से इतने मजबूत हैं कि वे मूर्तिपूजा को भी अपना सकते हैं, लेकिन प्रेरित पौलुस के अनुसार वे वास्तव में ईश्वर के क्रोध को भड़का रहे हैं।

ईस्टर

बहुत से लोग यह नहीं जानते कि ईस्टर (इश्तार) वास्तव में फसह होना चाहिए था, जिसे कायरता और यहूदियों के प्रति घृणा के कारण रविवार को स्थानांतरित कर दिया गया था (वही, पृष्ठ 101-103)।

ध्यान दीजिए कि सम्मानित प्रोटेस्टेंट विद्वान जे. गिसेलर ने दूसरी शताब्दी के बारे में क्या बताया:

इस त्योहार का सबसे महत्वपूर्ण दिन निसान माह की 14 तारीख को मनाया जाने वाला फसह का दिन था... इस दिन वे यहूदियों की तरह ही लगातार आठ दिनों तक बिना खमीर की रोटी खाते थे... उनमें पुनरुत्थान के वार्षिक त्योहार का कोई प्रमाण नहीं मिलता... एशिया माइनर के ईसाईयों ने निसान माह की 14 तारीख को अपने फसह के उत्सव के पक्ष में यूहन्ना से प्रार्थना की थी। (गीसेलर, जोहान कार्ल लुडविग। चर्च इतिहास की पाठ्यपुस्तक। हार्पर एंड ब्रदर्स, 1857, पृष्ठ 166)

हालाँकि ईसाई लोग 14 तारीख को फसह मनाते थे निसान के पर्व के अवसर पर, रोमन अधिकारियों की नज़र में यहूदियों के विद्रोह से खुद को अलग रखने की इच्छा से, यरूशलेम, रोम और अलेक्जेंड्रिया (लेकिन एशिया माइनर नहीं) में रहने वाले कई ग्रीको-रोमन लोगों ने फसह के पर्व को रविवार को मनाने का निर्णय लिया। शुरुआत में, उन्होंने फसह का एक रूप तो रखा, लेकिन इसे पुनरुत्थान का त्योहार नहीं माना गया।

जी. स्नाइडर की निम्नलिखित टिप्पणी पर भी ध्यान दें:

पहले ईसाईयों ने यहूदी फसह की चंद्र तिथि पर फसह के भोज (यूकेरिस्ट) के साथ यीशु की मृत्यु का जश्न मनाया (नोट 1 Corinthians 5:7-8)।

आरंभ में पुनरुत्थान का कोई वार्षिक उत्सव नहीं मनाया जाता था।
अंततः, गैर-यहूदी जगत में, पुनरुत्थान का दिन पास्का उत्सव में जोड़ा गया। वह दिन रविवार था। (स्नाइडर जी.एफ. आयरिश जीसस, रोमन जीसस: प्रारंभिक आयरिश ईसाई धर्म का गठन। ट्रिनिटी प्रेस इंटरनेशनल, 2002, पृष्ठ 183)

एशिया माइनर और अन्य जगहों पर कुछ लोगों ने रविवार को तिथि परिवर्तन स्वीकार नहीं किया, इसलिए मिथास की पूजा करने वाले सम्राट कॉन्स्टेंटाइन ने नाइसिया की परिषद बुलाई, जिसने ग्रीको-रोमन लोगों के लिए रविवार घोषित किया। इसके बाद स्वयं कॉन्स्टेंटाइन ने घोषणा की:

तो फिर हमें उस घृणित यहूदी भीड़ से कोई संबंध नहीं रखना चाहिए; क्योंकि हमें अपने उद्धारकर्ता से एक अलग मार्ग प्राप्त हुआ है। (यूसेबियस की कॉन्स्टेंटाइन की जीवनी, तीसरा अध्याय 18)

ईसाइयों को यहूदियों से नफरत नहीं करनी चाहिए और न ही ईश्वर के पवित्र दिन का पालन करना बंद करना चाहिए, सिर्फ इसलिए कि कई यहूदी ऐसा करने का प्रयास करते हैं।

यीशु ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि यहूदी जाति घृणित थी (वे स्वयं एक यहूदी थे) और न ही उन्होंने फसह की तिथि बदली। फिर भी सूर्य-पूजा करने वाले कॉन्स्टेंटाइन ने इसके विपरीत निष्कर्ष निकाला। और रविवार को मनाया जाने वाला यह पर्व अब ईस्टर के नाम से जाना जाता है। लेकिन वास्तव में सूर्य-पूजा की प्रथाओं और उन प्रथाओं से बचने के कारण ही ईस्टर को उस समय मनाया जाता है जब इसे मनाया जाता है।

रोमन कैथोलिक स्रोतों के अनुसार, ईस्टर अंडे, ईस्टर खरगोश और ईस्टर अग्नि जैसी इसकी कई प्रथाएं मूर्तिपूजा से आई हैं (उदाहरण के लिए, होल्वेक एफ. जी. ईस्टर। द कैथोलिक एनसाइक्लोपीडिया, खंड v. रॉबर्ट एपलटन कंपनी। 1909)।

एंग्लिकन बिशप जे.बी. लाइटफुट ने लिखा:

एशिया माइनर के चर्चों ने सप्ताह के दिन की परवाह किए बिना यहूदी फसह के अनुसार अपने ईस्टर उत्सव को विनियमित किया, लेकिन रोम, अलेक्जेंड्रिया और गॉल के चर्चों ने एक अलग नियम का पालन किया; इस प्रकार यहूदी धर्म के किसी भी आभास से भी बचना (जोसेफ बार्बर

लाइटफुट। गलातियों को संत पॉल का पत्र: परिचय, टिप्पणियाँ और शोध प्रबंधों सहित संशोधित पाठ। मैकमिलन द्वारा प्रकाशित, 1881, पृष्ठ 317, 331)

और ईस्टर नाम? यह सूर्योदय की देवी और 'स्वर्ग की रानी' इश्तारा के नाम की ही एक नई वर्तनी है:

इश्तर, वह उर्वरता और युद्ध दोनों की देवी थीं। ... ईस्टर या अस्टार्टे वास्तव में उसी प्राचीन बेबीलोनियन यौन पंथ की पूजा का एक रूप है, जिसकी स्थापना रक्त की प्यासी योद्धा रानी सेमिरामिस ने की थी। (Kush H. Faces of the Hamitic People. Xlibris Corporation, 2010, p. 164)

इश्तर को शुक्र ग्रह का मानवीकरण माना जाता था, और सूर्यदेवता शमाश और चंद्रमा देवता सिन के साथ मिलकर वे एक खगोलीय त्रिमूर्ति का निर्माण करती थीं। (लिटिलटन सी.एस. गॉड्स, गॉडसेस एंड माइथोलॉजी, खंड 6. मार्शल कैवेंडिश, 2005, पृष्ठ 760)

बाइबल 'स्वर्ग की रानी' की सेवा करने के खिलाफ चेतावनी देती है:

¹⁷क्या तुम नहीं देखते कि वे यहूदा के शहरों और यरूशलेम की सड़कों पर क्या कर रहे हैं?¹⁸बच्चे लकड़ियाँ इकट्ठा करते हैं, पिता आग जलाते हैं, और स्त्रियाँ स्वर्ग की रानी के लिए केक बनाने के लिए आटा गूंथती हैं; और वे दूसरे देवताओं को पेय भेंट चढ़ाती हैं, ताकि वे मुझे क्रोधित करें। (Jeremiah^{7:17-19})

ये केक 'हॉट क्रॉस बन्स' के समान थे (प्लेट सी. द साइकोलॉजी ऑफ सोशल लाइफ. डोड एंड मीड, 1922, पृ. 71)। स्वर्ग की रानी?

Jeremiah 7...स्वर्ग की रानी के लिए केक (श्लोक 18)। संभवतः यह बेबीलोन की उर्वरता देवी इश्तार, शुक्र ग्रह की देवी का संदर्भ है। (द वाइक्लिफ बाइबल कमेंट्री, इलेक्ट्रॉनिक डेटाबेस। कॉपीराइट (सी) 1962 मूडी प्रेस द्वारा)

ईसाइयों को किसी ऐसे देवता के नाम पर छुट्टी का नाम नहीं रखना चाहिए था जिसकी प्रथाओं की बाइबिल निंदा करती है। फिर भी, ईसाई धर्म मानने वाले अधिकांश लोगों को इससे कोई आपत्ति नहीं है।

मोंडी गुरुवार और यूखरिस्टिक होस्ट

पासओवर के एक अन्य 'विकल्प' के रूप में, कुछ लोग 'मोंडी थर्सडे' मनाते हैं। यहाँ उनमें से कुछ के बारे में बताया गया है। *कैथोलिक विश्वकोश* इसके बारे में सिखाता है:

मोंडी (या पवित्र) गुरुवार का पर्व पवित्र भोज की स्थापना की स्मृति में मनाया जाता है और यह पवित्र सप्ताह के विशेष अनुष्ठानों में सबसे पुराना है। रोम में इस उत्सव में कई सहायक समारोह जोड़े गए थे... यह धार्मिक अनुष्ठान की स्थापना की वर्षगांठ के अवसर पर मनाया जाता है।

पवित्र गुरुवार का दिन आनंदमय अनुष्ठानों की एक श्रृंखला में व्यतीत हुआ। इनमें नवदीक्षितों का बपतिस्मा, पश्चात्तापियों का मेल-मिलाप, पवित्र तेलों का अभिषेक, पैरों का धोना और पवित्र यूखरिस्ट का स्मरणोत्सव शामिल थे... (लेक्लर्क एच. मोंडी गुरुवार. *कैथोलिक विश्वकोश*. खंड 10. न्यूयॉर्क: रॉबर्ट एपलटन कंपनी, 1911)

'यूखरिस्ट की स्थापना' का मूल अर्थ यीशु द्वारा फसह से जुड़े प्रतीकों में परिवर्तन करना माना जाता है। रोम के चर्च ने स्वीकार किया है कि उसने इसमें कुछ अनुष्ठान जोड़े, यह एक वार्षिक आयोजन था, और इसमें पैर धोने की प्रथा प्रचलित थी। रोम के चर्च ने अन्यत्र स्वीकार किया है कि आम लोग भी पैर धोते थे। लेकिन अब यह प्रथा नहीं रही (थर्स्टन एच. पैरों और हाथों को धोना। *कैथोलिक विश्वकोश*. खंड 15. न्यूयॉर्क: रॉबर्ट एपलटन कंपनी, 1912)।

रोम के चर्च द्वारा अब इस्तेमाल की जाने वाली 'यूकेरिस्टिक होस्ट' मूल ईसाइयों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली होस्ट से भिन्न है।

कैथोलिक विश्वकोश सिखाता है:

पवित्र भोज में अर्पित की जाने वाली रोटी को सामान्यतः होस्ट कहा जाता है, और यद्यपि यह शब्द बलिदान की रोटी और मदिरा के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है, फिर भी यह विशेष रूप से रोटी के लिए ही प्रयुक्त होता है। ओविड के अनुसार, यह शब्द होस्टिस, शत्रु से आया है: "Hostibus a domitis hostia nomen habet", क्योंकि प्राचीन काल में लोग अपने पराजित शत्रुओं को देवताओं को बलि के रूप में अर्पित करते थे। हालाँकि, यह भी संभव है कि होस्टिया शब्द होस्टायर, प्रहार करना, से व्युत्पन्न हो, जैसा कि पैकुवियस में पाया जाता है... पहले ईसाई... भोजन के

रूप में परोसी जाने वाली रोटी का ही उपयोग करते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि इसका स्वरूप आज के स्वरूप से बहुत कम भिन्न था। (लेक्लर्क एच. "होस्ट" कैथोलिक विश्वकोश। खंड 7. निहिल ऑब्स्टेट। 1 जून, 1910)

प्रारंभिक ईसाई खमीर रहित रोटी का इस्तेमाल करते थे, न कि उस गोल रोटी का जो मूर्तिपूजा में इस्तेमाल होने वाले 'सूर्य' के समान दिखती थी।

एजंप्शन ऑफ मैरी

आरंभिक ईसाई मूल रूप से यीशु की माता मरियम का सम्मान नहीं करते थे। तो मरियम के स्वर्गारोहण का विचार कहाँ से आया?

मूलतः, यह चौथी शताब्दी के अपोकलिफ़ल साहित्य से (या संभवतः तीसरी शताब्दी के उत्तरार्ध से) – लेकिन मुख्यतः उससे भी बाद के समय से) मिलता है। यद्यपि कैथोलिक धर्मगुरु एपिफेनियस ने इसकी जाँच करने का प्रयास किया, फिर भी वे इस बात को लेकर अनिश्चित थे कि यह वास्तव में कब विकसित हुआ – यह स्पष्ट रूप से उन महिलाओं से संबंधित था जो मूर्तिपूजक देवी-देवताओं की पूजा करती थीं (एपिफेनियस का पैनारियन, 78.11.4)।

प्राचीन रोमनों में देवी डायना के लिए एक से तीन दिन का उत्सव मनाया जाता था। पहले दिन माना जाता है कि वह पृथ्वी पर आई और तीसरे दिन, 15 अगस्त को, वे स्वर्ग की रानी के रूप में उनके स्वर्गारोहण का जश्न मनाते थे। यह वही दिन है जिस दिन कैथोलिक धर्म में मैरी के स्वर्गारोहण का पर्व मनाया जाता है (केर ई. विलियम फाल्कनर की योक्नापटावफा: "ब्रह्मांड में एक प्रकार का कीस्टोन।" फोर्डहम यूनिवर्सिटी प्रेस, 1985, पृष्ठ 61)। कुछ लोग इसे संयोगवश नहीं मानते (ग्रीन सीएमसी. रोमन धर्म और अरिसिया में डायना की पूजा, खंड 0, अंक 521-85150. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2007, पृष्ठ 62; फ्रेजर जेजी. द मैजिक आर्ट एंड द इवोल्यूशन ऑफ किंग्स v1, खंड 1. केसिंगर पब्लिशिंग, 2006, पृष्ठ 14-17)।

डायना और अन्य कई देवियों के बीच तथा मैरी के प्रति लोगों के दृष्टिकोण में एक संबंध है (फिशर-हैनसेन, पृ. 49)। फिर भी, कैथोलिक संत ऑगस्टीन ने विशेष रूप से डायना को कई "झूठे और कपटी देवताओं" में से एक बताया है (ऑगस्टीन। सुसमाचारों का सामंजस्य, पुस्तक 1, अध्याय 25)।

ऐसा माना जाता है कि रोम के चर्च में इसे औपचारिक रूप से कम से कम आंशिक रूप से इस्लाम के प्रभाव के कारण अपनाया गया था, क्योंकि मुहम्मद की 'कुंवारी'

बेटी फातिमा के भी स्वर्गारोहण की बात कही जाती है। 'स्वर्गारोहण' बाइबिल का कोई पवित्र दिन नहीं है। यह 'स्वर्ग की रानी' (Jeremiah7:17-19) की परंपरा का एक नया रूप है, जो मूर्तिपूजा से जुड़ा हुआ है।

हैलोवीन/ऑल सेंट्स डे

जबकि किसी संत जैसे व्यक्ति के जीवन और मृत्यु की स्मृति का सम्मान करने का विचार धर्मग्रंथ के विपरीत नहीं है (देखें Judges11:38-40), संतों का आदर करना और उन्हें बलिदान देना प्रेरितों की शिक्षाओं के विपरीत है।

शैतान चाहता था कि मसीह उसके सामने झुककर उसकी पूजा करे (Matthew4:9), लेकिन यीशु ने इनकार कर दिया (Matthew4:10)। साइमन मागुस (Acts8:9-23) ने कथित तौर पर अपने अनुयायियों को उसकी पूजा करने के लिए प्रोत्साहित किया (इरेनियस. एडवर्सस हेरेसेस, पुस्तक 1, अध्याय 23, पद 1-5)।

प्रेरित पतरस ने न केवल साइमन मागुस की निंदा की, बल्कि उन्होंने गैर-यहूदियों को उसके सामने झुकने या उसे सम्मान देने से भी मना किया (Acts10:25-26)। प्रेरित पौलुस ने गैर-यहूदियों को उसके और बरनबास के लिए बलिदान चढ़ाने से मना किया (Acts14:11-18)। दोनों प्रेरितों का तर्क था कि वे मनुष्य थे और ऐसा नहीं किया जाना चाहिए। प्रारंभिक मसीही इस बात को समझते थे और उन्होंने ऐसा नहीं किया। समय के साथ, हालांकि, दूसरी शताब्दी के अंत में कुछ विधर्मियों ने अवशेषों की पूजा करना शुरू कर दिया।

चौथी और उसके बाद की शताब्दियों में ग्रीको-रोमन चर्चों में कथित संतों की पूजा एक महत्वपूर्ण समस्या बनने लगी, इस तथ्य के बावजूद कि यह एक प्रेरितिक प्रथा नहीं थी।

निम्नलिखित पर ध्यान दें:

गिरजाघरों और गिरजाघरों में सेल्टिक देवताओं, ग्रीन मैन और दो सिर वाले मूर्तियों जैसी परिचित मूर्तिपूजक छवियों को शामिल करके, गिरजाघर के अधिकारियों ने जनता को दो आध्यात्मिक परंपराओं को आपस में मिलाने के लिए प्रोत्साहित किया। उनका मानना था कि इससे नए धर्म को स्वीकार करना आसान हो जाएगा और पुराने तरीकों से नए तरीकों में परिवर्तन सुगम हो जाएगा। (पेज़नेकर एस. गार्गोयल्स: फ्रॉम द आर्काइव्स ऑफ द ग्रे स्कूल ऑफ विजार्डी. कैरियर प्रेस, 2006, पृ. 85)

एक पुस्तक में, उपरोक्त कथन पोप "ग्रेगरी द ग्रेट" द्वारा लगभग 600 ईस्वी में लिखे गए निम्नलिखित कथन के संक्षिप्त संस्करण से पहले दिया गया था:

ऑगस्टीन से कहो कि वह किसी भी हालत में देवताओं के मंदिरों को नष्ट न करे, बल्कि उन मंदिरों के भीतर की मूर्तियों को नष्ट करे। पवित्र जल से उन्हें शुद्ध करने के बाद, उनमें वेदी और संतों के अवशेष स्थापित करे। क्योंकि, यदि वे मंदिर अच्छी तरह से बने हों, तो वे परिवर्तित हो जाएंगे। **राक्षसों की पूजा से सच्चे ईश्वर की सेवा में...** इसलिए, वे अपने गिरजाघरों के समर्पण दिवस पर, या उन शहीदों के पर्व पर जिनके अवशेष उनमें संरक्षित हैं, अपने पुराने मंदिरों के चारों ओर झोपड़ियाँ बनाएँ और धार्मिक भोज के साथ इस अवसर को मनाएँ। **वे अब शैतान को बलि चढ़ाने के लिए नहीं, बल्कि परमेश्वर की महिमा के लिए जानवरों की बलि देंगे और उन्हें खाएंगे।** सभी चीजों के दाता के रूप में, वे उन्हें तृप्त होने के लिए धन्यवाद देंगे। (ग्रेगरी प्रथम: मठाधीश मेलिटस को पत्र। एप्सिटोला 76, पीएल 77: 1215-1216)

पोप ग्रेगरी ने मूर्तिपूजा की प्रथाओं को शामिल करने का समर्थन किया। लेकिन बाइबल इसका विरोध करती है और इस प्रकार के बलिदानों को शैतानी मानती है (1 Corinthians 10:20-21)। इसके अलावा, बाइबल सिखाती है कि यीशु के बलिदान के बाद पशु बलि की कोई आवश्यकता नहीं है (Hebrews 10:1-10)। उपरोक्त को 'संत दिवस' के रूप में स्वीकार करना यह दर्शाता है कि यह भी मूर्तिपूजा का अवशेष है और वास्तव में ये शैतानी त्यौहार हैं।

हैलोवीन पर कई लोग बाइबल के अनुसार अनुचित पोशाक पहनते हैं (देखें 1 Timothy 2:9) और कभी-कभी चुड़ैलों का वेश भी धारण करते हैं (जिसकी बाइबल निंदा करती है—Exodus 22:8)। यह बाइबल के अनुसार उचित उत्सव नहीं है और निश्चित रूप से प्रारंभिक ईसाई धर्म में भी ऐसा नहीं था।

ऑल सेंट्स डे की घोषणा सातवीं शताब्दी में की गई थी, और बाद में इसे 1 नवंबर को स्थानांतरित कर दिया गया। और उससे पहले की शाम को हैलोवीन के नाम से जाना जाने लगा (मर्समैन एफ. ऑल सेंट्स डे. द कैथोलिक एनसाइक्लोपीडिया. खंड 1. निहिल ऑब्स्टेट. 1 मार्च, 1907)।

31 अक्टूबर वह तिथि थी जिसे प्राचीन ड्रुइड लोग मनाते थे:

प्राचीन गॉल और ब्रिटेन में रहने वाले पुरोहितों के एक संप्रदाय, ड्रुइड्स का मानना था कि हैलोवीन पर भूत, आत्माएं, परियां, चुड़ैलें और बौने लोगों को नुकसान पहुंचाने के लिए निकलते हैं। ... इन्हीं ड्रुइड मान्यताओं से हैलोवीन उत्सवों में चुड़ैलों, भूतों और बिल्लियों का वर्तमान उपयोग शुरू हुआ। हैलोवीन की सजावट के रूप में पत्तियों, कद्दू और मक्के के डंठलों का उपयोग करने की प्रथा ड्रुइड्स से ही आई है। यूरोप के प्रारंभिक लोगों का भी ड्रुइड त्योहार के समान एक त्योहार था। 700 के दशक में, रोमन कैथोलिक चर्च ने 1 नवंबर को ऑल सेंट्स डे के रूप में नामित किया। प्राचीन मूर्तिपूजा की परंपराओं और ईसाई पर्व दिवस को मिलाकर हैलोवीन उत्सव मनाया जाता है। (हैलोवीन. वर्ल्ड बुक एनसाइक्लोपीडिया, खंड 9. शिकागो, 1966: 25-26)

यह जानना रोचक हो सकता है कि एक कैथोलिक लेखक ने क्या लिखा था:

एक पोप कैथोलिक मृतकों के उत्सव को मूर्तिपूजकों के मृतकों के उत्सवों से ऊपर क्यों रखेगा? क्योंकि कैथोलिक पर्व निरंतरता में हैं और मूर्तिपूजकों के पर्वों के अर्थ को पूरा करते हैं। (किलियन ब्रायन। शरद ऋतु के उत्सव के रूप में हैलोवीन, ईश्वर के नाम की पवित्रता की याद दिलाता है। कैथोलिक ऑनलाइन इंटरनेशनल न्यूज। 31/10/06)

यह एक सच्चाई है कि रोम के चर्च से जुड़े कई लोग अपने विश्वास के लिए मूर्तिपूजा से संबंध होने पर गर्व करते हैं और उस पर गर्व करते हैं। बाइबल ही वह स्रोत है जिसकी ओर उन्हें और सभी को अपने सिद्धांतों के लिए देखना चाहिए (देखें 2 Timothy 3:16), और बाइबल मूर्तिपूजा के तरीकों की निंदा करती है (Deuteronomy 12:29-32; Jeremiah 10:2-6; 1 Corinthians 10:21; 2 Corinthians 6:14-18)।

क्रिसमस

बाइबल कभी भी जन्मदिन मनाने का समर्थन नहीं करती, यहाँ तक कि यीशु के जन्मदिन का भी नहीं। रोम के प्रारंभिक चर्च में क्रिसमस या कोई अन्य जन्मदिन नहीं मनाया जाता था। तीसरी शताब्दी के उत्तरार्ध में भी जन्मदिन मनाने की निंदा की जाती थी। अर्नोबियस द्वारा (विधर्मियों के विरुद्ध, पुस्तक 1, अध्याय 64)।

इसके अलावा, टर्टुलियन ने चेतावनी दी कि पुष्पमालाओं और उपहारों के साथ शीतकालीन उत्सवों में भाग लेने से व्यक्ति मूर्तिपूजक देवताओं का ऋणी हो जाता

है। ऐसा ही एक उत्सव था जिसे सैटर्नलिया के नाम से जाना जाता था और जिसे मूर्तिपूजक लोग दिसंबर के अंत में मनाते थे।

लैटिन धर्मशास्त्र के कथित "जनक" टर्टुलियन ने शीतकालीन उत्सवों की निंदा की, जैसे कि सैटर्नलिया (एक मूर्तिपूजक देवता जिसका नाम प्रचुरता का अर्थ था) जो उनके लेखन के दौरान क्रिसमस में परिवर्तित हो गया:

मिनर्वालिया उतनी ही मिनर्वा की हैं जितनी शनिलिया शनि की; शनिलिया, जिसे शनिलिया के समय छोटे दासों द्वारा भी अनिवार्य रूप से मनाया जाता है। नव वर्ष के उपहार भी एकत्र किए जाते हैं, और सेप्टिमोर्टियम मनाया जाता है; और मध्य शीतकाल और प्रिय रिश्तेदारी के पर्व के सभी उपहार प्राप्त किए जाते हैं; स्कूलों को फूलों की मालाओं से सजाया जाता है; फ्लेमेन्स की पत्नियाँ और एडील्स बलिदान करते हैं; निर्धारित पवित्र दिनों पर स्कूल का सम्मान किया जाता है। यही सब मूर्ति के जन्मदिन पर भी होता है; शैतान के हर वैभव में भाग लिया जाता है। कौन सोचेगा कि ये बातें एक ईसाई स्वामी के लिए उपयुक्त हैं, सिवाय उसके जो इन्हें एक गैर-स्वामी के लिए भी उपयुक्त समझेगा? (टर्टुलियन। मूर्तिपूजा पर, अध्याय 10)

टर्टुलियन के समय के आसपास, रोमन बिशप ज़ेफिरिनस (199-217) और कैलिस्टस (217-222) समझौतावादी और भ्रष्ट होने के लिए बदनाम थे (और इसकी पुष्टि हिप्पोलिटस जैसे रोमन कैथोलिक संतों द्वारा की गई है (हिप्पोलिटस: सभी विधर्मों का खंडन, पुस्तक IX, अध्याय VI)) और उन्होंने अपने चर्च में उन लोगों को अनुमति दी जिन्होंने मूर्तिपूजा आदि से समझौता किया था।

रोमन सैटर्नलिया और फारसी मिथ्राइज्म स्वयं एक और भी प्राचीन मूर्तिपूजक धर्म, प्राचीन बेबीलोनियाई रहस्यवादी पंथ के रूपांतरण थे। प्राचीन बेबीलोनियाई लोग एक सदाबहार वृक्ष की पूजा करके नवजात तम्मूज़ के रूप में पुनर्जन्म लिए निम्रोद का उत्सव मनाते थे। बाइबल सदाबहार वृक्षों से संबंधित पूजा की निंदा करती है (Deuteronomy 12:2-3; Jeremiah 3:13; 10:2-6)।

बेबीलोनवासी शीतकालीन संक्रांति के मौसम के दौरान सूर्य के पुनर्जन्म का उत्सव भी मनाते थे। 25 दिसंबर अंततः इसी तिथि को यीशु के जन्मदिन के रूप में चुना गया, क्योंकि उस समय सैटर्नलिया और सूर्य देवता की अन्य पूजा-अर्चना होती थी।

सन् 354 ईस्वी में, रोम के बिशप लिबेरियस ने लोगों को 25 दिसंबर को उत्सव मनाने का आदेश दिया। उन्होंने संभवतः यह तिथि इसलिए चुनी क्योंकि रोम के लोग पहले से ही इसे शनि पर्व के रूप में मनाते थे, जो सूर्य का जन्मदिन होता है। (सेक्रिस्ट ई.एच. क्रिसमस. वर्ल्ड बुक एनसाइक्लोपीडिया, खंड 3. फील्ड एंटरप्राइजेज एजुकेशनल कॉर्पोरेशन, शिकागो, 1966, पृष्ठ 408-417)

हेलियोस मिथ्रास एक ही देवता हैं... रविवार को मिथ्रा के सम्मान में पवित्र रखा जाता था, और प्रत्येक माह की सोलहवीं तारीख उनके लिए मध्यस्थ के रूप में पवित्र थी। **25 दिसंबर को उनका जन्मदिन, नवजन्म का दिन, यानी शीत ऋतु के कठोर प्रभावों से अप्रभावित शीतकालीन सूर्य का पुनर्जन्म, मनाया जाता था।** (एरेन्डजेन जे. मिथ्राइज़्म. द कैथोलिक एनसाइक्लोपीडिया, खंड x. निहिल ऑब्स्टेट, 1 अक्टूबर, 1911)

सम्राट कॉन्स्टेंटाइन सूर्य देवता मिथ्रास के अनुयायी थे, जिन्हें अजेय सूर्य माना जाता था और जिनका जन्म भूमिगत गुफा में एक चट्टान से हुआ था। शायद इसी कारण उनकी माता हेलेना ने इस मिथक पर विश्वास किया कि यीशु का जन्म भूमिगत चट्टानी गुफा में हुआ था।

रोम अब यही सिखाता है (और इस लेखक ने वेटिकन सिटी में कई बार 'जन्म' का प्रदर्शन देखा है), लेकिन तीसरी शताब्दी में इसके समर्थकों में से एक, कॉमोडियनस ने चट्टान देवता की निंदा की थी:

यदि उसे देवता माना जाए, तो वह अजेय चट्टान से उत्पन्न हुआ था। अब हमें यह बताइए कि इन दोनों में से पहला कौन है? चट्टान ने देवता को पराजित किया है: तो चट्टान के रचयिता की खोज करनी होगी। इसके अलावा, आप उसे चोर के रूप में भी चित्रित करते हैं; हालाँकि, यदि वह देवता होता, तो वह निश्चित रूप से चोरी से जीवन यापन नहीं करता। निश्चय ही वह पृथ्वी का था, और उसका स्वभाव राक्षसी था। और उसने अन्य लोगों के बैलों को अपनी गुफाओं में डाल दिया; ठीक वैसे ही जैसे वल्कन के पुत्र कैकस ने किया था। (कॉमोडियनस: ईसाई अनुशासन पर)

यीशु का जन्म किसी चट्टान से नहीं हुआ था, फिर भी उनके जन्म को आंशिक रूप से इसी तरह चित्रित किया जाता है। यह सिखाना भी सही नहीं है कि उनका जन्म 25 दिसंबर को हुआ था। विद्वान मानते हैं कि चरवाहे 25 दिसंबर तक अपने झुंडों के साथ खेतों में नहीं जाते थे (जैसा कि बाइबिल Luke 2:8 में दर्शाती है)। और

बाइबिल में उल्लिखित (Luke2:1-5) “सर्दियों में जनगणना असंभव होती” (क्रिसमस। कैथोलिक विश्वकोश, 1908)।

यह बात सच्चे विद्वान भी स्वीकार करेंगे कि क्रिसमस से जुड़ी कई प्रथाएं और रीति-रिवाज मूर्तिपूजा से उत्पन्न हुए हैं। न तो यीशु के शिष्यों ने और न ही उनके शुरुआती अनुयायियों ने क्रिसमस मनाया।

पुनः प्रस्तुत किए गए पैगन अवकाश

हालाँकि बाइबल धर्मनिरपेक्ष छुट्टियों (जैसे संयमित स्वतंत्रता दिवस समारोह) पर रोक नहीं लगाती, फिर भी प्रारंभिक ईसाई न तो मृत संतों की पूजा करते थे और न ही सर्व संत दिवस या क्रिसमस जैसे किसी उत्सव को मनाते थे। कई मूर्तिपूजक देवताओं को मूलतः 'किसी वस्तु के देवता' से बदलकर 'किसी वस्तु के संत' कहा जाने लगा।

कुछ मूर्तिपूजा संबंधी प्रथाएँ भले ही बदल गई हों, लेकिन नए रूप में प्रस्तुत किए गए ये शैतानी त्योहार न तो ईसाई धर्म के हैं और न ही वे त्योहार हैं जिन्हें यीशु और उनके शुरुआती अनुयायी मनाते थे। कई त्योहार जो लोग मनाते हैं, वे मूर्तिपूजा से आए हैं और यहाँ तक कि प्राचीन बेबीलोन के रहस्यवादी धर्म से भी जुड़े हैं। जब परमेश्वर ने बेबीलोन से प्रभावित इस्राएलियों की मदद के लिए नहेमायाह को भेजा, तो ध्यान दीजिए कि नहेमायाह ने क्या किया:

30मैंने उन्हें मूर्तिपूजा की हर चीज से शुद्ध किया। (Nehemiah^{13:30})

नया नियम विश्वास में कमी और “महान रहस्यमयी बाबुल” (Revelation17:5) के बारे में चेतावनी देता है। ध्यान दीजिए कि बाइबल “महान बाबुल” के संबंध में परमेश्वर के लोगों को क्या करने की शिक्षा देती है:

4हे मेरे लोगो, उससे बाहर निकल आओ, ऐसा न हो कि तुम उसके पापों में भागीदार बनो और उसकी विपत्तियों का शिकार बनो। (Revelation^{18:4})

ईसाइयों को प्रलोभन और पाप से दूर रहना चाहिए (1 Corinthians6:18; 2 Timothy2:22), न कि उसे अपनाना चाहिए और न ही उसका प्रचार करना चाहिए। उन्हें सच्चे परमेश्वर की उपासना के साथ मूर्तिपूजा की प्रथाओं को नहीं जोड़ना चाहिए (1 Corinthians10:19-21; 2 Corinthians6:14-18), भले ही यह एक परंपरा हो (Matthew15:3-9)।

11. क्या ये ईश्वर के पवित्र दिन हैं या झूठ?

विश्वासियों को किन दिनों का पालन करना चाहिए?

1600 साल से भी पहले, ईश्वर के पवित्र दिनों की निंदा यहूदी-विरोधी जॉन क्राइसोस्टोम ने की थी, जिन्हें अब कैथोलिक और ऑर्थोडॉक्स संत माना जाता है। कुछ साल पहले, प्रोटेस्टेंट प्रकाशन क्रिश्चियनिटी टुडे ने वास्तव में जॉन क्रिसोस्टोम को "प्रारंभिक चर्च का सबसे महान उपदेशक" कहा (जॉन क्रिसोस्टोम प्रारंभिक चर्च का सबसे महान उपदेशक। क्रिश्चियनिटी टुडे, 8 अगस्त, 2008)।

387 ईस्वी में जॉन क्राइसोस्टोम ने सार्वजनिक रूप से शरद ऋतु के पवित्र दिनों के विरुद्ध प्रचार किया, क्योंकि कुछ लोग जो मसीह में विश्वास करते थे, वे उनका पालन कर रहे थे। उन्होंने विशेष रूप से तुरही पर्व, प्रायश्चित्त दिवस ('द्वार पर उपवास') और तंबू पर्व का उल्लेख किया।

दयनीय और दुखी यहूदियों के त्यौहार एक के बाद एक तेज़ी से हम पर आने वाले हैं: तुरही का त्यौहार, तंबू का त्यौहार, और उपवास। हमारे बीच कई ऐसे लोग हैं जो कहते हैं कि वे हमारी तरह सोचते हैं। फिर भी, इनमें से कुछ त्यौहार देखेंगे और कुछ यहूदियों के साथ उनके त्यौहार मनाएंगे और उपवास रखेंगे। मैं इस विकृत प्रथा को अभी चर्च से निकालना चाहता हूँ... यदि यहूदी समारोह आदरणीय और महान हैं, तो हमारे समारोह झूठे हैं... क्या ईश्वर उनके त्यौहारों से घृणा करता है और क्या आप उनमें भाग लेते हैं? उसने किसी एक त्यौहार के बारे में नहीं कहा, बल्कि सभी त्यौहारों के बारे में कहा।

यहूदियों का दुष्ट और अपवित्र उपवास अब हमारे दरवाज़े पर दस्तक दे रहा है। यद्यपि यह उपवास है, इसलिए आश्चर्य न करें कि मैंने इसे अपवित्र कहा है... लेकिन अब जब शैतान तुम्हारी पत्नियों को तुरही के भोज में बुला रहा है और वे इस बुलावे पर तुरंत ध्यान दे रही हैं, तो तुम उन्हें रोक नहीं रहे हो। तुम उन्हें अधर्म के आरोपों में उलझने दे रहे हो, तुम उन्हें अनैतिक मार्गों में घसीटने दे रहे हो। (जॉन क्राइसोस्टोम। यहूदियों के विरुद्ध उपदेश II, 1:1; 3:4। रविवार, 5 सितंबर, 387 ईस्वी को सीरिया के एंटीओक में दिया गया।)

यह समझना महत्वपूर्ण है कि जॉन क्रिसोस्टम को यह अवश्य ही ज्ञात रहा होगा कि उनके क्षेत्र में दूसरी शताब्दी का चर्च यहूदियों के साथ ही फसह का पर्व मनाता था, और कैथोलिक चर्च अभी भी पेंटेकोस्ट मनाता था। इस प्रकार, अपने उपदेशों के माध्यम से, जॉन क्रिसोस्टम ने अपने ही चर्च के विरुद्ध उपदेश दिया, क्योंकि रोमन और ऑर्थोडॉक्स कैथोलिक चर्च का दावा है कि वे फसह और पेंटेकोस्ट दोनों पर्व मनाते हैं—क्योंकि ये दोनों पर्व "सभी के एक साथ" का हिस्सा हैं।

इसके अलावा, जॉन क्रिसोस्टम ने वास्तव में एक बार पेंटेकोस्ट नामक "यहूदियों के त्योहार" के पक्ष में लिखा था (क्रिसोस्टोम जे. सेंट जॉन क्रिसोस्टम, कॉन्स्टेंटिनोपल के आर्कबिशप के उपदेश: प्रेरितों के कार्य पर)। इस प्रकार, उन्होंने स्वीकार किया कि यीशु के पुनरुत्थान के बाद, विश्वासियों को उस समय "यहूदी पर्व" माने जाने वाले आयोजन में उपस्थित होना आवश्यक था।

यदि ईश्वर उन सभी दिनों के विरुद्ध था, तो प्रेरितों ने उनका पालन क्यों किया? इसका स्पष्ट कारण यह है कि वे यीशु के उदाहरण का अनुसरण कर रहे थे और उनके पास यह मानने का कोई कारण नहीं था कि वे दिन किसी प्रकार समाप्त हो गए थे।

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, नए नियम में तथाकथित "यहूदी" पवित्र दिनों में से एक को "महान" कहा गया है। कैथोलिक अनुवाद से निम्नलिखित पर ध्यान दें:

³⁷ और अंत में, उत्सव के महान दिन में यीशु खड़े हुए और चिल्लाए (John 7:37, रीम्स नया नियम)।

तो फिर कौन सही है?

वे लोग जो यीशु के सिद्धांतों का पालन करते हैं या वे लोग जो उनकी निंदा करते हैं?

याद कीजिए कि इस मामले में जॉन क्रिसोस्टम ने कुछ हद तक सही कहा था:

"यदि यहूदी रीति-रिवाज आदरणीय और महान हैं, तो हमारे रीति-रिवाज झूठ हैं।"

तो किन दिनों का पालन किया जाना चाहिए? बाइबल के अनुसार किन दिनों में "महान दिन" है?

इनमें से कौन से दिन झूठ हैं?

जॉन क्रिसॉस्टम ने क्रिसमस और ईस्टर जैसे मूर्तिपूजा से जुड़े दिनों का समर्थन किया। 25 दिसंबर को क्रिसमस मनाने का उनका तर्क भी स्पष्ट रूप से गलत था और झूठ और गलत सूचनाओं पर आधारित था (एडिस डब्ल्यू. ई., अर्नोल्ड टी. ए. कैथोलिक डिक्शनरी: कंटेनिंग सम अकाउंट ऑफ द डॉक्ट्रिन, डिसिप्लिन, राइट्स, सेरेमनीज, काउंसिल्स, एंड रिलीजियस ऑर्डर्स ऑफ द कैथोलिक चर्च। बेंजिगर ब्रदर्स, 1893, पृ. 178)।

यह स्पष्ट होना चाहिए कि ईश्वर के दिन झूठ नहीं हैं, लेकिन जॉन क्राइसोस्टोम के (और उन चर्चों के जिन्होंने उनके द्वारा प्रचारित दिनों को अपनाया) दिन स्पष्ट रूप से झूठ थे। यहां तक कि कैथोलिक संत थॉमस एक्विनास ने भी लिखा कि सब्ब और मूल रूप से बाइबिल के सभी पवित्र दिन ईसाइयों के लिए अर्थ (सेंट थॉमस एक्विनास की सुम्मा थियोलॉजिका)।

दिलचस्प कैथोलिक विश्वकोश रिपोर्ट में कहा गया है, "पॉलिसियनों को अक्सर प्रारंभिक और शुद्ध ईसाई धर्म के अवशेष के रूप में वर्णित किया गया है (फोर्टेस्क्यू ए. पॉलिसियन)। एक 11वां सदी के ग्रीको-रोमन विद्वान ने लिखा कि पॉलिसियन "ईश्वर की हमारी उपासना को मूर्तिपूजा के रूप में प्रस्तुत करते हैं। मानो हम, जो क्रूस के चिन्ह और पवित्र चित्रों का सम्मान करते हैं, अभी भी शैतानों की उपासना में लगे हुए हैं" (कोनीबेयर एफ.सी. परिशिष्ट 9 III: द की ऑफ ट्रुथ: ए मैनुअल ऑफ द पॉलिसियन चर्च ऑफ आर्मेनिया। क्लेरेंडन प्रेस, ऑक्सफोर्ड, 1898, पृष्ठ 149)।

यह अहसास कि मसीह में विश्वास रखने वाले कई लोग अनुचित रूप से शैतानी त्योहारों का पालन करते थे, नया नहीं है और सदियों से कुछ लोगों द्वारा इसकी निंदा की जाती रही है।

परंपराएं और/या बाइबिल?

पृथ्वी पर अपेक्षाकृत कम लोग ही ईश्वर के पवित्र दिनों को मनाने का प्रयास करते हैं। जो लोग बाइबिल से संबंधित धर्म का पालन करने का दावा करते हैं, उनमें से अधिकांश अन्य दिनों का पालन करते हैं।

कुछ लोग परिवार के दबाव के कारण गैर-बाइबल संबंधी धार्मिक त्योहार मनाते हैं। वहीं कुछ लोग समाज और/या नियोक्ताओं के दबाव के कारण बाइबल में वर्णित पवित्र दिनों का पालन नहीं करते हैं।

यीशु ने चेतावनी दी थी कि जो लोग उनका अनुसरण करते हैं, उन्हें परिवार के सदस्यों (Matthew 10:36) और संसार से समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। उन्होंने उनसे यह नहीं कहा कि वे ऐसे संसार से समझौता करें जो उनके सच्चे अनुयायियों से घृणा करेगा (John 15:18-19), बल्कि उन्हें पूर्णता के लिए प्रयास करने को कहा (Matthew 5:48)।

न्यू लिविंग ट्रांसलेशन परमेश्वर के लोगों के बारे में निम्नलिखित बातें सिखाता है:

३वे बुराई से समझौता नहीं करते, और केवल उन्हीं के मार्ग पर चलते हैं।
(Psalm^{119:3})

क्या आप बुराई से समझौता करने को तैयार हैं? शैतान पाप को अच्छा दिखाने की कोशिश करता है (Genesis 3:1-6) और "प्रकाश के दूत" के रूप में प्रकट होता है (2 Corinthians 11:14-15)। क्या आप उसके त्योहारों को मनाएंगे, भले ही वे आपको अच्छे लगें?

ग्रीको-रोमन धर्मों में यह माना जाता है कि उनके त्योहारों का पालन परंपरा पर आधारित है—लेकिन अक्सर ये परंपराएँ मूर्तिपूजा से उत्पन्न हुई थीं। चूंकि उनके धर्मों के कई भूतपूर्व (और वर्तमान) नेताओं ने इन परंपराओं का समर्थन किया है, इसलिए कई लोग ऐसा व्यवहार करते हैं मानो ये परंपराएँ ईश्वर को स्वीकार्य हों।

जबकि परमेश्वर के वचन के अनुरूप परंपराएँ ठीक हैं (देखें 1 Corinthians 11:2; 2 Thessalonians 2:15), बाइबल के विपरीत परंपराओं का पालन नहीं किया जाना चाहिए। ध्यान दें कि नया नियम इसे स्पष्ट करता है:

४सावधान रहो, कहीं कोई तुम्हें दर्शनशास्त्र और खोखले छल से धोखा न दे, जो मनुष्य की परंपराओं के अनुसार, संसार के मूल सिद्धांतों के अनुसार, न कि मसीह के अनुसार चलते हैं। (Colossians^{2:8})

५उसने उत्तर देते हुए उनसे कहा, "तुम भी अपनी परंपरा के कारण परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन क्यों करते हो?...?" हे पाखंडियों! यशायाह ने तुम्हारे विषय में ठीक ही भविष्यवाणी की थी, और कहा था:

६ये लोग अपने मुख से मेरे निकट आते हैं, और अपने होठों से मेरा आदर करते हैं, परन्तु उनका हृदय मुझसे दूर है।^७ और वे व्यर्थ ही मेरी उपासना करते हैं, मनुष्यों की आज्ञाओं की शिक्षा के रूप में देते हैं।
(Matthew^{15:3, 7, 9})

परमेश्वर के वचन में उल्लेख है कि बहुत से लोगों ने ऐसी परंपराओं को स्वीकार कर लिया है जिन्हें उन्हें स्वीकार नहीं करना चाहिए और यह उन लोगों को पश्चाताप करने के लिए प्रोत्साहित करता है जब उन्हें इसका एहसास हो जाता है।

¹⁹हे प्रभु, मेरी शक्ति और मेरा गढ़, संकट के दिनों में मेरी शरण, पृथ्वी के छोरों से अन्यजाति तेरे पास आकर कहेंगे, “निःसंदेह हमारे पूर्वजों को झूठ, व्यर्थता और निष्फल वस्तुएँ विरासत में मिली हैं।” (Jeremiah^{16:19})

बाइबल सिखाती है कि विदेशी धार्मिक अनुष्ठान शैतानी हैं:

¹⁶उन्होंने पराये देवताओं के द्वारा उन्हें ईर्ष्या दिलाई; घृणित कृत्यों द्वारा उन्होंने उन्हें क्रोधित किया।¹⁷उन्होंने परमेश्वर को नहीं, दुष्ट आत्माओं को बलि चढ़ाई; उन देवताओं को जिन्हें वे नहीं जानते थे; उन नए देवताओं को जिनसे तुम्हारे पूर्वज भयभीत नहीं होते थे। (Deuteronomy^{32:16-17})

इस अवधारणा की पुष्टि दिवंगत रोमन कैथोलिक फ्रांसीसी कार्डिनल जीन-गुएनोल-मैरी डैनियलौ द्वारा की गई थी:

मूर्तिपूजक जगत और ईसाई चर्च पूरी तरह से असंगत हैं; कोई भी एक ही समय में ईश्वर और मूर्तियों दोनों की पूजा नहीं कर सकता। (डेनिएलू जे. लैटिन ईसाई धर्म की उत्पत्ति। डेविड स्मिथ और जॉन ऑस्टिन बेकर द्वारा अनुवादित। वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1977, पृष्ठ 440)

वास्तव में, मूर्तिपूजक दुनिया और ईसाई चर्च पूरी तरह से असंगत हैं; कोई भी एक ही समय में ईश्वर और मूर्तियों दोनों की सेवा नहीं कर सकता।

फिर भी, आज भी कई लोग, जिनमें उनके चर्च के लोग भी शामिल हैं, ऐसा करते हैं जब वे उन मूर्तिपूजा संबंधी त्योहारों को मनाते हैं जिन्हें ईसाई शब्दों और कुछ रीति-रिवाजों में बदलाव के साथ संशोधित किया गया है। यह समझें कि यीशु ने कहा, "यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो तुम सचमुच मेरे शिष्य हो। और तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।" (John 8:31-32)। परमेश्वर के पवित्र दिन हमें मूर्तिपूजा से मुक्ति दिलाते हैं।

ध्यान दें कि प्रेरित पौलुस ने चेतावनी दी थी:

¹⁴अविश्वासियों के साथ असमान रूप से जुए में न बंधो। क्योंकि धार्मिकता का अधर्म के साथ क्या मेल है? और प्रकाश का अंधकार के साथ क्या संबंध

है?¹⁵ और मसीह का बेलियाल से क्या मेल है? या विश्वासी का अविश्वासी से क्या संबंध है?¹⁶ और परमेश्वर के मंदिर का मूर्तियों के साथ क्या समझौता हो सकता है? क्योंकि तुम जीवित परमेश्वर का मंदिर हो। जैसा कि परमेश्वर ने कहा है:

मैं उनमें निवास करूंगा और उनके बीच चलूंगा। मैं उनका ईश्वर रहूंगा, और वे मेरी प्रजा होंगे।

¹⁷ इसलिए

"उनके बीच से निकल आओ और अलग हो जाओ, प्रभु कहता है। अशुद्ध चीजों को मत छुओ, और मैं तुम्हें स्वीकार करूंगा।"

¹⁸ सर्वशक्तिमान प्रभु कहते हैं, "मैं तुम्हारा पिता बनूंगा, और तुम मेरे पुत्र और पुत्रियाँ बनोगे।" (2 Corinthians^{6:14-18})

ध्यान दें कि ईश्वर उन लोगों के लिए पिता समान होगा जो मूर्तिपूजा की प्रथाओं में शामिल नहीं होंगे। उन लोगों के लिए पिता समान नहीं होगा जो उन्हें उपासना के हिस्से के रूप में अपनाते हैं।

हालांकि कुछ लोग यह मानकर चलते हैं कि मूर्तिपूजकों की प्रथाओं का पालन करने से ईश्वर प्रसन्न होता है, लेकिन वे स्वयं को धोखा दे रहे हैं:

³² तुम कहते हो, "हम उन राष्ट्रों, उन संसार के लोगों के समान बनना चाहते हैं, जो लकड़ी और पत्थर की पूजा करते हैं।" परन्तु तुम्हारी यह इच्छा कभी पूरी नहीं होगी। (Ezekiel^{20:32}, एनआईवी)

²⁶ उनके पुजारी मेरी व्यवस्था का उल्लंघन करते हैं और मेरी पवित्र वस्तुओं का अपमान करते हैं; वे पवित्र और साधारण में भेद नहीं करते; वे सिखाते हैं कि अशुद्ध और शुद्ध में कोई अंतर नहीं है; और वे मेरे सप्ताह के दिनों का पालन करने से आँखें मूंद लेते हैं, जिससे उनके बीच मेरा अपमान होता है। (Ezekiel^{22:26}, एनआईवी)

परमेश्वर कहते हैं कि इससे फर्क पड़ता है। मूर्तिपूजा की प्रथाओं को अपनाने से उन्हें प्रसन्नता होने के बजाय उनका क्रोध भड़क उठेगा (Ezekiel 30:13)! सांसारिक और कामुक प्रथाओं का बचाव करना शैतानी है (James 3:13-15 देखें)।

क्या ये ईश्वर के पवित्र दिन हैं?

बाइबल परमेश्वर के पर्वों को 'पवित्र सभाएँ' (जैसे Numbers 28:26; 29:12) या 'पवित्र त्यौहार' (तुलना करें Isaiah 30:29) के रूप में संदर्भित करती है।

बाइबल बार-बार मूर्तिपूजा की प्रथाओं की निंदा करती है और उन्हें गलत तथा शैतानी बताती है (1 Corinthians 10:20-21; 1 Timothy 4:1)। बाइबल कहती है कि परमेश्वर की उपासना में बाइबल से इतर उत्सवों को शामिल नहीं करना चाहिए (Deuteronomy 32; Jeremiah 10; 1 Corinthians 10:20-21)।

फिर भी कई लोगों ने एक ऐसे उपासना कैलेंडर का पालन करने का निर्णय लिया है जिसे बाइबल

इसका समर्थन नहीं करता। उन प्रथाओं का उपयोग करना जिन्हें प्रेरित यूहन्ना मसीह-विरोधी लोगों से जोड़ता है (1 John 2:18-19)।

बाइबल में वर्णित न होने वाले इन त्योहारों को शैतानों द्वारा बढ़ावा दिया जाता है और इन्होंने युगों से अरबों लोगों के लिए ईश्वर की योजना को अस्पष्ट करने में मदद की है।

यीशु ने कहा कि परमेश्वर चाहता है कि उसकी उपासना सत्यपूर्वक की जाए:

२४ ईश्वर आत्मा है, और जो उपासना करते हैं उन्हें आत्मा और सच्चाई से उपासना करनी चाहिए। (John 4:२४, एनजेबी)

शैतानी रीति-रिवाजों के नए रूप धारण करने से सच्चे ईश्वर का सम्मान नहीं होता। ईश्वर चाहता है कि आप उस पर भरोसा करें और उसके बताए तरीके से काम करें, न कि अपने तरीके से (Proverbs 3:5-6)।

बाइबल में वर्णित पवित्र दिन परमेश्वर की उद्धार योजना को स्पष्ट करने में सहायक होते हैं। फसह पर यीशु के बलिदान से लेकर, खमीर रहित जीवन जीने के प्रयास तक, इस युग में प्रथम फल की प्राप्ति (पेंटेकोस्ट) तक, प्रकाशितवाक्य में तुरहियों की ध्वनि और पुनरुत्थान तक, हमारे पापों में शैतान की भूमिका और मसीह के प्रायश्चित्त बलिदान की याद दिलाने तक, पृथ्वी पर परमेश्वर के सहस्राब्दी राज्य का चित्रण (तम्बू पर्व) तक, और इस अहसास तक कि परमेश्वर सभी को उद्धार प्रदान करेगा (अंतिम महान दिन), परमेश्वर की योजना के विभिन्न भाग प्रकट होते हैं और मसीहियों के लिए अधिक स्पष्ट हो जाते हैं।

बाइबल मसीहियों को प्रेरित पौलुस का अनुकरण करने के लिए कहती है, जैसे उसने यीशु का अनुकरण किया (1 Corinthians 11:1)।

यीशु ने बाइबल में वर्णित पवित्र दिनों का पालन किया (Luke 2:41-42; 22:7-19; John 7:10-38; 13)। क्या आपको उनके उदाहरण का अनुसरण नहीं करना चाहिए जैसा कि उन्होंने सिखाया (John 13:12-15)?

प्रेरित पौलुस बाइबल में वर्णित पवित्र दिनों का पालन करता था (Acts 18:21; 20:6,16; 21:18-24; 27:9; 28:17-18; 1 Corinthians 5:7-8; 16:8)। पौलुस ने उन लोगों से सावधान किया जो शैतानी प्रथाओं से इन दिनों को दूषित करने की कोशिश करते थे (1 Corinthians 10:19-21)। जो लोग बाइबल के परमेश्वर का अनुसरण करने का दावा करते हैं, उन्हें मूर्तिपूजा से शुद्ध किया जाना चाहिए (देखें Nehemiah 13:30; 2 Peter 1:9)।

प्रेरित जॉन ने बाइबल के पवित्र दिनों का पालन किया, लेकिन उन लोगों के बारे में चेतावनी दी जो खुद को ईसाई होने का दावा करते थे लेकिन उनके रीति-रिवाजों का पालन नहीं कर रहे थे।

18प्यारे बच्चों, यह अंतिम घड़ी है; और जैसा कि तुमने सुना है कि मसीह-विरोधी आ रहा है, अब भी बहुत से मसीह-विरोधी आ चुके हैं, जिससे हम जानते हैं कि यह अंतिम घड़ी है।¹⁹वे हमसे अलग हो गए, परन्तु वे हमारे नहीं थे; क्योंकि यदि वे हमारे होते तो हमारे साथ ही रहते; परन्तु वे इसलिए अलग हो गए ताकि यह प्रकट हो जाए कि उनमें से कोई भी हमारा नहीं था। (1 John 2:18-19)

क्या ईसाइयों को बाइबल के उन्हीं पवित्र दिनों का पालन करना चाहिए, जैसे कि उनके प्रेरितों, जॉन ने किया था? जॉन लिख रहे थे कि जो लोग झूठे तौर पर ईसाई होने का दावा करते हैं लेकिन उनकी प्रथाओं का पालन नहीं करते, वे मसीह-विरोधी के रूप में कार्य कर रहे हैं।

जब पवित्र दिनों और त्योहारों की बात आती है, तो हमें किसकी बात सुननी चाहिए? ईश्वर के वचन की या मनुष्य की परंपराओं की? यद्यपि परंपराओं का अपना उचित स्थान हो सकता है, फिर भी किसी को भी ऐसी परंपरा को स्वीकार नहीं करना चाहिए जो ईश्वर के वचन के विपरीत हो।

क्योंकि परमेश्वर का वचन शिक्षा के लिए लाभदायक है (2 Timothy 3:16), शायद हमें पतरस और अन्य प्रेरितों द्वारा अपने समय के धार्मिक नेताओं को दी गई प्रतिक्रिया से सीखना चाहिए:

29 हमें मनुष्यों की अपेक्षा परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिए। (Acts 5:29)

क्या आप यीशु और प्रेरितों के उदाहरणों का अनुसरण करेंगे, और परमेश्वर के पवित्र दिनों को उनके बताए तरीके से मनाएंगे, और मनुष्यों की परंपराओं या सलाहों को आपको रोकने नहीं देंगे?

क्या आप उन लोगों की बात सुनेंगे जो “पवित्र सभाओं का ऐलान करते हैं” (Leviticus 23:8, 21, 24, 27, 35, 36), जो परमेश्वर के बाइबिल के त्योहार हैं (Leviticus 23:37)?

यीशु ने कहा:

21 मेरे भाई वे हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते हैं और उस पर अमल करते हैं। (Luke 8:21)

क्या आप सचमुच यीशु के भाई हैं? मसीहियों को होना चाहिए (Romans 8:29)। हमें सत्य द्वारा अलग किया जाना चाहिए (John 17:19)।

क्या आप और/या आपका परिवार परमेश्वर का वचन सुनेंगे और उस पर अमल करेंगे? क्या आप परमेश्वर के उन पवित्र दिनों या परंपराओं का पालन करेंगे जो शैतानी शक्तियों से प्रेरित हैं?

“14 प्रभु की सेवा करो! 15 और यदि तुम्हें यहोवा की सेवा करना बुरा लगता है, तो आज ही अपने लिए चुन लो कि तुम किसकी सेवा करोगे, जैसे कि उन मूर्तिपूजक देवताओं की जिनकी तुम सेवा करते हो, जिनके देश में तुम रहते हो। परन्तु जहाँ तक मेरा और मेरे घर का सवाल है, हम यहोवा की सेवा करेंगे” (Joshua 24:14-15)।

ईश्वर के पवित्र दिनों का चयन करें।

	2026	2027	2028	2029	2030	2031	2032	2033
पवित्र दिवस	पासओवर की रात को सेवा सूर्यास्त में शुरू होती है।							
	माघ	अप्रैल	अप्रैल	माघ	अप्रैल	अप्रैल	माघ	अप्रैल
	31	20	9	29	16	6	25	12
	सभी पवित्र दिवस पूर्व की शाम सूर्यास्त में शुरू होते हैं।							
अवनिपेस्ट रोटी का पहला दिन	अप्रैल	अप्रैल	अप्रैल	माघ	अप्रैल	अप्रैल	माघ	अप्रैल
	2	22	11	31	18	8	27	14
अवनिपेस्ट रोटी का अंतिम दिन	अप्रैल	अप्रैल	अप्रैल	अप्रैल	अप्रैल	अप्रैल	अप्रैल	अप्रैल
	8	28	17	6	24	14	2	20
पेटेकोस्ट	मई	जून	जून	मई	जून	जून	मई	जून
	24	13	4	20	9	1	16	5
शखा का उत्सव	सितम्बर	अक्तूबर	सितम्बर	सितम्बर	सितम्बर	सितम्बर	सितम्बर	सितम्बर
	12	2	21	10	28	18	6	24
प्रायश्चित दिवस	सितम्बर	अक्तूबर	सितम्बर	सितम्बर	अक्तूबर	सितम्बर	सितम्बर	अक्तूबर
	21	11	30	19	7	27	15	3
तंबूआ का पर्व	सितम्बर	अक्तूबर	अक्तूबर	सितम्बर	अक्तूबर	अक्तूबर	सितम्बर	अक्तूबर
	26	16	5	24	12	2	20	8
अंतिम महान दिन	अक्तूबर	अक्तूबर	अक्तूबर	अक्तूबर	अक्तूबर	अक्तूबर	सितम्बर	अक्तूबर
	3	23	12	1	19	9	27	15

ईश्वर का दिन सूर्यास्त से सूर्यास्त तक होता है। इसलिए, ऊपर सूचीबद्ध सभी पवित्र दिवस, पासओवर की रात को छोड़कर, सूचीबद्ध तिथि से एक रात पहले शुरू होते हैं। उदाहरण के लिए, 2026 में, अवनिपेस्ट रोटी का पहला दिन 1 अप्रैल को सूर्यास्त में शुरू होता है और 2 अप्रैल को सूर्यास्त तक चलता है।

Continuing Church of God

अमेरिका कार्यालय *Continuing Church of God* यहाँ स्थित है: PO Box 109,
Grover Beach, California, 93483 USA |

Continuing Church of God (सीसीओजी) वेबसाइटें

CCOG.ASIA यह साइट एशिया पर केंद्रित है और इसमें कई एशियाई भाषाओं में विभिन्न लेख हैं, साथ ही अंग्रेजी में भी कुछ सामग्री उपलब्ध है।

CCOG.IN यह वेबसाइट भारतीय मूल के लोगों के लिए बनाई गई है। इसमें अंग्रेजी और विभिन्न भारतीय भाषाओं में सामग्री उपलब्ध है।

CCOG.EU यह वेबसाइट यूरोप को लक्षित करके बनाई गई है। इसमें कई यूरोपीय भाषाओं में सामग्री उपलब्ध है।

CCOG.NZ यह साइट न्यूजीलैंड और ब्रिटिश मूल के अन्य लोगों को लक्षित करती है।

CCOG.ORG यह मुख्य वेबसाइट है *Continuing Church of God*। यह सभी महाद्वीपों के लोगों की सेवा करता है। इसमें लेख, लिंक और वीडियो शामिल हैं, जिनमें साप्ताहिक और पवित्र दिनों के उपदेश भी शामिल हैं।

CCOGAFRICA.ORG यह साइट अफ्रीका में रहने वालों के लिए लक्षित है।

CCOGCANADA.CA यह साइट कनाडा में रहने वालों के लिए लक्षित है।

CDLIDD.ES La Continuación de la Iglesia de Dios | यह स्पेनिश भाषा की वेबसाइट है। *Continuing Church of God* |

PNIND.PH Patuloy na Iglesia ng Diyos | यह फिलीपींस की वेबसाइट है जिसमें अंग्रेजी और टैगालॉग भाषा में जानकारी उपलब्ध है।

समाचार और इतिहास वेबसाइटें

COGWRITER.COM यह वेबसाइट प्रचार-प्रसार का एक प्रमुख साधन है और इसमें समाचार, सिद्धांत, ऐतिहासिक लेख, वीडियो और भविष्यवाणियों से संबंधित अपडेट शामिल हैं।

CHURCHHISTORYBOOK.COM यह एक आसानी से याद रखने योग्य वेबसाइट है जिसमें चर्च के इतिहास पर लेख और जानकारी उपलब्ध है।

BIBLENEWSPROPHECY.NET यह एक ऑनलाइन रेडियो वेबसाइट है जो समाचार और बाइबिल संबंधी विषयों को कवर करती है।

प्रवचनों और लघु प्रवचनों के लिए यूट्यूब वीडियो चैनल

BibleNewsProphecy चैनल। सीसीओजी के छोटे प्रवचनों के वीडियो।
CCOGAfrica चैनल। अफ्रीकी भाषाओं में सीसीओजी संदेश।
CDLIDDSermones चैनल। सीसीओजी के संदेश स्पेनिश भाषा में उपलब्ध हैं।
ContinuingCOG चैनल। सीसीओजी वीडियो प्रवचन।

क्या ये ईश्वर के पवित्र दिन हैं या शैतानी त्योहार?

जब आप छुट्टियों के बारे में सोचते हैं, तो आपके दिमाग में क्या आता है? क्या आप सदाबहार पेड़ों, मालाओं, खरगोशों, अंडों, हॉट-क्रॉस बन्स और चुड़ैलों की पोशाकों के बारे में सोचते हैं?



लेकिन बाइबल में इनमें से किसी भी प्रतीक का समर्थन नहीं किया गया है। क्या आप जानते हैं कि बाइबल वास्तव में क्या सिखाती है?

प्रेरित पौलस ने लिखा:

19 तो मैं क्या कह रहा हूँ? क्या मैं कह रहा हूँ कि मूर्ति कुछ भी है, या मूर्तियों को चढ़ाई गई वस्तुएँ कुछ भी हैं? 20 बल्कि, मैं कह रहा हूँ कि अन्यजाति जो वस्तुएँ बलिदान करते हैं, वे दुष्ट आत्माओं को बलिदान करते हैं, परमेश्वर को नहीं, और मैं नहीं चाहता कि तुम दुष्ट आत्माओं के साथ संगति रखो। 21 तुम प्रभु का प्याला और दुष्ट आत्माओं का प्याला एक साथ नहीं पी

सकते; तुम प्रभु की मेज और दुष्ट आत्माओं की मेज पर एक साथ भोजन नहीं कर सकते। 22 या क्या हम प्रभु को ईर्ष्या दिलाते हैं? क्या हम उससे अधिक बलवान हैं? (1 Corinthians 10:19-22)

क्या आपको ईश्वर के पवित्र दिनों को मनाना चाहिए या शैतानी त्योहारों को?